आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 3 ★ मूल्य : 10 रु.
15 मार्च, 2008 ★ फाल्गुन सं. 2064

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पीयें धोवन पानी, बोलें मीठी वाणी
यही कहे जिनवाणी।

रतनलाल सी.बाफना ज्वेलर्स

सोना ◆ चांदी | औरंगाबाद | जलगाँव | हिरे ◆ मोती

आकाशवाणी चौक, ☎ ०२४०-२२४४५२०,२२

सुभाष चौक, ☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३

Malhar - 08

औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता
स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/-संरक्षक सदस्यता-रू.5000/
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

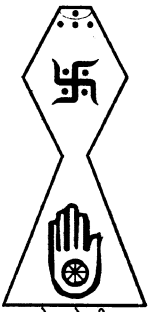

तत्थ ठिच्चा जहाठाणं,
जक्खा आउक्खए चुया।
उवेंति माणुसं जोणिं,
से दसंगेऽभिजायइ।।

- उत्तराध्ययन सूत्र ३.१६

उन कल्पों में यथायोग्य रह,
देव समय पर च्युत होते।
मनुज-योनि में आ करके,
दस अंग पुण्य से वे पाते।।

मार्च २००८
वीर निर्वाण संवत् २५३४
फाल्गुन २०६४

वर्ष ६५ अंक ३

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	वन्दामि-नमंसामि	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
	आचार्य श्री हीराचन्द्र : एक सजग साधक	-श्री नौरतन मेहता	६
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	१०
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	११
प्रवचन-	शील रतन मोटो रतन	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	१२
	तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं	-श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.	१६
शोधालेख-	श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी	२१
	जीवन-मृत्यु का आधार : आयुष्य कर्म (३)	-श्री गौतमचन्द जैन	४१
तत्त्व-चर्चा-	उपांगों में पुण्य तत्त्व	- सुश्री नेहा चोरडिया	२४
	क्यों न अपनाएं - धोवन पानी	-श्री सुमेरसिंह बोथरा	३९
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (४०)	- श्री धर्मचन्द जैन	५१
	उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (८)	- संकलित	५५
अंग्रेजी स्तम्भ-	Meditation (Dhyana) in Jain Scriptures	-*Shri Ranjit Singh Kumat*	३१
चिन्तन-	बेहतर है अहिंसा का अर्थशास्त्र	-डॉ. दिलीप धींग	४७
	गुरु से बड़ा न कोई	-डॉ. मंजुला बम्ब	७८
जीवन-व्यवहार-	परिग्रह : एक भयंकर ग्रह	-श्री स्वरूपचन्द बाफना	५८
युवा-स्तम्भ-	बातें छोटी, बड़े काम की	-प्राणिमित्र नितेश नागोता	६२
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (४६)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	६४
उपन्यास-	भाई-बहन (५)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म.सा.	६९
नारी-स्तम्भ-	बालकों का लालन-पालन (३)	- डॉ. भीकमचन्द प्रजापति	७४
बाल-स्तम्भ-	मृत्यु का विचार : बदले आचार	-साध्वी निधि-कृपा	७९
कविता/गीत-	अरिहन्त देव का क्या कहना	-श्री गौतममुनि जी म.सा.	४०
प्रेरक प्रसंग-	मूर्ख कौन	-श्री रतनचन्द जैन	२०
	अकेला	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	५०
विचार-	प्रमोद वाक्	-श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	२३
	सामायिक की महिमा	-श्री लक्ष्मीचन्द जैन	६१
पाठक-पत्र-	जिनवाणी पर अभिमत		५४
संवाद-	समस्या : समाधान (११)		८२
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	८४
परिणाम-	आओ स्वाध्याय करें (१६) प्रतियोगिता परिणाम		८७
	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा परिणाम		८९
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		९४
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१०६

सम्पादकीय

वन्दामि-नमंसामि

डॉ. धर्मचन्द जैन

शान्त सौम्य वदन जिनका, प्रमोदपूरित भावना,
ज्ञान के संग आचरण से, दीप्त करते साधना।
ध्यान-मौन व्रत-नियम में, है सजगता और धीरता,
आपदाओं के गिरितले भी, बनी रही अकम्पता।।

धर्म ऊँचा संघ ऊँचा, स्वनाम में निष्कामता,
कलह विवादों से परे, प्रपंच जिनको न रासता।
विवेक नयन अनावृत्त, सन्निर्णयों में सुदक्षता,
उन पूज्य हीराचन्द्र की, है आचार्यों में ज्येष्ठता।।

आदिनाथ का जन्मदिन, आपका भी बन गया,
प्रव्रज्या युवावय में ले, पथ प्रदीप्त संयम का किया।
पूज्य हस्ती की पताका को, सदा ऊँचा ही उठाया,
विश्वास उपाध्याय मानचन्द्र, साध्वीवर्या मैना क़ा भी पाया।।

सन्त-सती, श्रावक-श्राविका, श्रद्धा से नतमस्तक हैं,
अवद्य तर्जना उपालम्भ की, भाषा से गुरु बचते हैं।
मन से करते सदा प्रेरणा, जीवन का मल हरते हैं,
मन वच काया रहे धर्म में मन को पावन करते हैं।।

नीतिमान धर्मनिष्ठ श्रावक, श्राविका भी हो प्रामाणिक,
सामायिक-स्वाध्याय का सम्बल, जीवन का हो उन्नायक।
व्यसनों से युवा दूर रहें, फैशनों में नारी न उलझे,
संस्कार पुनीत बालक हों, भाव यही वाणी में झलकें।।

सबके हित की करें भावना, स्वहित स्वतः सध जाएगा,
शान्ति, समता और मैत्री से, समाज बदल जाएगा।
जीवन सुधरे हर व्यक्ति का, राष्ट्र सुधर जाएगा,
जाति वर्ग का भेद न हो, मन में विश्व सिमट जाएगा।।

व्रत-नियमों में रहे आस्था, दृढ़ता से फिर पालन हो,
शील सदाचार से सुरभित, नर-नारी का मन हो।
तप-त्याग की सरिता से, पावन सब जन का जीवन हो,
प्रचार थोथा नहीं प्यारा, पूज्य हीरा को 'धर्म' वन्दन हो।।

जन्म-दिवस : चैत्रकृष्णा अष्टमी

पूज्य श्री हीराचन्द्र : एक सजग साधक

श्री नौरतन मेहता (सह सम्पादक)

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म आदि तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के जन्मकल्याणक के दिन वि.स. १९९५ की चैत्र कृष्णा अष्टमी तदनुसार १३ मार्च १९३९ को जोधपुर जिलान्तर्गत पुण्यधरा पीपाड़ शहर में हुआ। वीरपिता सुश्रावक श्री मोतीलाल जी गाँधी की कर्त्तव्यपरायणता और वीरमाता सुश्राविका श्रीमती मोहिनीबाई जी की धर्मपरायणता का आपके जीवन में बचपन से संगम रहा। अपनी छोटी बहिन चंचल के असामयिक वियोग से युवाहृदय हीरा को जीवन की क्षणभंगुरता और संसार की अनित्यता का भान हुआ। गुरु हस्ती के प्रेरक प्रवचन, अप्रमत्त दिनचर्या और कठोर संयम-साधना से प्रभावित युवा हीरा ने २५ वर्ष की वय में वि.सं. २०२० की कार्तिक शुक्ला षष्ठी को युगद्रष्टा-युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से पीपाड़शहर में जैन भागवती दीक्षा अंगीकृत की। दीक्षा के अनन्तर नवदीक्षित मुनि ने गुरु चरण-सरोजों में धूप-छांव की तरह अहर्निश सेवा में लीन हो विनय, विवेक और सरलता से शास्त्रज्ञान और बोल-थोकड़ों का अभ्यास किया। आपश्री ने अपनी प्रज्ञा व प्रतिभा से गुरु का मन जीत लिया। ज्ञानी गुरुवर्य ने भी अपने शिष्यरत्न को संस्कृत, प्राकृ त, व्याकरण और आगम शास्त्रों का तलस्पर्शी ज्ञान करवाया। गुरु हस्ती की मस्ती में नवदीक्षित संत ने सबके प्रति प्रेम व आत्मीयता से कुछ ही वर्षों में चतुर्विध संघ में सुयोग्य संत के रूप में ख्याति अर्जित कर ली।

आपने राजस्थान के मारवाड़-मेवाड, पल्लीवाल-पोरवाल और बाड़मेर जैसे सीमान्त क्षेत्रों में विचरण किया साथ ही मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, तमिलनाडू जैसे प्रदेशों में आराध्य गुरुवर्य की चरण-सन्निधि में रहकर अपने शिष्यत्व को निखारा।

अध्यात्ममनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के पाली चातुर्मास पश्चात् स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में पाली से विहार किधर हो एक अहं प्रश्न समाज के समक्ष उपस्थित हुआ। निमाज और जोधपुर की पुरजोर विनति से ऊहापोह का वातावरण बना तब सुयोग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य ने यह कहकर कि "भगवन्त वचन के धनी हैं, आपश्री के मुँह से 'निमाज का ध्यान रखूंगा' शब्द निकल गया है अतः निमाज

की ओर भगवन्त विहार करें, ऐसी संभावना लगती है।'' निमाज में जब अपने जीवन निर्माता पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती का तेरह दिवसीय तप-संथारा हुआ तब पूर्ण मनोयोग एवं तत्परता से आपश्री ने सभी सन्तों के साथ जो साज दिया वह साधना के क्षेत्र में एक अनुपम घटना रही।

वि.सं० २०४८ की ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी तदनुसार २ जून १९९१ को सूर्यनगरी में चादर समारोह आयोजित किया गया जिसमें रत्नसंघ के संत-सतीवृन्द के अलावा जयगच्छ और ज्ञानगच्छ के संत-सतीवृन्द ने अपनी महनीय उपस्थिति तो दी ही, गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के प्रति हार्दिक मंगलकामना व्यक्त की। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने भगवान महावीर के धर्मशासन में पूर्वाचार्यों की गौरव-गरिमा रेखांकित करते हुए रत्नसंघ के एक-एक आचार्य की विशेषताएँ बताई और रत्नसंघ के संत-सतियों के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला। आचार्य प्रवर ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि अभी जो चादर ओढाई गई वह प्रेम, श्रद्धा, स्नेह और निष्ठा की प्रतीक है। चादर का एक-एक तार एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, ऐसे ही संघ का हर सदस्य संघ अनुशासन से जुड़ा रहे और किसी का किसी से अलगाव नहीं रहे। तत्कालीन संघाध्यक्ष श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपेक्षा रखी कि आप श्री रत्नसंघ के प्रति ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज की अपेक्षाओं को साकार करेंगे।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का वि.स. २०४८ का पहला चातुर्मास उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी आदि संतों के साथ जोधपुर में हुआ तदनन्तर आचार्यप्रवर एवं उपाध्याय प्रवर के संयुक्त चातुर्मास मदनगंज, जलगांव और धूलिया में हुए। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से वि.सं. २०५० माघ शुक्ला दसमी को सवाई माधोपुर में सात विरक्त बहिनों की दीक्षा हुई, वहीं वि.सं. २०५५ वैशाख शुक्ला सप्तमी को अजमेर में चार मुमुक्षु भाइयों तथा तीन मुमुक्षु बहिनों की एक साथ दीक्षाएँ हुई। जोधपुर, थांवला, नागौर, जलगांव, जयपुर, पीपाड़शहर, घोटी, सूरत, पूना, शिमोगा, रायचूर, बैंगलोर आदि-आदि ग्राम-नगरों में आचार्यप्रवर के शासनकाल में ८ संतों की एवं ३८ साध्वियों की दीक्षाएँ हो चुकी हैं। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से ७ मई, २००८ को मुम्बई महानगर में कतिपय दीक्षाओं की स्वीकृति मिली है, जिससे मुम्बई महानगर का जैन समाज प्रमुदित है।

आचार्यप्रवर ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम हैं। अपने आज्ञानुवर्ती संत-

सतीवृन्द के अन्त समय में संलेखना-संथारे के साथ समाधि-मरण में सहयोग के कारण आचार्य श्री के शासनकाल में पं. रत्न श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा. का सोलह दिवसीय तप-संथारा एवं वयोवृद्धा महासती श्री सूरजकंवर जी म.सा. का ग्यारह दिवसीय चौविहार संथारा अपने-आपमें अनूठे आदर्श हैं।

आचार्य प्रवर ने वि.सं. २०५७ में जलगांव में चातुर्मास किया जिसमें भाऊ मण्डल की स्थापना एवं प्रत्येक रविवार को करीब एक से डेढ हजार लोगों द्वारा सामूहिक सामायिक की निरन्तरता एक अच्छी उपलब्धि है। धूलिया, मुम्बई, इचलकरंजी के आचार्यप्रवर के चातुर्मास में अच्छी धर्मप्रभावना हुई वहीं वि.सं० २०६१ का बेंगलोर चातुर्मास शासन दीप्ति का स्मरणीय चातुर्मास रहा। वि.सं. २०६२ का आचार्य प्रवर का चेन्नई चातुर्मास त्याग-तप की प्रभावना की दृष्टि से सफल रहा। बंगारपेठ जैसे छोटे क्षेत्र में आचार्यप्रवर के अतिशय प्रभाव से धर्मोद्योत रहा वहीं २०६४ का बीजापुर चातुर्मास भी उपलब्धि पूर्ण रहा।

आचार्य प्रवर के दक्षिणी प्रान्तों के विचरण-विहार में स्वास्थ्य में कई बार अनुकूलता-प्रतिकूलता रही, किन्तु आत्मबल के सहारे आचार्यप्रवर ने न केवल विहार की क्रमबद्धता बनाए रखी अपितु दुर्गम घाटियों-कन्दराओं का रास्ता भी समत्वभाव से पार किया।

गुरु हस्ती की भांति गुरु हीरा भी संघ-समाज उन्नयन में सकारात्मक चिन्तन लेकर चलने वाले महापुरुष हैं। धर्मस्थान में आकर सामायिक करने की प्रेरणा से गाँव-गाँव और नगर-नगर में सामायिक का क्रम प्रारम्भ हुआ। आचार्यप्रवर जहाँ भी पधारते हैं शादी-विवाहों जैसे सामूहिक भोज में रात्रि भोजन नहीं करने एवं व्यंजनों की मर्यादा रखने की प्रेरणा करते हैं इसलिए कई स्थानों पर सीमित व्यंजन बनने शुरू हुए हैं। गाँव-गाँव में आयंबिल ओली का शुभारंभ हुआ। आचार्यप्रवर आडम्बर विहीन साधना के पक्षधर हैं अतः तपस्या के उपलक्ष्य में बाजे-गाजे, प्रभावना और प्रीतिभोजों पर अंकुश लगा है। आचार्यप्रवर शीलव्रत के खंद को प्राथमिकता देते हैं। आचार्यप्रवर ने मन-ही-मन एक संकल्प कर रखा है कि प्रत्येक वर्ष में अपनी आयु जितने खंद तो करवाने ही हैं इस कारण अब तक सैकड़ों शीलव्रत के पच्चखाण हुए हैं और सैकड़ों व्रती श्रावक भी बने हैं। आचार्य प्रवर परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के संदेशवाहक हैं जिससे संघ-समाज में वैर-विरोध और मनोमालिन्य में कमी आई है। आचार्यप्रवर की प्रवचन सभा में नियत-निर्धारित समय-सीमा का उल्लंघन नहीं

होता। प्रवचन सभा में न प्रभावना बंटती है, और न ही स्वागत-अभिनन्दन के कार्यक्रम होते हैं।

गुरु हस्ती के पट्टधर के व्यक्तित्व में अनेकानेक विशेषताओं का संगम है। आपश्री दो टूक शब्दों में बिना किसी लाग-लपेट के अपनी बात कहते हैं। आचार्यप्रवर निरभिमानी-निःस्पृही जीवन जीने वाले महापुरुष हैं। आप लोकस्तुति के बजाय साधना-आराधना और त्याग-तप को प्रधानता देते हैं। जीवन में सरलता-सहजता, कथनी करनी की एकरूपता, और सबके साथ समन्वय आपकी विशिष्ट खूबी है। स्वाध्याय, ध्यान, मौन आदि कार्यक्रमों में परिवर्तन आपको इष्ट नहीं है। आपका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली है कि दर्शन-वन्दन कर्त्ता आपश्री की भव्य आकृति, प्रसन्न मुखमुद्रा और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार देखते-देखते थकता नहीं। आचार्यप्रवर का चुम्बकीय आकर्षण आबाल-वृद्ध सबको भाता है।

आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. चतुर्विध संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि के लिए अहर्निश कटिबद्ध रहते हैं। अपने आज्ञानुवर्ती संत-सतियों की सम्यक् सारणा-वारणा-धारणा करने के साथ संघ के पदाधिकारियों को त्याग-तप से जुड़कर आदर्श उपस्थित करने की प्रेरणा करते हैं। आपकी धारणा है कि संघ का प्रत्येक सदस्य चाहे छोटा नियम ही क्यों न ले, पर नियम की दृढतापूर्वक पालना करे। वयःसम्पन्न श्रावक-श्राविकाओं को शीलव्रत के खंद करने, व्रती श्रावक बनने, दया-संवर-उपवास-पौषध की साधना करने की प्रेरणा करते हैं तो युवक-युवतियों को सामायिक, स्वाध्याय और निर्व्यसनता से जोड़कर उन्हें सन्मार्गगामी बनाते हैं। बालक-बालिकाओं को संस्कार देने के लिए माता-पिता और परिवारजनों को सजग रहने की प्रेरणा करते हैं।

संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर आचार धर्म का दृढता पूर्वक पालन करते हैं, चतुर्विध संघ में अनुशासन एवं ज्ञान-क्रिया के प्रति चेतना बढ़े एतदर्थ सतत प्रयासरत रहते हैं। आचार्यप्रवर धीर-गंभीर प्रकृति के महापुरुष हैं। आपश्री आगत को प्रभावी प्रेरणा प्रदान कर उसे धर्म के सम्मुख लाने का अथक प्रयास करते हैं।

स्थानकवासी समाज के सबसे वरिष्ठ आचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का स्वास्थ्य समीचीन रहे, आप दीर्घायु हों और गुरु हस्ती की भांति संघ-समाज को निरन्तर आगे बढाते रहें इसी मंगल मनीषा के साथ पूज्य गुरुवर्य के जन्म-दिवस पर हार्दिक बधाई! शुभकामना।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

लया य इइ का वुत्ता, केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।
भव-तण्हा लया वुत्ता, भीमा भीम-फलोदया।
तमुच्छित्तु जहानायं, विहरामि महामुणी।।
साहु गोयमा! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा।।
संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा!
जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे।।
महामेह-प्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं।
सिंचामि सययं ते उ, सित्ता नो य डहंति मे।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन २३, गाथा ४७ से ५१

केशी गौतम से यों बोले, है लता कौन-सी बतलाई?
केशी के ऐसा कहने पर, गौतम ने वाणी फरमाई।।
है भवतृष्णा ही भीम लता और दुःखद कुफल उसमें लगते।
उसे उखाड़ करके जड़ से, हम यथान्याय विचरण करते।।
हे गौतम! बुद्धि भली तेरी, हो गया दूर मेरा संशय।
है एक दूसरा भी संशय, उसका उत्तर कह दो निर्भय।।
प्रज्वलित घोर यह पावक हैं, गौतम! तन में स्थित दहक रही।
कैसे तुमने है शान्त किये, जो नाममात्र भी दीप्त नहीं।।
महामेघ की वर्षा से, शीतल निर्मल जल को लेकर।
मैं सतत सींचता हूँ उसको, हो सिक्त न दाह करे मुझ पर।।

अमृत-चिन्तन

विचार-वाहिनी

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- कोई भी आदमी कमजोर नहीं है। तन से कमजोर होते हुए भी मन से बलवान हो तो वह सब कुछ कर सकता है।
- कामनाशील व्यक्ति अर्थ की साधना करता है, लेकिन मुमुक्षु धर्म की।
- यदि समिति के रूप में प्रवृत्ति की जाय तो वह कर्म-बंध को रोकने का कारण है।
- जिनशासन कहता है- मानव ! कोई भी प्रवृत्ति करो उससे पहले देखो-भालो और खयाल करो कि तुम्हारे चलने से, खाने से, उठने-बैठने से, सम्भाषण करने से किसी को तकलीफ तो नहीं है।
- परिग्रह की ममता कब दूर होगी? जब 'स्व' का अध्ययन करोगे, अपने आप को समझ लोगे और जान लोगे कि स्वर्ण, धन आदि से आत्मा की कीमत नहीं है। आत्मा की कीमत है सदाचार से, प्रामाणिकता से, सदगुणों से।
- मनुष्य का शरीर यदि सोने से लदा हुआ है। लेकिन वह सद्गुणी नहीं है तो निन्दनीय है।
- जहाँ राग है वहाँ रोग है, अतः राग के कारणों को घटाना चाहिए। भोग-उपभोग से कभी मन तृप्त नहीं होता, मन को तृप्त करने का साधन है तप-त्याग।
- एक श्रावक दूसरे श्रावक का ज्ञान और श्रद्धा से भी साधर्मी है और व्रत से भी।
- सम्यक् दृष्टि श्रावक का कर्तव्य है कि यदि अपने सम्यक् दृष्टि श्रावकों में से कोई कमजोर है तो उसकी सहायता करे।
- समाज जितना जिन्दा होगा उतना ही वह कमजोर भाइयों की सहायता करेगा।
- चिन्तनशील समाज जागा हुआ कहलायेगा। ज्ञानवान चाहे अमीर हो या गरीब, अपने धर्म पर टिका रहेगा।
- परवश होकर बड़ी से बड़ी वस्तु को छोड़ना त्याग नहीं है और इच्छा से छोटी वस्तु भी छोड़ना त्याग है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

शील रतन मोटो रतन

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

श्री वर्द्धमान जैन भवन, पावटा, जोधपुर में दिनांक १४ फरवरी २००८ को मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है।

–सम्पादक

भगवान् महावीर स्वामी ने सत्यधर्म से जुड़ने का बोध दिया और पाप से निवृत्त होने की अमूल्य प्रेरणा दी। उनकी वाणी के अन्तर्गत आज अठारह पापों में से चौथे पाप से निवृत्त होने के लिए शील की महिमा बताई जा रही है। शील हमारी संस्कृति का प्राण है। जीवन फूल है तो शील उसकी सुगन्ध है। जीवन मोती है तो शील उसकी आभा है। जीवन दीपक है तो शील उसकी ज्योति है। जीवन हीरा है तो शील उसकी चमक है। सब धर्म ग्रन्थों ने, सभी पंथों ने और साधु-संतों ने एक स्वर से शील की महिमा गायी है। साधना का प्राण है शील धर्म। शील के पालन को लेकर जैन धर्म में बहुत कुछ कहा गया है। 'तवेसु वा उत्तमं बम्भचेरं' तपों में सर्वश्रेष्ठ मासखमण नहीं, वर्षीतप नहीं, चार मास की तपश्यर्या नहीं, पर ब्रह्मचर्य के पालन को सर्वश्रेष्ठ तप कहा। शीलधर्म की महिमा से जीवन में तेजस्विता-ओजस्विता आती है और असाध्य भी साध्य रूप में परिणत हो जाता है। आप बोलते भी हैं-

शील रतन मोटो रतन, सब रत्नों की खान
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन।।

मुनि श्री(यशवन्त मुनि जी महाराज) ने शील रक्षण को लेकर चर्चा प्रारम्भ की, उसे आगे बढ़ाने की भावना से कहना है कि आज चारित्र-धर्म संकट में पड़ता जा रहा है। चारित्रिक सम्पदा आक्सीजन पर चढ़ी हुई है। विषय-विकार से हर आदमी ग्रसित है। मैं बाहर के बाजार की बात नहीं कर रहा हूँ। विश्वसुन्दरी का ताज पहनाने वालों का जिक्र नहीं कर रहा हूँ। विश्व सुन्दरी का ताज हो या अन्यान्य सौन्दर्य प्रतियोगिताएं वे मानव को चमकाने वाली नहीं है।

भारतीय संस्कृति का गौरव शील से सुशोभित रहा है। आज जगह-जगह

सौन्दर्य प्रतियोगिताएं हो रही हैं। आपके यहाँ महावीर कॉम्पलेक्स में क्या होता है? आप देखते हैं, लेकिन विरोध करने वाला कोई नहीं। आपकी बेटियाँ-लड़कियाँ स्टेज पर नाच करती हैं, आप देखकर खुश होते हैं, तालियाँ पीटते हैं, पर अपसंस्कृति के द्योतक नाच नहीं हों ऐसा कहने वाला कोई नहीं। मुझे विचार आता है कि एक नन्ही सी बच्ची बड़ी दीदी के साथ डांस सीखने के लिए जा रही है। एक बार किसी घर में गोचरी के लिए गया। वहाँ देखा एक नन्ही-सी बच्ची टी.वी. के सामने डांस कर रही थी और दादा बल्ले-बल्ले कह रहे थे। आप घर के बड़े बुजुर्ग बच्चों को टी.वी. के सामने नाचते-गाते देखकर हंस रहे हैं, आगे जाकर वे बच्चे संस्कृति का रक्षण कैसे करेंगे, आपको विचार करना चाहिये।

जैन धर्म का आघोष रहा है- शील धर्म का, मर्यादा का, चारित्रिक विकास का। एक समय था जब सीता का अपहरण हो गया। सीता को रावण लेकर जा रहा था। वहाँ उस समय सीता के पास न राम थे, न लक्ष्मण। सीता को मालूम था राम-लक्ष्मण जब आयेंगे तो मेरी खोज करेंगे। उपाय के तौर पर सीता अपने आभूषणों को एक-एक गिराने लगी। राम-लक्ष्मण आए तो देखा सीता नहीं है। वे ढूँढ़ने निकलें तो उन्हें रास्ते में पड़ा एक आभूषण मिला। राम ने कहा- "मैं तो शोक विह्वल हूँ इसलिए लक्ष्मण तू देख यह सीता का है या नहीं?" लक्ष्मण ने जवाब दिया- "हे भय्या! मैं सीता माता के गले के आभूषण नहीं जानता, कुण्डल को भी नहीं जानता। हाँ, मैं पैरों में पहने जाने वाले नुपूर को जानता हूँ, क्योंकि मै सीता माता को प्रतिदिन प्रणाम करता था, इसलिए पैरों के नुपूर तो फिर भी पहचान सकता हूँ।" यह है हमारी संस्कृति का एक पक्ष। हम भारत की पाश्चात्त्य संस्कृति से तुलना करें तो हमें ज्ञात होगा हमारी संस्कृति भोग की नहीं है जबकि पाश्चात्त्य संस्कृति भोगप्रधान है। भारत भूमि साधु-संतों की स्थली रही है जहाँ शील की सुवास है।

हमारी संस्कृति चारित्र प्रधान रही है। शील-पालन जैन धर्म का प्राण है, श्वास है। शील के प्रताप से कई साधक साधना में आगे बढ़े हैं। शील धर्म की महिमा को लेकर हमें चिन्तन करना है। सबसे पहले पहनावा कैसा हो इस पर ध्यान देने की जरूरत है। आज क्या स्थिति है?

न हाथों में चूड़ियां, न कानों में बाली।
पता नहीं यह लाला है या लाली॥

एक वक्त चन्दनबाला बाजार में बेची गई थी। वह रथी के साथ रथ पर जा रही थीं। रथी के मन में विकार आ गया। आपको प्रसंग ध्यान में है। धारणी ने जीभ खींच कर प्राण दे दिये थे, वसुमति ने यह घटना देखी तो रथी के विकारग्रस्त होने पर भी उसने अपना शील सुरक्षित रखा। आज आपकी बच्चियाँ कहाँ जा रही हैं? वे ब्यूटी पार्लर जा रही हैं या शोपिग सेंटर, आपको पता नहीं। विजय कुमार और विजयाकुमारी का उदाहरण शील धर्म की प्रेरणा कर रहा है। एक के शुक्ल पक्ष का ब्रह्मचर्य का नियम था तो दूसरे के कृष्ण पक्ष का। संयोग से दोनों की शादी हो गई। आप घटना से परिचित हैं इसलिए विस्तार से नहीं कहना चाहता। विजयाकुमारी ने तो प्रस्ताव रखा कि- आप दूसरी शादी कर लें। विजयकुमार का उत्तर था मैं इतना कायर नहीं। जब तक हमारे पच्चखाण की बात जाहिर न हो हम ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे और जब बात प्रकट हो जायेगी तो हम दोनों दीक्षा ले लेंगे।

जिनदास श्रावक को रात्रि के अन्तिम प्रहर में स्वप्न आया कि मैंने चौरासी हजार साधुओं को मासखमण का पारणा करवाया। उसे शेयर बाजार ऊंचे होने का स्वप्न नहीं आया। आज तो आपको स्वप्न भी कैसे-कैसे आते हैं मुझे ज्यादा कहने की जरूरत नहीं। आज आप जैसे वातावरण में रहते हैं उसी उधेड़-बुन के स्वप्न आते हैं। आदमी जैसे संकल्प-विकल्पों में रहता है उसी तरह की सोच चलती है। जो संसार की विकथा में रस लेते हैं उनको वैसे ही स्वप्न आते हैं। जिनदास श्रावक को स्वप्न आया कि मैंने मासखमण के पारणे वाले चौरासी हजार साधुओं को पारणा करवाया। वह भगवान विमल केवली के श्री चरणों में पहुंचा और पूछा- "भगवन्! मुझे ऐसा स्वप्न आया है, मेरे को इस स्वप्न का कैसे फल मिले? मैं स्वप्न को सत्य में देखना चाहता हूँ।" ऐसे समय में विमल केवली भगवान ने जो सर्वज्ञ थे, सर्वदर्शी थे फरमाया- "जो द्वम्पती बारह वर्ष से निर्मल मन से ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं उनको घर पर भोजन के लिए आमन्त्रित करो तो चौरासी हजार साधुओं के मासखमण के पारणे का लाभ प्राप्त हो सकता है।" आपने भी कई जोड़ों को भोजन के लिए निमन्त्रित किया होगा। पर बारह वर्ष से अविचल मेरु की तरह निरतिचार ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले को आमन्त्रित करना कितने लाभ का कारण है यह आप समझ सकते हैं।

निरखी ने नव-यौवना, लेश न विषय निदान।
गणे काठ की पूतली, ते भगवान समान।।

वे भगवान के तुल्य होते हैं जो काठ की पुतली की तरह नारी को देखते हैं। एक बार देखना विषय है, बार-बार देखना विकार है। बुढ़ापे में भोगों की वांछा रखे तो कातिया पींजिया कपास समझो। हमारे संस्कार ब्रह्मचर्य पालन से कटिबद्ध हों। चौंतीस साल, चौबीस साल, बत्तीस साल, चालीस साल की उम्र में आजीवन शीलव्रत के संकल्प करने वाले भाई एवं बहनें भी हैं। पीपाड़ में उपाध्याय श्री के चरणों में एक भाई आया, वह बोला-"बाबजी ! मेरे को प्रतिक्रमण आता है, धर्मपत्नी को अभी नहीं आता। जब तक प्रतिक्रमण याद न हो, हम ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे, आप नियम करवा दो।" ऐसे भाई को लाखों लाख धन्यवाद। आपके भीतर में भी चिन्तन जगे। जब तक भोग बुद्धि रहेगी तो ज्ञानियों की दृष्टि में शीलव्रत की साधना नहीं हो सकती।

जिनदास श्रावक जाग गया। विजय एवं विजया ने माता-पिता की अनुमति लेकर संयम स्वीकार कर लिया। वे गृहस्थ में रहे तब तक ब्रह्मचारी रहे और उनका संकल्प था कि यह बात जाहिर हो जायेगी तो हम दीक्षित हो जायेंगे। चौरासी हजार मासखमण करने वाले संतों के पारणक का लाभ मिला यह शील की कीमत है। पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज के चेहरे से शील की आभा फूटती थी, तप का तेज देखा जाता था उसके पीछे ब्रह्मचर्य व्रत का कठोर पालन था। उस महापुरुष की आज साधना-आराधना और धार्मिक क्रिया को हमें पुष्ट करना है।

शीले सर्प न आभड़े, शीले शीतल आग।
शीले अरि करि केसरी, भव जावे सब भाग।

शील की पालना से जीवन ओजस्वी-तेजस्वी बनेगा। मूलचन्द जी बाफना ने एक बार मेरे से कहा- "बाबजी ! आप नियम करावो तो पहले साल महीने में एक दिन ब्रह्मचर्य, दूसरे वर्ष महीने में दो दिन, तीसरे वर्ष महीने में तीन दिन इस तरह दृढ़ता से आगे बढ़ते-बढ़ते तीस साल पश्चात् वह ब्रह्मचारी बन सकेगा।" आज कई हैं जो पचास-साठ के हो गये उन्हें कहा जाता है तो विचार करूँगा कह कर बात टाल देते हैं। आप सोचें ही नहीं, दृढ़ता से संकल्प करें। ब्रह्मचर्य का अभ्यास करेंगे तो आपका जीवन ऊर्जावान और ओजस्वी-तेजस्वी बन सकेगा।

15 मार्च 2008
जिनवाणी 16

प्रवचन

तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

श्री वर्द्धमान जैन भवन, पावटा, जोधपुर में दिनांक १४ फरवरी २००८ को श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता द्वारा किया गया है।-सम्पादक

पाप-मुक्ति की चर्चा चल रही है। पाप की मुक्ति में ही धर्म-साधना का अंग रहा हुआ है। साधक जितना-जितना पापों से बचता चला जायेगा उतनी-उतनी मात्रा में वह धर्म-साधना में आनन्दित होता चला जायेगा। आदमी के भीतर में जो अज्ञान का अंधकार है, उसे दूर करने के लिए धर्म का प्रदीप जलाना होगा। पाप अंधकार की तरह से रहा हुआ है, धर्म आलोक की तरह से । घर में अन्धेरा है तो उसे लाठियों से नहीं भगाया जा सकता। उजाला करते ही अंधकार स्वतः पलायन कर जाता है। हमें हमारे जीवन से पापों को हटाना है। यह तभी संभव है जबकि पाप के प्रतिपक्ष धर्म का जीवन में आचरण हो। प्राणातिपात, मृषावाद अदत्तादान के बाद आज अब्रह्म क्या है, कुशील क्या है इस पर थोड़ी चर्चा करनी है।

ब्रह्मचर्य को बड़ाव्रत भी कहा जाता है। हम श्रावकों को ब्रह्मचर्य व्रत की प्रेरणा करते हैं तो उन्हें कहते हैं अब बड़े व्रत के पच्चखाण कर लो। जैन शासन में अनेक तरह के तप बतलाये गये हैं, परन्तु 'तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं' यानी तपों में ब्रह्मचर्य उत्तम तप है। हमें विचार करना है कि ब्रह्मचर्य है क्या ? ब्रह्म कहते हैं - आत्मा को। चर्य कहते हैं - चलने को। स्व-आत्मा में रमण करना, आत्म-स्वभाव में रहना ब्रह्मचर्य है । जब आत्मानन्द को छोड़कर पौद्गलिक सुख में रमण किया जाता है तो वह है अब्रह्म। आपको विचार करना है- एक बार यह जीव उस आत्मानन्द का अनुभव करले तो फिर बाहर में भटकाव संभव नहीं है।

बहुत-से लोग पूछते हैं-ब्रह्मचर्य का पालन कैसे संभव है? आदमी को बाहर के भोग क्यों प्रिय लगते हैं? बात यह है कि इस जीव के अनादि काल से संस्कार ही कुछ ऐसे रहे हुए हैं जिससे उसे बाहर के भोग प्रिय लगते हैं। किसी को

चार इन्द्रिय नहीं मिली तो भी स्पर्श इन्द्रिय तो जीवमात्र के साथ है। एकेन्द्रिय में भी स्पर्श इन्द्रिय रही हुई है। अनादि काल के संस्कार छोड़ना सरल काम नहीं है। एक व्यक्ति को चाय या गुटखे की लत लग जाती है तो वह भी सहजता से नहीं छूटती। तो अनादि काल के संस्कार सहजता से कैसे छूट सकते हैं ? फिर यह जीव का अज्ञान है जो वह पापों में आसक्ति रखता है। मोह भी एक कारण है। मोह के कारण से आदमी सुख की कल्पना करता जाता है जबकि भौतिक पदार्थों में सुख है नहीं।

मूढ़ता और मूर्खता ये दो शब्द हैं। इन दोनों शब्दों में अन्तर है। मूर्खता ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होती है जबकि मूढ़ता मोहनीय कर्म के उदय से होती है। मूढ़ता भान भुला देती है। जैसे मदिरा पीने वाला व्यक्ति बेभान हो जाता है इसी तरह मूढ़ता में भी व्यक्ति निरन्तर इन्द्रियों के सुख में खो जाता है।

नहीं कुछ इन्द्रिय विषय में जीव को हितकार।
तो भी जीव तामे रमे, आंधो मोह अंधियार।।

इन्द्रियों के विषय में आत्मा के लिए कुछ भी हितकारक नहीं है। मोह में अंधा बना हुआ आदमी पौद्गलिक सुख में शाश्वत सुख की खोज करता है। ज्ञानीजन कहते हैं- यह जीव भोगों को नहीं भोगता, बल्कि भोग इस जीव को भोगते रहते हैं।

भोग भोगने से तृप्ति नहीं हो सकती। कोई व्यक्ति अग्नि में घी डालता जाय तो वह अग्नि शांत नहीं होगी। मोहनीय कर्म के उदय से आदमी 'भोग भोग लूं' ऐसा सोचकर भोग भोगता है, परन्तु भोग भोगते हुए उसे शांति नहीं हो सकती। गौतम स्वामी भगवान् महावीर से पूछते हैं-"भगवन् ! इस जीव को कभी राजा-महाराजा बनने का अवसर आया होगा ?" भगवान् ने कहा- "हाँ, इस जीव ने राजा-महाराजा बनकर अनन्त बार भोगों को भोग लिया।" उत्तराध्ययन सूत्र में मानव के और देवों के भोगों की तुलना करते हुए बताया गया है कि देवताओं के सुख समुद्र की तरह अथाह जलराशि की भांति है और मानवों के सुख बिन्दु की तरह हैं। इस जीव ने दोनों सुख भोग लिए, पर तृप्ति नहीं हुई। अथाह समुद्र की तरह देवताओं के सुख से तृप्ति नहीं तो मात्र बिन्दु के समान सुख से भी तृप्ति कैसे हो सकती है ?

सदाचार का पालन करने वाले तीन चीजों को प्राप्त करते हैं। एक तो लोक में कीर्ति बढ़ती है, दूसरी शक्ति बढ़ती जाती है और तीसरी बात आगामी भव में अच्छी गति प्राप्त होती है। नीति शतक में एक श्लोक है-

वह्निस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणात्,
मेरुः स्वल्पशिलायते मृगपतिः सद्यः कुरङ्गायते।
व्यालो माल्यगुणायते विषरसः पीयूषवर्षायते
यस्याङ्गेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति।।

-नीतिशतक,१०८

कहते हैं- तीन लोक का वल्लभ शील जिसे मिलता है तो जलती आग जल बन जाती है। सीता के जीवन से हम इस बात को समझ सकते हैं। राम ने सीता को धधकती ज्वाला में बैठने को कह दिया। सीता के शील से अग्नि भी शांत हो गई। शील के प्रभाव से बहुत बड़ी जल राशि भी एक छोटे नाले के समान बन जाती है, शील के प्रताप से धधकती ज्वाला जल राशि में तब्दील हो जाती है। मेरु पर्वत जितना बड़ा पहाड़ सामान्य चट्टान-सा रूप धारण कर लेता है, सिंह हिरण की तरह बन जाता है। एक ब्रह्मचारी को जंगल में जाते समय सिंह मिल गया। सिंह क्रूर-हिंसक होता है, पर ब्रह्मचर्य के प्रभाव से वह हिरण की तरह शान्त बन जाता है। सर्प फूलमाला की तरह हो सकता है। विषरस यानी जहर का प्याला पीयूष रस बन जाता है। मीरा का उदाहरण आपके ध्यान में है। शील की महिमा अपरंपार कही है। संसार का व्यक्ति जिसको चमत्कार कहता है वह चमत्कार नहीं वरन् शील का प्रभाव है। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज के जीवन में त्रिकरण त्रियोग से शील की प्रभावना रही हुई थी, इस कारण वे ओजस्वी-तेजस्वी-मनस्वी महापुरुष रहे। शील से सब कुछ संभव है।

संत शील धर्म का पालन करते हैं इसलिए वे साधना में निरन्तर अग्रसर होते रहते हैं। संत तो पूर्ण ब्रह्मचारी हैं ही, श्रावक को भी शील धर्म की रक्षा में सजग रहना चाहिये। ब्रह्मचर्य में वीर्य रक्षा होती है। वीर्य कैसे बनता है? कोई व्यक्ति बत्तीस किलो आहार करता है, उसका आठ सौ ग्राम रक्त बनता है। आठ सौ ग्राम रक्त से बीस ग्राम वीर्य बनता है। यह तीस दिन चार घंटे में बनता है। वीर्य सप्त धातुओं में महत्त्वपूर्ण धातु है। मैंने सुना है कि फुटबॉल के एक चैम्पियन से पूछा गया- तुम्हारी सफलता का क्या राज है, तो उसने कहा कि मैंने एक महीने तक शील का पालन किया है। जिनशासन में तो शील की जबरदस्त महिमा है। लोग कहते हैं- शील का पालन कठिन कार्य है, दुष्कर है। स्त्रियों के प्रति यदि मनुष्य की मातृदृष्टि हो जाय तो शील का पालन सरल-सहज हो सकता है। इसी तरह नारी भी

नर को पवित्र भावना से देखे।

नारी को न निहार राग से वरना जल जायेगा इस आग से।
नर को न निहार राग से, वरना जल जायेगी इस आग से।।

दोनों के लिए यह बात लागू होती है। जरूरत है आप अपनी दृष्टि पवित्र बनाएं। व्यक्ति आग के पास जाता है और कहता है- "मैं जल गया।" वर्तमान में वातावरण बहुत दूषित है। टी. वी. में कितनी दूषित सामग्री परोसी जाती है। आज तो माता-पिता बच्चों के साथ बैठकर टी.वी. के दृश्य देखते हैं इससे पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है।

मुझे याद आता है वनराज चावड़ा का नाम। अणिहिलपुरपाटन में वनराज चावड़ा का शासन था। मारवाड़ तक उसकी धाक थी। गुर्जर देश से मारवाड़ तक वनराज चावड़ा की सुगन्ध थी, तो मारवाड़ के राजाओं ने विचार किया कि हमें भी ऐसा शक्तिशाली राजा चाहिये। मारवाड़ के राजा परस्पर मिले, चिन्तन किया कि हम ऐसा पराक्रमी पुत्र कैसे पैदा करें ? किसी ने कहा वनराज चावड़ा के पिता से हम किसी कन्या का विवाह करा दें तो हमें भी वैसा शक्तिशाली राजा प्राप्त हो जायेगा। मारवाड़ के राजाओं की बात भाट तक पहुँची। भाट ने कहा- यह काम मेरे जिम्मे सौंप दें। भाट तैयार हो गया। वह वनराज चावड़ा के पास गया। जाकर खूब बिरदावली गाई तो राजा प्रसन्न हो गया। उससे कहा- "मांग, तुझे मुंह मांगा इनाम दिया जायेगा।"

भाट ने वरदान मांगा। राजा ने वरदान दे दिया। क्षत्रिय मुँह से कह दे तो वह बदलता नहीं। भाट ने न धन मांगा, न राज्य। उसने कहा- "मैं तो आपको मांगता हूँ।" राजा ने सोचा- यह पद पैसा, धन-सम्पति मांगेगा, किन्तु इसने तो मुझे मांग लिया। जबान थी इसलिए कहा ठीक है, मैं तैयार हूँ।

भाट बोला- "आपको लेकर मुझे मारवाड़ जाना है।" क्षत्रिय का वचन था। वह भाट के साथ रवाना हो गया। रास्ते में पड़ाव डालना पड़ा। पड़ाव के लिए दोनों रुक गये। राजा ने भाट से उसे साथ लेकर जाने का कारण पूछा, तो भाट ने कह दिया कि मारवाड़ नरेश को वनराज चावड़ा जैसा पुत्र चाहिये। आपका किसी क्षत्राणी से विवाह करवाया जायेगा। राजा ने कहा- "वनराज चावड़ा जैसे पुत्र के लिए वैसी माता वहाँ मिलेगी या नहीं।" राजा ने अपनी रानी के विषय में कहा कि एक बार मैं जब राज-सभा से निवृत्त होकर अन्तःपुर में आया तो मैंने वनराज चावड़ा

की माँ के हाथ लगा दिया। माँ ने कहा- ''पर पुरुष के सामने मेरे हाथ कैसे लगाया?''

राजा- यहाँ कोई पर पुरुष तो नहीं है। तो उसने कहा- ''यह देखो, यह आपका बेटा है।'' माँ की दृष्टि देखिये- ''माँ, बेटे के सामने हाथ लगाने को ठीक नहीं मान रही है।'' राजा की बात सुनकर भाट ने कहा कि मारवाड़ में ऐसी राजकन्या मिलना दुर्लभ है, आप वापस अपनी राजधानी पधारें। मैं अपनी गुस्ताखी की क्षमायाचना करता हूँ।

आज कैसे संस्कार हैं, आप चिन्तन करें। आज तो संस्कारों की धज्जियाँ उड़ रही हैं। मुम्बई के एक भाई से किसी ने पूछा- ''आपका व्यापार कैसे चल रहा है?'' तो बोला-''व्यापार ठीक चल रहा है।'' फिर पूछा-''आपका बच्चा कितना बड़ा हो गया ?'' उसने हाथ चौड़े फैलाते हुए कहा- ''इतना बड़ा हो गया।'' कुछ वर्ष बाद फिर पूछा तो बताया व्यापार ठीक चल रहा है। बच्चे के सम्बन्ध में पूछने पर हाथ को और चौड़ा करते कहा वह इतना बड़ा हो गया। लोग बच्चे की लम्बाई हाथ ऊपर करके बताते हैं, पर वह हाथ चौड़े करके बता रहा था। क्योंकि उसने बच्चे को सोते ही देखा था। पहले सोते समय बच्चा इतना दिखाई देता था, अब इतना। आज संस्कारों की कितनी कमी होती जा रही है। आप अपने बच्चों को संस्कार देने का लक्ष्य रखें तो आपका सुनना सार्थक हो सकेगा। अभी इतना ही, समय के साथ ब्रह्मचर्य पर कुछ और कहने की भावना है।

प्रेरक-प्रसंग

मूर्ख कौन?

श्री रतनचन्द जैन

जर्मनी के महाकवि गेटे एक बार घूमने जा रहे थे। मार्ग में एक संकरी गली में उनका सामना किसी आलोचक से हो गया। आलोचक गेटे के सामने पड़ते बोला- ''मैं मूर्खों के लिए कभी रास्ता नहीं छोड़ता।''

गेटे ने आलोचक के सामने से हटते हुए कहा- ''तुम मूर्खों के लिए रास्ता नहीं छोड़ते, लेकिन मैं तो हमेशा छोड़ देता हूँ।''

यह बात सुनते ही आलोचक को बात समझ में आई और वह शर्मशार हो गया।

शोधालेख

श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन (३)

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी शास्त्री

(३) अचौर्य महाव्रत– श्रमण सर्व अदत्तादान विरति महाव्रत का पालन करता है। वह ऐसी किसी वस्तु को ग्रहण नहीं करता है जो किसी दाता द्वारा प्रदान नहीं की गई हो। स्वामी की पूर्वानुमति के बिना वह किसी वस्तु को अपनाने, प्रयोग में लाने, अथवा अधिकार में लेने को स्तेय मानते हुए अस्तेय पालन पर सदा दृढ़ रहता है। इस सन्दर्भ में किसी वस्तु की अल्प उपयोगिता, निर्मूल्यता, महत्त्वहीनता या तुच्छता भी इस नियम या सिद्धान्त की उपेक्षा के लिये पर्याप्त आधार नहीं बनती। दन्तशोधनार्थ तृण तो बड़ा तुच्छ होता है। श्रमण उसे भी बिना अनुमति के नहीं लेता है। वह किसी की खोई हुई वस्तु, मार्ग आदि में पड़ी हुई वस्तु, अज्ञात स्वामी की वस्तु को ग्राह्य नहीं मानता है। अदत्त वस्तु का न वह स्वयं उपयोग करता है, न किसी अन्य को ऐसा करने की प्रेरणा देता है और न ही ऐसे किसी उपयोग की सराहना-समर्थन करता है। अस्तेय महाव्रत की पाँच भावनाएँ हैं[७], यथा-

१. मर्यादा के अनुसार किसी वस्तु के लिये याचना करना।

२. आचार्यादि की अनुमति से भोजन करना।

३. परिमित पदार्थ स्वीकार करना।

४. पुनः-पुनः पदार्थों की मर्यादा करना।

५. सहवर्ती श्रमण से परिमित वस्तुओं की याचना करना।

(४) ब्रह्मचर्य महाव्रत– श्रमण द्वारा सर्व मैथुन विरमण व्रत के रूप में 'ब्रह्मचर्य' स्वीकार किया जाता है। यह चतुर्थ महाव्रत है। श्रमण के लिये मैथुन सर्वथा, पूर्ण रूप में और अनिवार्यतः त्याज्य माना जाता है। इस सम्बन्ध में भी नवकोटि शील के निर्वाह का प्रावधान है। श्रमण मन, वचन और काय से मैथुन करने, करवाने तथा अनुमोदन करने को सर्वथा रूप से निषिद्ध मानता है। श्रमण मैथुन को अधर्म का मूल मानता है और उसे अनेकविध पापों के जनक के रूप में दूर ही रखता है। मैथुन हिंसादि दोषों को भी उत्पन्न करता है। इन कारणों से श्रमण स्त्री शरीर से और श्रमणी

---

७. आचारांग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, १५ वाँ भावना अध्ययन

पुरुष शरीर से सदा दूर रहते हैं। वे विपरीत लिंगी स्त्री-पुरुष के सौन्दर्य, रूप-रंग आदि को नहीं देखते हैं। उनकी रूप-प्रशस्ति को नहीं सुनते हैं। सभी आयुवर्ग के विपरीत लिंगी स्त्री-पुरुषों से दूर रहना भी श्रमणजनोचित व्यवहार माना गया है। ब्रह्मचर्य महाव्रत के परिपालन की सुरक्षार्थ भी पांच भावनाएँ मानी जाती हैं। वे इस प्रकार हैं -

१. स्त्री-कथा नहीं करना।
२. स्त्री के विभिन्न अंगों को नहीं देखना।
३. पूर्वकृत काम-क्रीड़ादि का स्मरण नहीं करना।
४. भोजन के समय खाद्य-सामग्री की सीमित मात्रा का अतिक्रमण नहीं करना।
५. स्त्री से सम्बन्धित स्थानों पर निवास नहीं करना।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि श्रमण के लिये जैसे स्त्री-दर्शन आदि का निषेध है, उसी प्रकार श्रमणी के लिये पुरुष-दर्शन आदि का निषेध है। इन भावनाओं का अनुचिन्तन करने से ब्रह्मचर्य महाव्रत के परिपालन में स्थिरता व निर्मलता आती है।

(५) अपरिग्रह महाव्रत- यह महाव्रत सर्व परिग्रह विरमण व्रत भी कहलाता है। श्रमण के लिये इसका सर्वदेश में निर्वाह अत्यावश्यक है। अमुक वस्तु मेरी है। इस भाव के साथ उसका संग्रह करना श्रमणोचित प्रवृत्ति नहीं है। श्रमण स्वयं तो संग्रह करता नहीं है। वह किसी से करवाता भी नहीं है और इस प्रकार की प्रवृत्ति का अनुमोदन भी नहीं करता है। विरक्त अनासक्त श्रमण किसी भी पदार्थ के प्रति ममता का भाव नहीं रखता है। यहाँ तक कि स्वयं अपने शरीर के प्रति भी नहीं। ऐसा तो संभव नहीं है कि श्रमण अपने पास कोई वस्तु नहीं रखे। संयम-साधना के महामार्ग पर अग्रसर होने के लिये कतिपय उपकरणों की अपेक्षा रहती है और श्रमण उन वस्तुओं को रखते भी हैं। किन्तु वस्तुओं के साथ उनका ममत्व नहीं जुड़ता है। उन वस्तुओं के प्रति भी श्रमण के अन्तर्मन में आसक्ति नहीं आती है। ये वस्तुएँ किसी भी रूप में उसके लिये साध्य नहीं हैं। उन्हें वह साधन मात्र मानता है और उनका केवल इतना ही महत्त्व स्वीकारता है। उसे किसी वस्तु के प्रति लगाव नहीं होता, उसके स्थान पर अन्य वस्तु प्रयुक्त करनी पड़े, तब भी उसे कोई अड़चन नहीं होती। ममत्वहीनता की परीक्षा इससे हो जाती है कि किसी उपकरणादि के खो जाने या

क्षतिग्रस्त हो जाने पर उसे दुःख-क्लेश आदि का अनुभव नहीं होता और न ही उसकी प्राप्ति पर हर्ष की अनुभूति होती है। इसी प्रकार सुन्दर, आकर्षक या सुविधाजनक वस्तुओं के प्रति भी उसके मन में कोई ललक की झलक दिखाई नहीं देती है। यह आसक्ति, यह ममत्व तो भीतरी ग्रन्थि है। श्रमण इस ग्रन्थि को विनष्ट कर निर्ग्रन्थ बनता है।

अपरिग्रह महाव्रत की पाँच भावनाएँ इस प्रकार है-

१. श्रवणेन्द्रिय के विषयों का निग्रह करना।
२. चक्षुरिन्द्रिय के विषयों का निग्रह करना।
३. घ्राणेन्द्रिय के विषयों का निग्रह करना।
४. रसनेन्द्रिय के विषयों का निग्रह करना।
५. स्पर्शनेन्द्रिय के विषयों का निग्रह करना।

रात्रि-भोजन विरमण व्रत- यह श्रमण का छट्ठा व्रत है। श्रमण सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य आहार-ग्रहण करता है। रात्रि-भोजन हिंसादि दोषों का कारण बनता है। श्रमण सर्वदेश से अहिंसा का पालन करते हैं। अतः सूर्यास्त के बाद भोजन करना सर्वथा निषिद्ध है। अन्न, जलादि का वे रात्रिभर परित्याग किये रखते हैं। इसके अभाव में अहिंसा का पूर्णतः पालन असंभव रहता है। श्रमण सूर्यास्त के पश्चात् से सूर्योदय तक भोजन की इच्छा भी मन में नहीं लाते हैं। (क्रमशः)

प्रमोद-वाक्

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

卐 आस्था से वास्ता होने पर रास्ता स्वयं अनुशास्ता बन जाता है।

卐 शान्त चित्त विचारों की उर्वरा भूमि है।

卐 तीन मनोरथों का भावपूर्वक चिन्तन ही जीव को आगे बढ़ा देता है।

卐 परिस्थिति का नहीं परिणति का परिवर्तन करना होगा।

卐 परिधि पर नहीं केन्द्र पर श्रम करना होगा।

卐 सम्यग्दृष्टि द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव को जानने वाला होता है।

卐 लोग दीक्षा को अच्छी तो मानते हैं, किन्तु अपने घर से नहीं दूसरेके घर से हो, यह आशा रखते हैं। चिन्तन की यह कैसी विडम्बना है।

-संकलन : श्री जिनेन्द्र जैन, जयपुर

तत्त्वज्ञान

उपांगों में पुण्य तत्त्व

(औपपातिक सूत्र में पुण्य)

सुश्री नेहा चोरडिया, जलगाँव

उपांग सूत्र अंग सूत्रों के पश्चात् की रचना है। नंदी सूत्र में इन्हें अंग बाह्य आवश्यक व्यतिरिक्त सूत्र कहा गया है। प्रथम के चार सूत्र और सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र उत्कालिक हैं तो शेष सात उपांग सूत्र कालिक के रूप में गिनाए गए हैं। यहाँ हम उपांगों में वर्णित पुण्य तत्त्व को देखने का प्रयास कर रहे हैं। चूंकि आगमों में पाप को त्याज्य, हेय, छोड़ने योग्य कहा है, कहीं भी पुण्य की हेयता नहीं कही, अतः पुण्य की उपादेयता के परिप्रेक्ष्य में ही यह प्रयास किया जा रहा है। गुरु भगवन्तों के सान्निध्य में कुछ सीखने का प्रयास चल रहा है, उन्हीं की कृपा से यह शोध लेख भी तैयार हो पा रहा है।

औपपातिक सूत्र प्रथम उपांग कहलाता है। आगम पुरुष की कल्पना में अंग से उपांग का संबंध जोड़ा जाता है। आचारांग सूत्र के प्रथम सूत्र में आए 'उपपात' शब्द से इसकी संगति बिठाई जाती है, यहाँ उसके विस्तृत विवेचन में जाना इष्ट नहीं है। अनेकानेक स्थलों पर नगरी, उद्यान, चैत्य, राजा आदि के प्रसंगों में इसी औपपातिक सूत्र का संदर्भ दिया जाता है। इसी औपपातिक सूत्र में ओघबली, महाबली, अपरिमित शारीरिक शक्ति, बल, वीर्य, तेज, माहात्म्य और कान्ति से युक्त तथा शरद ऋतु के नवमेघ की मधुर-गंभीर ध्वनि, क्रोंच पक्षी के निर्घोष और दुदुंभि-नाद के समान स्वर वाले उन श्रमण भगवान् महावीर ने भंभसार पुत्र (बिम्बसार) कोणिक को, सुभद्रा आदि देवियों को, उस अति विशाल परिषद् को, अतिशय ज्ञानी साधु परिषद् को, चरण में उद्यत साधु परिषद् और देव परिषद् को, हृदय में विस्तृत होती हुई, कण्ठ में ठहरती हुई, मस्तक में व्याप्त होती हुई, अलग-अलग निज स्थानीय उच्चारण वाले अक्षरों से युक्त, अस्पष्ट उच्चारण से रहित, उत्तम स्पष्ट वर्ण-संयोगों से युक्त, स्वरकला से संगीतमय और एक योजन तक पहुँचने वाले स्वर से अर्धमागधी भाषा में जो धर्म कहा उसका विस्तृत वर्णन है। उस देशना में स्थान-स्थान पर पुण्य की उपादेयता सिद्ध होती है। तो आइये वीर प्रभु की देशना के सूत्र-सिद्धान्तों को गुरु की अविरल बरसती कृपा से गहराई से देखने

का प्रयास करते हैं।

१. *अत्थि लोए, अत्थि अलोए एवं जीवा अजीवा, बंधे मोक्खे, पुण्णे पावे...*

सदाबहार वाणी। तारणहार जिनवाणी। प्रभु की उस देशना का प्रथम स्वर अत्थि है, लोक है, प्रतिपक्षी अलोक है। षड्द्रव्य जहाँ दिखते हैं वह लोक है और जहाँ मात्र आकाश है वह अलोक है। लोक का प्रतिपक्षी है अलोक। इसी प्रकार जीव है, अजीव है, बंध, मोक्ष, पुण्य एवं पाप भी हैं। भाव प्राणों के उपयोग गुण से जीता था, जीता है, जीएगा वह है जीव और उसका प्रतिपक्षी उपयोग गुण रहित अजीव। लोक में जीव भी हैं अजीव भी हैं, उनका बंधन ही है-बंध और जीव का पुद्गल से हुआ बंध छूटना है मोक्ष। यही बंधन और मोक्ष भी परस्पर प्रतिपक्षी ठहरे। उसी दो दो प्रतिपक्षी के जोड़े को आगे बढ़ाते हुए प्रभु फरमाते हैं- अत्थि पुण्णे अत्थि पावे- पुण्य है, पाप है। ठाणांग एवं समवायांग सूत्र में भी यही कथन आया है। तत्त्व का विवेचन चल रहा है- पवित्र करे वह पुण्य, दुर्गति में पटके- वह पाप। भगवान् प्रतिपक्षी का विवेचन करते फरमा रहे हैं - पाप का प्रतिपक्षी है पुण्य। यहाँ भी और अन्यत्र भी भगवान् पाप को हेय बताते हैं तो हेय का प्रतिपक्षी हुआ उपादेय। भीतर के पुण्य का, पवित्र भावना का प्रभाव जड़ पर भी पड़ता है- कर्म भी जीव के लिए शुभ बन जाते हैं- इसी को भगवान् अपनी देशना में इस प्रकार फरमाते हैं-

२. *सुचिण्णा कम्मा सुचिण्ण-फला भवंति, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति, फुसइ पुण्णपावे, पच्चायंति जीवा, सफले कल्लाणपावए-*

(सुचिण्णा कम्मा) सु- प्रशस्ततया, चीर्णानि-संपादितानि, कर्माणि-दानादीनि-प्रशस्तभावों से सम्पादित दानादिक सत्कर्म पुण्य कर्म के बंध करने वाले होते हैं। पुण्यकर्म का बंध कराना ही इनका फल माना गया है। ठाणांग सूत्र ४-२ में भी इसी प्रकार का वर्णन मिलता है- इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति....सुचीर्ण। (सदाचरित) कर्मों का फल इस लोक और परलोक में भी सुख देने वाला है। अच्छे कार्य का फल अच्छा और बुरे कार्य का फल बुरा ही मिलता है, यह त्रैकालिक सत्य है। (दुचिण्णा कम्मा)- कुत्सितभावों से किए कार्य कुत्सित-नरकनिगोदादि फलवाले होते हैं, अर्थात् कुत्सित कर्मों को करने वाला प्राणी नरकनिगोदादिक का पात्र बनता है।

फुसइ पुण्णपावे से स्पष्टतः मुखरित होता है कि जीव सुचरित क्रियाओं

द्वारा पुण्य एवं दुष्चरित क्रियाओं द्वारा पाप का बंध करता है। (पच्चायंति जीवा) शुभाशुभ कर्मों से बद्ध हुआ जीव इस संसार में जन्ममरण के दुःखों को प्राप्त करता है।

(सफले कल्लाणपावए) सौभाग्य एवं दुर्भाग्य के हेतु होने से पुण्य और पाप सफल हैं। अनुभवी के शब्दों में 'हम जैसा भी दूसरों के साथ करते हैं वह कई गुना होकर हम पर लौटता है।'

अतः भगवान् की वाणी का आख्यान है; जीव को १८ पापों से विरमण करना चाहिए।

३. अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे।

प्राणातिपात से विरमण और क्रोधादि के यावत् मिथ्यादर्शनशल्य का विवेक अर्थात् उससे निवृत्ति करना-केवल पापों का त्याग और उससे पृथग्भाव का ही वर्णन इसमें मिलता है। पुण्य का त्याग और उससे विवेक, निवृत्ति की बात ही नहीं है। जिससे पुण्य की उपादेयता स्वतः सिद्ध है।

जब तक जीव मोहकर्म के अधीन है तब तक कषाय की हानिरूप विशुद्धिभाव अर्थात् पुण्य उसके लिए उपादेय है। यह विशुद्धि संसार को घटाती है और घटे हुए संसार को अच्छा बनाती है। इन भावों को निरूपित कर रहा है यह सूत्र

४. एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। महड्ढिएसु जाव महासुक्खेसु दूरंगइएसु चिर-ट्ठिइएसु ते णं तत्थ देवा भवंति-महड्ढिए जाव चिरट्ठिइया हारविराइयवच्छा जाव पभासमाणा कप्पोवगा गइकल्लाणा आगामेसिभद्दा जाव पडिरूवा।

इसका आशय यह है कि संयमी के देवलोक में उत्पन्न होने का मुख्य कारण संवर और निर्जरा नहीं, किन्तु संवर और निर्जरा के कारणों का सेवन करते हुए होने वाली शुभ प्रवृत्ति और क्षय होते-होते अवशिष्ट रहे हुए कर्म हैं। अगर (ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा) लवसत्तम अर्थात् ४ मिनट २१, ९/११ सैकेण्ड आयु होती तो संपूर्ण कर्म काट मोक्ष में चले जाते।

मोह का क्षय-मोक्ष। पाप से संसार में भ्रमण होता है तथा पुण्य अर्थात् विशुद्धिभाव संसार को घटाता है और घटे हुए संसार को अच्छा बनाता है।

नष्ट कर किन कर्मों को, पाता है जीव मुक्ति ?
प्रभु ने बतलायी है इस सूत्र में उसकी युक्ति ।।

५. अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति, जहा वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेंति । जह रागेण कडाणं कम्माणं पावगो फल विवागो, जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेंति ।।

अर्थात् आर्त्तध्यान से पीड़ित चित्तवाले प्राणी किस तरह दुःख सागर में गोते खाते रहते हैं और किस प्रकार वैराग्य को प्राप्त कर जीव कर्म राशि को विनष्ट कर देते हैं । पुत्रकलत्रादिकों में आसक्तिरूप राग से उपार्जित कर्मों का पापमय फल होता है और कर्मों को नष्ट कर जीव सिद्धावस्थापन्न हो सिद्धालय में पहुँचता है ।

यहाँ भगवान् ने अपनी देशना में स्पष्ट ही कहा- जीव (पाप) कर्मों को नष्ट कर सिद्धालय में पहुँचता है । पुण्य तो पाप नाश में जीव का सच्चा साथी बनता है-पाप की सत्ता के समापन के (चौदहवें गुणस्थान के द्विचरम समय) अगले क्षण अथवा असाता के उदय में अन्तिम क्षण में पाप के साथ स्वतः छूट जाता है । भगवान् ने बता दिया सार और उसी पर अनुमोदना की भक्तों के द्वारा हो रही बौछार ।

कैसे प्रारम्भ होता है धर्म ?
बताया वीर प्रभु ने मर्म
त्यागे जीव पाप कर्म
स्पष्ट है जिससे उपादेय पुण्य कर्म ।।

६. धम्मं णं आइक्खमाणा तुब्भं उवसमं आइक्खह उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह ।

भगवान् ने धर्म का उपदेश करते समय उपशम भाव-क्रोधादि निरोध का उपदेश किया। उपशम का (क्रोधादिक के निरोध का) उपदेश करते समय हेयोपादेय रूप विवेक का उपदेश दिया । विवेक का उपदेश करते समय प्राणातिपात आदि से विरक्त और प्राणातिपात आदि से विरमण का उपदेश देते हुए पापरूप कर्मों को नहीं करने का उपदेश दिया । पापों का अकरण, विरमण, विवेक और उपशम से क्रियात्मक धर्म के प्रमुख अंग है । क्रियात्मक धर्म पापकर्मों के त्याग से प्रारम्भ होता है, पुण्य कर्म के त्याग से नहीं ।

७. समवसरण की हुई पूर्ण बात, फिर गौतम स्वामी ने पूछा- हे नाथ! कहाँ होता है जीवों का उपपात? निराले ही ढंग से प्रभु ने किया समाधान-

उपपात होता है देवलोक में- जघन्य स्थिति १०००० वर्ष, लेश्या होगी मात्र दो- कृष्ण या तेजो। कौन उत्पन्न हो रहा है अनिच्छापूर्वक सह रहे भूख प्यास आदि और जो अंगोपांग छेदन, मृत्युदण्ड आदि में थोड़ी समता रख लेते वे १२००० वर्ष में तो नैतिक जीवन जीने वाले, १४००० वर्ष में और नैतिक जीवन सहित विवशता में ब्रह्मचर्य पालने वाली सन्नारी की सीधी छलांग ६४००० वर्ष पर। पुण्य बढ़ा पर मामूली सा। पुण्य तो संयम आराधना में ही चमकता है। आराधक कम से कम पहले देवलोक में, कम से कम पल्योपम में। कितना सुस्पष्ट है और ३३ सागर एक भवावतारी-परम शुक्ल लेश्यी तो उत्कृष्ट देवायु अनुभाग के ७वें गुणस्थान में अप्रमत्त को ही। कितना नैकेट्य है संवर निर्जरा के साथ उत्तमोत्तम पुण्य का। इसीलिए तो औपपातिक बिना बोले ही रहस्य खोल रहा है- पुण्य उपादेय है, उपादेय है, उपादेय है।

जीवन का चरम पूरा हो रहा है आयु करम।
मिटा रहा है पूरा भरम।
पाप त्याग ही है असली धरम॥

अंबड़ के ७०० शिष्य। ग्रीष्म ऋतु। गंगा नदी का तट। अदत्त त्याग का व्रत। नहीं मिला कोई दातार। व्रत आराधक, उनका शीघ्र उद्धार।

८. अंतिए थूलग पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए। थूलग मुसावाए आदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए। सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए। थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए। इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए।

अंतिम पच्चक्खाण में १८ पाप का ही त्याग है, शरीर की ममता पाप है- उसी का त्याग है- पुण्य प्रकृति के उदय से निष्पन्न औदारिक शरीर का अंतिम उच्छ्वास के पश्चात् त्याग है- छूटने वाले को छोड़ना है।

उत्तरा. ५/१८ स्पष्ट कह रहा है- *'मरणं पि सपुण्णाणं'* पुण्यशाली को ही यह संथारा....।

पुण्य से आता है संथारा।
संथारे से पुण्य बढ़ता अपारा।

और शिष्यों के बाद औपपातिक प्रस्तुत कर रहा है अम्बड़ का जीवन- अवधिज्ञान की प्राप्ति-

९. सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झ-माणीहिं, अण्णया कयाइं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहावूहामग्गणगवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धी समुप्पण्णा।

शुभ परिणाम, प्रशस्त अध्यवसाय और विशुद्ध होती हुई प्रशस्त लेश्या के द्वारा अंबड़ को अवधिज्ञान लब्धि प्राप्त हुई।

तिलोयपण्णत्ति गाथा कहती है- पुण्णं पद पवित्ता पसत्थसिव-भद्दखेमकल्लाणा। सुह-सोक्खादि सव्वे निद्दिट्ठा मंगलस्स पज्जाया।। पुण्य, पूत, पवित्र, प्रशस्त, शिव, भद्र, क्षेम, कल्याण, शुभ, सौख्य और मंगल ये सब समानार्थक पर्यायवाची शब्द हैं।

अवधिज्ञानी प्राप्ति में 'शुभ', 'प्रशस्त', 'विशुद्ध' शब्दों का उपयोग किया है। यह शब्द आत्मोत्थान के द्योतक और पुण्य के पर्यायवाची रूप में भी प्रयुक्त होते है। जैसे तत्त्वार्थ में ६/३- शुभः पुण्यस्य।

गौतमस्वामी ने पूछा प्रभु से- अंबड़ देव कहाँ उत्पन्न होगा? समाधान करते हुए फरमाया-

१०. गोयमा! महाविदेह वासे जाइं कुलाइं भवंति- अड्ढाई दित्ताइं वित्ताइं विच्छिण्ण-विउलभवण-सयणासणजाणवाहणाइं बहुधणजाय-रूवरयणाइं आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणाइं बहुदासी दास-गोमहिसग-वेलगप्पभूयाइं-बहुजणस्स अपरिभूयाइं। तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाहिइ। तए णं तस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ।

महाविदेह क्षेत्र में जो कुल समृद्ध दीप्तिवान और प्रसिद्ध है। शयनासन, अनेक भवन, यान, वाहनों से युक्त, धन, सोने, चाँदी, दास-दासी, पशुधन आदि से समृद्ध हैं। ऐसे कुलों में से एक कुल में उत्पन्न होगा और गर्भ में आने पर माता-पिता की धर्म में दृढ़ प्रतिज्ञा होगी। उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन ३-१७/१८ कह रहा है- १० वस्तुएँ पुण्यात्मा को ही प्राप्त होती हैं, वह इस प्रकार- १. जहाँ क्षेत्र-वास्तु भवन आदि सोना, पशु तथा दास और पुरुष वर्ग ये ४ कामस्कन्ध होते हैं। २. मित्रवान ३. ज्ञातिवान ४. उच्चगोत्रीय ५. सुन्दर वर्ण ६. नीरोग ७.महाप्रज्ञाशाली ८. विनीत ९. यशस्वी १०. बलवान। अंबड़ देव को भी पुण्यवानी से यह सब वस्तुएँ प्राप्त हुई। इस पुण्यवानी का सदुपयोग कर जीव कैसे आगे बढ़ता है- इसे ठाणांग

सूत्र के ४ थे ठाणे के ४ थे उद्देशक में बतलाया है, सुभे नाममेगे सुभे- कोई कर्म ऐसा होता है जो पुण्य प्रकृतिरूप होता है और शुभ कल्याण का करने वाला होता है ऐसा वह कर्म शुभानुबंधी होता है और इसी से वह जीवों के कल्याण का कारक होता है। इससे स्पष्ट है कि पुण्य हेय नहीं, पुण्य की आसक्ति हेय है।

अंबड़ ने इस पुण्यवानी का किया सदुपयोग, फलस्वरूप अगले भव में बना दृढ़प्रतिज्ञ बालक और देखते हैं कैसे बना केवलज्ञान का पालक-

११. दढ़पइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं.... केवलवरणाणदंसणो समुपज्जिहिइ।

वह दृढ़प्रतिज्ञ बालक अन्न आदि भोगों में संग-संबंध स्थापित नहीं करेगा, राग-रंजित नहीं होगा, अप्राप्त भोगों की आकांक्षा नहीं करेगा और अत्यन्त लीन नहीं होगा....केवलज्ञान प्राप्त करेगा। आशयं स्पष्ट है कि भोग-उपभोग के साधन पुण्य से प्राप्त पर मूर्च्छा, आसक्ति पाप है, जो हेय है, त्याज्य है। पुण्य का भोग पाप है। अतः मिले हुए का सदुपयोग करना धर्म है। दुरुपयोग करना पाप है।

१२. केवलबोधि अर्थात् सम्यग्दर्शन-प्रज्ञापना पद २० अंतकिरिया के आधार से जो केवलबोधि को बूझता है वह श्रद्धा, प्रतीति, रुचि करना है। जो श्रद्धा, प्रतीति, रुचि करता है वह मति, श्रुत ज्ञान को प्राप्त करता है। मूलाचार गाथा २३४ में कहा गया है- समत्तेण सदुणाणेण य विरदीए कसायणिग्गह गुणेहिं जो परिणदो सो पुण्णो- जो सम्यक्त्व, श्रुतज्ञान, विरति, कषायनिग्रह रूप गुणों में परिणत होता है वह पुण्य है। मिथ्यात्व से सम्यक्त्व की ओर उत्थान कराने वाला पुण्य ही है। मिथ्यात्व में ३ करण के पूर्व विशुद्धि लब्धि से शुभ प्रकृतियों का अनुभाग विशेष रूप से बढ़ना शुरु होना है। पुण्य का अनुभाग द्विस्थानिक से चतुस्थानिक और पाप का अनुभाग चतुःस्थानिक से द्विस्थानिक हुए बिना मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं छूट सकता। अर्थात् सम्यक्त्वी बनाने में सहकार पुण्य का ही है। संवर-सकाम निर्जरा केवल बोधि के पश्चात् ही होती है।

प्रभु की देशना, अंबड़ जीवन का वर्णन,
जिसमें किया पुण्य का निरूपण।
स्थान-स्थान पर मिला रहस्योद्घाटन प्ररूपण।
इसलिए सुज्ञजन करे पुण्य का उपादेय कथन, आचरण॥

(क्रमशः)

MEDITATION (DHYANA) IN JAIN SCRIPTURES

Shri Ranjit Singh Kumat

Meditation starts with concentration. You need concentration to do any work. Even a thief or a robber needs concentration to accomplish his task. Doctor or a Scientist needs concentration to do his job. Does every concentration mean meditation? Jain scriptures give an apt answer to this. There are four types of meditation as given in Tatvaartha Sutra and Thaanang Sutra, out of which two are prohibited and two are advocated. The four types of meditation are:-

1. **Aarta Dhyana** – Meditation for craving
2. **Raudra Dhyana-** Meditation for evil doing
3. **Dhamma Dhyana-** Meditation for Dhamma or the Nature
4. **Shukla Dhyana-** Meditation par excellence

Of these four types of Dhyana, first two are prohibited as these cause suffering to self and to others who get afflicted due to evil designs of such people. The latter two are recommended meditations as they help a person to get emancipated from the chain of birth and death leading to Moksha or Nirvana. A saint should give up Aarta and Raudra Dhyana and practice Dhamma and Shukla Dhyana and the latter alone can be called meditation.

Aarta Dhyana

Aarta means suffering which comes due to craving. There are four types of craving:-

1. Craving to get rid of unwanted things, persons or situations.
2. Craving to get rid of unpleasant situations
3. Craving to get back the beloved things or persons that have been lost
4. Craving to get sought after things and persons

Craving results in crying. Person cries when beloved things or persons are lost as also when he fails to acquire the

sought after things. Crying for loss of beloved things is natural but person tries to get ultra luxurious things of show and conspicuous consumption, make name and fame and appear unique, accumulate riches and become the richest man ever etc. All these require endless efforts and one can spend one's lifetime in its pursuit and yet at the end it will prove futile because the things accumulated will not last for ever nor will go with him after his death. All the worldly things we crave for are ephemeral and the cravings are limitless. We cry when we do not get the desirable thing or lose the beloved one and never feel satisfied with what we possess. We are always crying to get more and more and this type of constant craving and crying is called "Aarta Dhyana" or Meditation for Craving. There are four symptoms of this type of meditation:-

1. Crying 2. Grief 3. Tears 4. Lamentation

Raudra Dhyana or Meditation for Evil doing

Raudra means to be evil and to do things that are heinous or atrocious. When we start thinking evil, we think of doing things that are violent which includes stealing, telling lies and to do anything (violent or otherwise) to protect what is near and dear to us. Accordingly the Raudra Dhyana is of four types:-

1. Evil contemplation to do violent things.
2. Evil contemplation to do things which are not for true.
3. Evil contemplation to commit theft.
4. Evil contemplation to protect things or person.

This type of Dhyana has four symptoms:-

1. Asanna Dosha or Single evil – To be indulged in doing only one type of evil like violence.
2. Bahul Dosha or Multiple evils- To be engaged in many types of evil like violence, stealing, etc.
3. Agyana Dosha or Evil doing due to ignorance.
4. To remain involved in evil doings for entire lifetime without any repentance is called Aamarananta Dosha (Evil for the lifetime)

Dhaamaa Dhyana

There is no definition of Dhamma Dhyana but the scriptures like 'Tatvaratha Sutra', 'Uttaradhyana Sutra' and 'Thananga' classify it into four categories as given below:-

1. Aagyavichaya or Meditation to consider the Commands.
2. Apaayavichaya or Meditation to consider the Undesirable.
3. Vipaakavichaya or Meditation to consider the Results.
4. Sansthanavichaya or Meditation to consider the Structure of the Universe.

Dhamma here does not mean mere religion. It has wide connotation. It means the Nature or what happens Naturally. And so to meditate on Nature and to be with Nature is Dhamma Dhyana.

Let us consider different types of Dhamma Dhyana separately.

Aagyavichaya or Meditation to consider the Commands

Interpretation found in the scriptures is that in this type of meditation one considers and examines the dictates or commands of the 'Veetaraga' or the 'Jina' or the Omniscient. One who has attained the stage of Omniscience or has risen above cravings and aversion is called 'Veetaraaga' or 'Jina' or Tirthankara like Lord Mahavir or Lord Rishabhadeo. These are the persons who initiated and invigorated the Dhamma and their commands are for our profound consideration. One who concentrates and regurgitates on these commands is said to be having Aagyaavichaya type of Dhamma Dhyana. It is, however, humbly submitted that this can be interpreted, and rightly so, in a different manner. This type of meditation implies that when one becomes engrossed in the introspection of the self he gets 'self-awareness' and this type of awareness gives rise to commands of the self which arise due to enlightenment and sublimation of the self. When one gets to know oneself, one hears one's inner voice or command and that is called 'Pragya' or 'Vivek' or discrimination. To recognize this inner voice or command and to consider and understand it, is called

'Aagyaavichaya' type of Dhamma Dhyana. The symbol of this type of dhyana has been described as 'Aagyaaruchi' or 'interest in the command' . So it proves the argument that when one recognizes one's inner voice and command, one gets prompted to practise it and that is known as 'interest in command' and the meditation of that kind is called 'meditation to consider command'.

'Apaayavichaya' or the Meditation to consider the Undesirable

To examine and consider what is undesirable or heinous is called 'Apaayavichaya' type of Dhamma Dhayana. When one concentrates and meditates, different types of thoughts come; some are good and some are bad. If we go along with the thoughts, we will end up in first two types of meditation namely, Aarta or Raudra Dhayana. It is not unnatural to have thoughts which are a result of craving or aversion but to go along with them is undesirable. To be able to segregate and watch such thoughts and allow them to go away without giving rise to craving and aversion is the way to get rid of undesirable thoughts. This is called the 'Apaayavichaya' type of Dhamma Dhyana. The distinct feature of this type of Dhyana is 'Nisaraga Ruchi' or 'interest in the natural'. If one watches one's thoughts or events as they are and does not interfere with them or go along with them, he is with the nature and so he is in a state of watchfulness and thus gets rid of the undesirable thoughts without any effort.

'Vipaakavichaya' or the Meditation to Consider the Results

It has been defined as an act of considering and understanding the results of one's karma or action. There is a well built theory of Karma in the Jain Scriptures and to consider and think on implications and results of all Karma is called 'Vipaakavichaya' type of Dhamma Dhyana. It is humbly submitted that when a person meditates on one's own body and examines and introspects each and every part of the body separately, one experiences different types of sensations on the

body; some of them are pleasant, some unpleasant and some neutral. One is bound to feel happy when one encounters pleasant sensation and unhappy when it is unpleasant. But during meditation one has to practice equanimity between pleasant and unpleasant sensation realizing that all these are different aspects of one's own past actions or feelings and we should not promote craving or aversion towards the pleasant and unpleasant sensations. This type of development of understanding for the sensations on different parts of the body is truly called "Vipaakavichaya" or 'meditation to understand the impact of one's actions, thought and feelings'. The symbol for this type of meditation has been given as 'Sutra Ruchi or interest in the sayings of the Scriptures. It may be added that sutra means wisdom or 'Pragya' arising in the self as a result of meditation and to be absorbed in one's own understanding and wisdom is 'Sutra Ruchi'.

Sansthanvichaya or Meditation to consider the Structure

'Sansthanavichaya' or meditation to consider the Structure is interpreted as to know and understand the 'Loka' or the universe, its upper portion, the lower portion and the entire terrestrial region involving land, seas, islands etc. It is, however, submitted that this interpretation is not wholly correct. In a way our own body is 'Sansthana' or Structure and to know and understand it, the inner parts, inner depths, mental thoughts etc. is truly the meditation on constitution or 'Sansthanavichaya'. It is said, "what is inside is also outside" and so one who knows the inner world of our body, thought and mind also knows the outer world. To know the self and its inner mechanism and to be a witness to all the sensations arising on the body without any craving or aversion is truly the 'Sanstahanavichaya' type of Dhamma Dhyana. The 'lakshana' or characteristic of this type of dhyana is 'Avaghadaruchi' which means to know a thing to its innermost depth. Going deeper and deeper in one's body is truly the 'Avagadharuchi'.

It is thus clear that Dhamma Dhyana means to become

introvert and go deep in one's own body to observe all the sensations arising in its natural way, to know and understand the Dhamma or our own nature, and by being mere witness and by not reacting towards the sensations arising on the body, one gets rid of craving, aversion and lust. One gets rid of ego too and by being with the nature, the Dhamma, one practices Dhamma Dhyana. There are four 'anupreksha' or experiences that one would come across through Dhamma Dhayana. They are as follows:-

a. Ekatvaanupreksha-(The feeling of oneness). To know the self and to realize the self being separate from the body and its oneness with the supreme.
b. Anityaanupreksha-(The feeling of ephemeralness or transcience) To understand the true nature of the sensations arising on the body as also the world around us that all worldly things are ephemeral in nature; arising and disappearing.
c. Asharanaanupreksha (The feeling of being without any support or guardianship) One comes to realize that there is no one to help or guard us. We are all alone and we have to bear the fruits of our deeds on our own. No one can protect us from the results of our deeds.
d. Sansaraanupreksha (To feel and understand the true nature of the world). One feels and understands the true nature of this world- the interaction between the living and the non-living, and the causation of moving in the chain of birth and death and how to get out of it.

Shukla Dhyana – Meditation par excellence

This is the meditation of the highest type and can be attained with effort and practice. This is also of four types:-

a. Prithakatva vitarka savichaari- Meditation with discrimination and thought.
b. Ekatva vitarka nirvichari- Meditation with discrimination but without contemplation.
c. Sukshama Kriya Anivritti- Meditation with very slight

activity but without End.

d. Vyuparat Kriya Nivritti- The End of Activity and Attainment of Freedom.

It is given in the scriptures that out of these four types of Shukla Dhyana, first two types of meditation can be done whose attachment with the world has totally evaporated whereas the last two categories are available only to those who have become fully omniscient or what Jain scriptures call "Kewal Gyani" Those who become enlightened and omniscient are fully detached from the world and are in the third stage of Shukla Dhyana. When such 'Kewal Gyani" or fully enlightened person leaves the terrestrial body and attains Moksha, it is in the last few moments that he attains the last stage of Shukla Dhayana.

Let us now discuss the four types of Shukla Dhyana separately.

Prithakatva vitarka savichaari- Meditation with Discrimination and thought

The meditation is on any one object or parts of it including our body in its different aspects, segregating and analysing each aspect to its minutest detail and examines it from different angles because truth is multi-faceted. In this meditation thoughts continue to come that is why it is called 'savichari' or with thought.

Ekatva vitarka nirvichari- Meditation with Discrimination but no Contemplation

When the deep meditation makes one to realize that different aspects analyzed from different angles lead to one and only one truth, he realizes the oneness in the whole nature and system. While remaining in one of the three yogas (mind, speech and body) or tools of meditation, he becomes still and stops skipping from one thought to the other and this stage is called 'Ekatva Vitarka Nirvichari'. In this there are no thoughts and contemplation and the person becomes fully enlightened, tranquil and quiet.

Sukshama Kriya Anivritti- Meditation with very slight

activity but without End

The fully enlightened person uses his body, mind and speech but they are no more needed as instruments. What he knows and talks is part of his whole personality. The instruments or yoga like mind, speech and body are no more required but are there till his final death, that is, until he is breathing. Activity is very slight and has no selfish goal except the general benefit of the society.

Vyuparat Kriya Nivritti- The End of Activity and Attainment of Freedom.

When the body stops even the smallest of the activity including the breathing, it is the last stage of the Shukla Dhyana. The aspirant attains the freedom- the freedom from the chain of life and death.

The signs of Shukla Dhyana

There are four signs of Shukla Dhyana and these are – Kshama (Forgiveness), Nirlobhataa (Generosity), Mridutaa (Sweetness) and Saralataa (Simplicity). As the person progresses in meditation, anger, greed etc disappear and virtues of simplicity, sweetness appear. There are four supports of this Dhyana namely-

a. Not to be in distress
b. Aloofness
c. Enlightenment
d. Unconcern for and detachment from the body

Conclusion

It is possible to get concentration by many means but concentration can lead to peace of mind and enlightenment only when one is in equanimity, detached and free from craving. Satisfaction should take place of craving, forgiveness of anger and wisdom of ignorance. Dhamma Dhyana and Shukla Dhyana lead to peace and enlightenment whereas Aarta and Raudra Dhyana cause suffering and anguish.

-C 303, Daffodil, Hiranandani Garden, Powai, Mumbai-400076

विनम्र अनुरोध

प्यास बुझाए, कर्म घटाये, फिर क्यों न अपनाएं धोवन पानी

सुज्ञ श्रावक एवं श्राविकाओं,

चतुर्विध संघ की आराधना में सहायक आवश्यक साधनों में से एक साधन है- धोवन पानी। यह श्रमण-श्रमणी की उत्कृष्ट साधना में सहायकभूत होने तथा श्रावक-श्राविका को अनर्थदण्ड से बचाने में भी सहयोगी है। परिवर्तित होती जीवन शैली व खान-पान शैली में धोवन पानी का विवेक अतिवांछनीय है।

प्रायः सजगता की कमी से धोवन पानी की सुलभता में कमी देखी जाती है। चतुर्विध संघ के लिए कर्म की एकान्त निर्जरा का कारण होने से धोवन पानी के प्रति सजगता बढ़ती पाश्चात्य जीवन शैली में अत्यावश्यक प्रतीत होती है। भगवती सूत्र शतक-७ उद्देशक- १ तथा शतक-८ उद्देशक-६ में प्रासुक व एषणीय आहार-पानी से होने वाले लाभ का कथन है। जिसमें उल्लेख है कि प्रासुक व एषणीय आहार-पानी चतुर्विधसंघ में समाधि का वरण कराता है तथा एकान्त-निर्जरा करता है। पानी में राख घोलना घोलन कहलाता है। राख से माँजे गये बर्तन को धोने से निर्मित पानी धोवन पानी कहलाता है। धोवन पानी की गवेषणा श्रमण-श्रमणी वर्ग के लिए वर्तमान में सुलभ प्रतीत नहीं हो रही है जो कि साधना में अत्यावश्यक है।

एक सद्गृहस्थ के लिए भी धोवन-पानी प्रयोग से निम्नलिखित लाभ अनिवार्य रूप से होते हैं-

१. धोवन पानी बैक्टीरिया रहित पानी होता है, जिससे शरीर बीमारियों से बचा रहता है। वैज्ञानिक एवं डॉक्टर ने इसको बैक्टीरिया रहित पानी ही माना तथा वे भी वर्तमान में यही कहते हैं कि अधिकांश बीमारियाँ पानी की अशुद्धि के कारण ही होती हैं।
२. धोवन पानी के प्रयोग से हम संयमी जीवन में सहायक बनते हैं। पंचमहाव्रतधारी साधु-साध्वी की जीवनचर्या के समीचीन निर्वहन हेतु अचित्त जल का प्रयोग अभिन्न अंग है। साधु प्रतिपल कर्मों की निर्जरा करता है। उन निर्जरा करने वालों की साधना में सहायक बनना उत्कृष्ट लाभ है।
३. सुपात्र दान का सहज लाभ होता है। शास्त्र में वर्णन आता है कि अधिकांश साधकों ने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन सुपात्र दान के द्वारा किया है। हम भी इस लाभ से तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन कर सकते हैं।

श्रावक साधु का हित पहले चाहता है पश्चात् सुख चाहता है। भगवती सूत्र शतक ३ में सनत्कुमार देव की ऋद्धियों का कारण साधु का हितकारी व सुखकारी होना बताया है। धोवन-पानी का प्रयोग श्रावक का स्वयं का हित साधक होने के साथ-साथ

साधु की साधना का भी हितकारी है। सुलभता से प्राप्त, स्वास्थ्यवर्द्धक, पुण्य उपार्जक एवं एकान्त-निर्जरा में सहायकभूत धोवन-पानी के इस लाभ से चतुर्विध संघ के प्रत्येक साधक का लक्ष्य सधे।

अतः आपसे निवेदन है कि प्रत्येक परिवार का सदस्य इस सरलता से होने वाली उत्कृष्ट साधना को करने की कृपा करें। यह अपनी आत्मा पर किया गया सबसे बड़ा उपकार होगा। हमारे इस छोटे से नियम की सजगता श्रमण जीवन में भी सहयोगी बन सकती है और श्रमण की साधना में हम भी प्रकाश स्तम्भ बन सकते हैं। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ.... **"धोवन पानी-निर्दोष जिन्दगानी"**

आपका

सुमेरसिंह बोथरा

अध्यक्ष-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अरिहन्त देव का क्या कहना

(तर्ज-दुनियाँ में देव हजारों हैं.....)

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

दुनियाँ में देव अनेकों हैं, अरिहन्त देव का क्या कहना।
उनके अतिशय का क्या कहना, उनके आश्रय का क्या कहना।।टेर।।

जो दर्शन ज्ञान अनन्ता हैं, जो राग-द्वेष जयवन्ता हैं।
जो भक्तों के भगवन्ता हैं, उनकी करुणा का क्या कहना।।१।।

जो आदि धर्म की करते हैं, भव्यों के भव को हरते हैं।
जो तिरते और तिराते हैं, ऐसे तीरथ का क्या कहना।।२।।

सुर-असुरों से जो पूजित हैं, ऋषि मुनियों से जो वंदित हैं।
जो तीन लोक के स्वामी हैं, उनकी महिमा का क्या कहना।।३।।

पूजा-निन्दा में सम रहते, नित वीतरागता में रमते।
जहाँ समकित दीप जले नित ही, उनकी समता का क्या कहना।।४।।

कोई पूजे देव सरागी को, कोई शीष नमाते भोगी को।
अरिहन्त देव ही देव मेरे, देवाधिदेव का क्या कहना।।५।।

गौतम से कहते हैं भगवन, दृढ़ श्रद्धामय हो यह जीवन।
जो शरण में हैं अरिहन्तों के, उनके मंगल का क्या कहना।।६।।

(मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. जोधपुर में इन दिनों प्रवचन पूर्व अरिहन्त स्तुति में यह भजन बोलते हैं।)

शोधालेख

जीवन-मृत्यु का आधार : आयुष्यकर्म (३)

श्री गौतमचन्द जैन

(२) तिर्यंचायुष्य उत्तर प्रकृति एवं बंध के कारण– तिर्यंचायु कार्मण शरीर प्रयोग नाम कर्म के उदय से जीव तिर्यंचायु का बंध करता है। तिर्यंचायु का फल भोग करता हुआ जीव तिर्यंच गति में रहता है जहाँ जीव चाहते हुए भी अपनी इच्छा से कार्य नहीं कर पाता है। उसे परवश होकर काम करना पड़ता है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक पाँचों ही जाति के जीव इस गति में पाए जाते हैं। इनका शरीर तिरछा होता है। यहाँ नरक जैसा दारुण दुःख व देव गति जैसा दिव्य सुख नहीं होता है। यहाँ जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट स्थिति ३ पल्योपम की होती है।

आगम में तिर्यंचायु बंध के कारण बताते हुए कहा गया– *''चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणिय (आउय) त्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा– माइल्लताए, णियडिल्लताए, अलियवयणेणं, कूडतुलकूडमाणेणं।*[१७]

(अ) मायाचार से– धर्म तत्त्व के उपदेश में धर्म के नाम से मिथ्या बातों को मिलाकर उनका स्वार्थ बुद्धि से प्रचार करना। झूठा प्रदर्शन करना, कथनी करनी में एकरूपता न होना, कपट रखना, सदैव दूसरों का अहित हो, ऐसे प्रयास करना आदि कार्य मायाचार में आते हैं।

(आ) निकृतिमत्ता से अर्थात् दूसरों को ठगने से– 'मुख में राम बगल में छुरी' अर्थात् माया तिर्यंच-आयु का बंध हेतु है। माया अर्थात् छल प्रपंच करना अथवा कुटिल भाव रखना। जैसे धर्म तत्त्व के उपदेश में धर्म के नाम से मिथ्या बातों को मिलाकर उनका स्वार्थ बुद्धि से प्रचार करना तथा जीवन को शील से दूर रखना आदि सब माया है। यही तिर्यंचायु के बंध का कारण है।

कहावत को चरितार्थ करते हुए जीव मन में कुछ और विचार रखते हैं एवं बाहर में कुछ और ही प्रवृत्ति करते हैं। छद्म आवरण ओढकर ये अन्य प्राणियों को अपनी मीठी-मीठी बोली, चिकनी-चुपड़ी बातों से प्रभावित कर उन्हें ठग लेते हैं, धोखाधड़ी एवं दगाबाजी करते हैं।

---

१७. स्थानांग सूत्र, सूत्र संख्या-६२९

(इ) असत्य वचन से- क्रोध, लोभ, भय, हास्यवश मनुष्य असत्य भाषण करता है। अज्ञानवश बोला गया थोड़ा सा भी झूठ, प्रभावित व्यक्ति के लिए क्लेशकारी हों जाता है और उसे भाँति-भाँति के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

(ई) कूटतुला-कूटमान से- कम ज्यादा तौलना-मापना व्यापारिक संहिता के मूलभूत नियमों को तोड़ना है,नीति विरुद्ध कार्य करना है और लोगों के साथ धोखाधड़ी करना है। ऐसे व्यक्तियों की पोल खुल जाने पर वे समाज में मुँह दिखाने के लायक नहीं रह पाते एवं अगले भव में भी उन्हें तिर्यंच योनि में उत्पन्न होना पड़ता है।

कर्मग्रन्थ प्रथम भाग में इसे कहा गया- तिरियाउ गूढहियओ सढो ससल्लो।[१८] अर्थात् गूढ हृदय (जिसके मन की बात का पता न लग सके) शठ-मीठा बोलने का प्रदर्शन करते हुए भी मन में कपट भाव रखने वाला; सशल्य- अपने दोष, पापकर्मों को छिपाने के लिए सदैव चौकन्ना रहने वाला और इसमें चतुराई समझने वाला जीव तिर्यंचायु का बंध करता है। 'आचार रत्नाकर' ग्रन्थ में तिर्यंचायु बंध के बीस कारण बताए हैं, यथा- शील भंग करना, ठगाई करना, मिथ्याकर्मों का आचरण करना, खोटा उपदेश देना, खोटे नाप-तौल रखना, दगाबाजी करना, झूठ बोलना, झूठी साक्षी देना, अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु मिला कर बेचना, वस्तु का रूप बदल कर बेचना, पशु का रूप बदल कर बेचना, खराब वस्तु पर मुलम्मा चढ़ा कर बेचना, क्लेश करना, निंदा करना, चोरी करना, अयोग्य काम करना, तीन अशुभ लेश्या वाला होना एवं आर्त्तध्यान करना।[१९]

तत्त्वार्थ सूत्र में तिर्यंचायु बंध के कारण बताते हुए सूत्र दिया गया-

"माया तैर्यग्योनस्य॥"[२०]

(३) मनुष्यायु उत्तर प्रकृति एवं कर्मबंध के कारण-मनुष्यायु कार्मण शरीर प्रयोग नामकर्म के उदय से जीव मनुष्यायु का बंध करता है। जिस कर्म के उदय से आत्मा को अमुक समय तक मनुष्य भव में रहना पड़े, उसे मनुष्यायुष्य कर्म कहते हैं। मनुष्य गति के जीव उत्थान और पतन दोनों प्रकार की क्षमता रखते हैं।अर्थात् अशुभ कर्मों के द्वारा पतन तथा शुभ कर्मों के द्वारा उत्थान करने में भी वे स्वतंत्र हैं। मनुष्य

---

१८. कर्मग्रन्थ-भाग १, गाथा ५८, मरुधर केसरी साहित्य प्रकाशन समिति, ब्यावर, पृष्ठ-१५५

१९. जैन तत्त्व प्रकाश, श्री अमोल जैन ज्ञानालय, धुले।

२०. तत्त्वार्थ सूत्र, ८.१७

गति में जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की होती है।

आगम में बंध के कारण बताते हुए कहा गया है-चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्साउयत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा- पगतिभद्दताए, पगतिविणीयताए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरिताए।[21]

(अ) प्रकृति की भद्रता - 'अज्जु धम्मगइ तच्चं' अर्थात् जिसमें सरलता होगी वही धर्म को धारण कर सकता है। ऐसा समझकर भीतर और बाहर एक सा रहना चाहिए। सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ,[22] अर्थात् जहाँ ऋजुता होगी, धर्म वहीं ठहर सकता है अतः प्रकृति की भद्रता मनुष्यायु बंध का प्रथम कारण कहा गया है।

(आ) विनीतता- विनय धर्म का मूल है। विनय से सद्गुणों की प्राप्ति होती है और विनीत मनुष्य सबका प्रीतिपात्र होता है। विनयी स्वभाव वाला मानव सर्वत्र प्रशंसनीय एवं प्रियंकर होता है। अतः प्रकृति की विनीतता मनुष्यायु बंध का दूसरा कारण बताया गया।

(इ) दयालुता- 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना वाला जीव दयावान होता है। सभी प्राणी अपने समान हैं। सबको अपने प्राण प्रिय हैं, सभी जीना चाहते हैं, ऐसा जानकर समस्त जीवों पर दया रखना, दुःखी जीवों को देखकर अनुकम्पा लाना, यथाशक्य सहायता करके उनके दुःख निवारण में सहयोगी बनना, मरते हुए को बचाने का प्रयत्न करना ये सब मनुष्यायु बंध के तृतीय कारण हैं।

(ई) अमत्सरता- अन्य प्राणियों को देखकर कभी भी मन में ग्लान भाव न लाना अपितु उनकी उन्नति में यथासंभव सहयोग देना क्योंकि दूसरों से ईर्ष्या करने से उसका तो कुछ भी नहीं बिगड़ता पर स्वयं की बहुत बड़ी हानि हो जाती है, अतः मेरी भावना में वर्णित 'देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ' की भावना मनुष्यायु बंध का चौथा कारण है।

कर्मग्रन्थ में मनुष्यायु के बंध के कारणों का उल्लेख इस प्रकार किया है-

मणुस्साउ पयईइ तणु कसाओ दाणरुई मज्झिमगुणो अ।[23]

अर्थात् जो जीव सरल हृदय वाला है, अल्प आरंभी और अल्प परिग्रही है, दान देने में उत्साह रखने वाला है, मंद कषाय वाला होने से जीव मात्र के प्रति दया,

---

२१. स्थानांग सूत्र, सूत्र संख्या ६३०

२२. उत्तराध्ययन सूत्र, ३.१२

क्षमा, मार्दव आदि भाव रखने वाला है, वह मनुष्यायु का बंध करता है।

'आचार रत्नाकर' ग्रन्थ में मनुष्यायु बंध के दस कारण बताए हैं- देवगुरु की भक्ति करना, जीवों पर दया करना, शास्त्र का पठन-पाठन करना, न्याय-नीति से लक्ष्मी का उपार्जन करना, हर्षयुक्त परिणाम से दान देना, पर की निन्दा न करना, किसी को पीड़ा न पहुँचाना, आरम्भ घटाना, ममता घटाना, सदा सरल भाव रखना।[२४]

तत्त्वार्थ सूत्र में मनुष्यायु बंध के कारणों को बताते हुए कहा गया-

अल्पारम्भ परिग्रहत्वं स्वभाव मार्दवार्जवं च मानुषस्य।[२५]

अल्प आरम्भ, अल्प परिग्रह, स्वभाव में मृदुता और सरलता ये मनुष्य-आयु के बंध-हेतु हैं।

(४) देवायुष्य उत्तर प्रकृति एवं बंध के कारण- देवायु कार्मण शरीर प्रयोग नाम कर्म के उदय से जीव देवायु का बंध करता है। देवायु के उदय से देवगति में विपुल भोगों को भोगता हुआ जीव देवगति में रहता है, किन्तु स्थिति पूर्ण होते ही उसे वह सारा वैभव बरबस छोड़ना पड़ता है। चाहते हुए भी वह वहाँ नहीं रुक पाता है। देवगति में जीव अपने कृत कर्मों का साता रूप फल अधिक भोगता है एवं अनेक प्रकार की दिव्य भौतिक ऋद्धियों का वह स्वामी होता है।

आगम में देवायु बंध के चार कारण निरूपित हैं-

"चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पकरेंति, तं जहा- सरागसंजमेणं, संजमा-संजमेणं, बालतवो कम्मेणं, अकाम णिज्जराए।"[२६]

(अ) सराग संयम- स्वच्छन्दाचार को रोककर अपनी इन्द्रियों को, मन को नियंत्रण में रखना संयम कहलाता है। पंच महाव्रत अंगीकार करने के पश्चात् भी साधक को वीतराग बनने के लिए तीव्र साधना की महती आवश्यकता प्रतिपादित की गई है। जब तक राग है, शुद्ध संयम की पालना नहीं हो सकती एवं वीतराग हुए बिना मोक्ष की प्राप्ति हो नहीं सकती। अतः पंच महाव्रत ग्रहण करने के पश्चात् भी

---

२३. कर्मग्रन्थ भाग १, गाथा ५८

२४. जैन तत्त्व प्रकाश, श्री अमोल जैन ज्ञानालय, धुले।

२५. तत्त्वार्थ सूत्र, ६.१८।

२६. स्थानांग सूत्र- सूत्र संख्या- ६३१

जब तक शरीर एवं शिष्यों पर आसक्ति का भाव है, राग या कषाय का सद्भाव है, तब तक वह संयम सराग संयम है जो कि देवायु बंध का प्रथम कारण है।

(आ) संयमासंयम– श्रावक का संयम एकदेश होता है। क्योंकि वह व्रतों का पालन सर्वतः नहीं कर पाता है। संकल्पजा हिंसा आदि के त्याग से वह संयमी और स्थावर आदि की हिंसा से अविरत होने से वह असंयमी भी है। अतः संयमासंयम देवायु बंध का दूसरा कारण है।

(इ) अज्ञानतप– बाल अर्थात् यथार्थ ज्ञान से शून्य मिथ्यादृष्टि जीवों का अग्निप्रवेश, जलपतन, गोबर आदि का भक्षण, अनशन आदि बाल तप है। ३६३ पाखंड मत वालों का उलटा लटक कर पंचाग्नि तप तपना, ये सब सम्यक्त्व के अभाव में बाल तप है जो देवायु बंध का तीसरा कारण है।

(ई) अकाम निर्जरा– अनिच्छा से या दबाव से, भय से या पराधीनता से, लोभवश या मजबूरी से, आहारपानी नहीं मिलने से भूख-प्यास सहन करनी पड़े, स्त्री आदि न मिलने से ब्रह्मचर्य पालना पड़े, मरुस्थल जैसे प्रांत में विशेष पानी न मिलने से बिना स्नान किए रहना पड़े, वस्त्र और स्थान न मिलने से सर्दी-गर्मी, डांस-मच्छर-खटमल आदि का दंश सहन करना पड़े, इस प्रकार अकाम (बिना स्वेच्छा) कष्ट स्वल्प समय तक अथवा दीर्घ काल तक सहन करना पड़े तो वे जीव पुण्य का उपार्जन करते हैं जो देवायु बंध का चौथा कारण है।

कर्मग्रन्थकार ने देवायु बंध के कारणों का खुलासा करते हुए सूत्र दिया– "**अविरयमाइ सुराउं बालतवोऽकामनिज्जरो जयइ।**"[२७] अर्थात् अविरत सम्यग्दृष्टि वाला तथा बालतप या अकाम निर्जरा करने वाला जीव देवायु का बंध करता है।

तत्त्वार्थसूत्रकार ने सूत्र दिया–"**सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जरा बालतपांसि देवस्य।**"[२८] अर्थात् सराग संयम, संयमासंयम, अकाम निर्जरा और बालतप ये देवायु के बंध-हेतु हैं।

'आचार रत्नाकर' ग्रन्थ में देवायु बंध के दस कारण बतलाए हैं, यथा– 'अल्प कषायी होना, निर्मल सम्यक्त्व का पालन करना, श्रावक के शुद्ध व्रतों का पालन करना, गत वस्तु, घटना और मृत संबंधी आदि के लिए चिंता-शोक न

---
२७. कर्मग्रन्थ भाग १, गाथा ५९

करना, धर्मात्मा की भक्ति करना, दया और दान की वृद्धि करना, जिनधर्म का अनुरागी होना, बाल तप करना, अकाम निर्जरा करना, साधु के शुद्ध व्रतों का पालन करना।[२९]

आयुष्य कर्म कब बंधता है ?

इस संसार में चार प्रकार के जीव हैं- देव, नारकी, तिर्यंच और मनुष्य। देवों और नारकों का उपपात जन्म होता है तथा उनका आयुष्य बंध उनकी छह महीने की आयु शेष रहने पर होता है। मनुष्य और संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जो संख्यात वर्ष जीवी है उनका आयुष्य इस नियम से बंधता है- वर्तमान जन्म की निश्चित आयु को तीन भागों में बाँटने पर उनमें से दो भाग बीत जाने पर जो अंतिम एक तिहाई भाग शेष रहे, उसमें अगले जन्म की आयु बन्ध सकती है। यदि उस समय आयु न बँधे तो शेष रहे एक भाग को इसी प्रकार तीन हिस्सों में बाँटने पर उसके अंतिम तिहाई भाग में आयु बंधती है। ऐसा करते-करते अंतिम अन्तर्मुहूर्त में तो आयुष्य का बंध अवश्य ही होता है। कोई भी आत्मा अगले भव का आयुष्य बंध किए बिना वर्तमान भव को नहीं छोड़ सकती है।[३०]

उदाहरणार्थ माना किसी व्यक्ति का वर्तमान जन्म का आयुष्य नब्बे वर्ष का है तो साठ वर्ष व्यतीत होने पर शेष रहे ३० वर्ष में आगामी भव की आयु का बंध होगा। यदि इस समय न बंधे तो अंतिम ३० वर्ष की अवधि में से २० वर्ष बीत जाने पर शेष रहे १० वर्षोमें उसका आयुष्य बंध होता है। तब भी आयुष्य न बंधे तो यह क्रम इसी प्रकार अंतिम अन्तर्मुहूर्त तक चलता रहता है। यह भी ज्ञातव्य है कि यों तो प्रत्येक आत्मा अपने जीवन काल में प्रतिक्षण आयु कर्म का भोग कर रही है और प्रतिक्षण आयु कर्म के परमाणु भोग के पश्चात् पृथक् होते रहते हैं। जिस समय वर्तमान जीवन के पूर्वबद्ध आयु कर्म के समस्त परमाणु क्षीण होकर आत्मा से पृथक् हो जाते हैं; उस समय प्राणी की आत्मा को वर्तमान शरीर छोड़ना पड़ता है। वर्तमान शरीर को छोड़ने से पूर्व भावी शरीर के आयु कर्म का बंध हो जाता है, यह उपर्युक्त तथ्य से स्पष्ट है। (क्रमशः)

-१९२ बी, मीटरगेज लोको के सामने, बजरिया, सवाईमाधोपुर

---

२८. तत्त्वार्थ सूत्र, ६.२०

२९. जैन तत्त्व प्रकाश, पृष्ठ १६२

३०. प्रज्ञापना सूत्र, पद ६ सूत्र सं. ६७७ से ६८३

शोधपरक-चिन्तन

बेहतर है अहिंसा का अर्थशास्त्र

डॉ. दिलीप धींग

साधन-साध्य की शुचिता

आगम का अर्थतन्त्र अहिंसा का अर्थतन्त्र है। वह संयम से अनुप्राणित और अनेकान्त से अनुवेष्टित है। अपरिग्रह उसकी आधारशिला है। वह इतना मानवीय है कि मानव तो क्या, मानवेतर प्राणियों के प्रति भी उसकी पूरी संवेदना है। समाजशास्त्र की भाँति अर्थशास्त्र की भी मुख्य इकाई व्यक्ति है, जिसे आधुनिक अर्थशास्त्र में उपभोक्ता नाम दिया गया है। आगमिक अर्थशास्त्र का सबसे बड़ा तथ्य व्यक्ति का परिष्कार और साधन-शुद्धि है। व्यक्ति के अन्तर्गत उत्पादक, व्यापारी और उपभोक्ता तीनों आ जाते हैं। उत्पादक और व्यापारी भी उपभोक्ता होते हैं, परन्तु उत्पादक और व्यापारी अथवा वितरक के रूप में उनकी प्रामाणिक भूमिका की अपेक्षा रहती है। इसलिए व्यक्ति-शुद्धि के साथ साधन-शुद्धि स्वतः जुड़ी हुई है। उत्पादन के सम्बन्ध में भगवान् महावीर के तीन सूत्र महत्त्वपूर्ण हैं-

१.अहिंसप्पयाणे : हिंसक शस्त्रों का निर्माण नहीं करना,

२.असंजुत्ताहिकरणे : हथियारों का संयोजन नहीं करना, और

३.अपावकम्मोवदेसे : पापकर्म की, हिंसा की शिक्षा नहीं देना।

हथियार भय और हिंसा के अर्थतन्त्र का साथी होता है। विश्व में प्रति मिनिट ८ करोड़ ४० लाख रुपये हथियारों के उत्पादन पर यानी हिंसा पर खर्च किये जा रहे हैं।आज हिंसा पर हो रहे खर्च को विकास के सन्दर्भो में योजित करने की आवश्यकता है।

यह जान लेना चाहिए कि जैन आगमों में वर्णित अहिंसक जीवन-शैली मानव, मानवता और दुनिया को बचाने के लिए बुनियादी समाधान प्रस्तुत करती है। वह एक मानवीय अर्थशास्त्र प्रस्तुत करती है, जो पूंजीवाद और समाजवाद, दोनों के दोषों से मुक्त है। पूंजीवादी, साम्यवादी और अहिंसा के अर्थशास्त्र में मौलिक अन्तर है, जिसे निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा रहा है-

१. **दर्शन** : पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों भौतिकवाद पर खड़े हैं, जबकि

अहिंसा का अर्थशास्त्र एकीकृत मानवीयता पर आधारित है।

२. **उद्देश्य** : पूंजीवाद में वैयक्तिक अमीरी बढ़ती है और साम्यवाद में राज्य की शक्ति; जबकि अहिंसा के अर्थशास्त्र में पुरुषार्थ चतुष्टय की सन्तुलित साधना की जाती है।

३. **मानव का स्वरूप** : पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों मानव को आर्थिक प्राणी मानते हैं। अहिंसा का अर्थशास्त्र मानव को महज आर्थिक प्राणी नहीं मानता, अपितु उसे शरीर, बुद्धि, मन और आत्मा की अनन्त सम्भावनाओं की इकाई मानता है।

४. **जीवन शैली** : पूंजीवाद में विलासिता का जीवन है और साम्यवाद में यन्त्रवत् जीवन; जबकि अहिंसा के अर्थशास्त्र में नैसर्गिक, आध्यात्मिक और मानवीय जीवन है।

५. **गतिविधियाँ और नियन्त्रण** : पूंजीवाद में असीमित आजादी है और साम्यवाद में राज्य सभी स्वतन्त्रताओं को छीन लेना चाहता है; जबकि अहिंसा के अर्थशास्त्र में आत्मानुशासन है, इसलिए सहज स्वतन्त्रता है।

६. **सम्पत्ति स्वामित्व** : पूंजीवाद में असीमित स्वामित्व है और साम्यवाद में व्यक्तिगत स्वामित्व का अभाव है। अहिंसा के अर्थशास्त्र में आवश्यक स्वामित्व स्वीकार्य है। अपरिग्रह अथवा न्यास-सिद्धान्त स्वामित्व को नियमित करता है।

७. **कार्य-प्रणाली** : पूंजीवाद शोषण पर आधारित है और साम्यवाद में राज्य व्यक्ति की योग्यताओं का धीमा/अदृश्य शोषण करता है। अहिंसा का अर्थशास्त्र संयम और त्याग पर अवस्थित है।

८. **प्रकृति** : पूंजीवाद में व्यक्तिवाद है और साम्यवाद में राज्य का अवांछनीय नियन्त्रण; जबकि अहिंसा के अर्थशास्त्र में सह-अस्तित्व और सामाजिकता की भावना है।

९. **ढंग** : पूंजीवाद में अनावश्यक स्पर्धा और होड़ा-होड़ी है और साम्यवाद में राज्य की शक्ति का कठोर अंकुश है। अहिंसा के अर्थशास्त्र में सहकारिता है।

१०. **शासन** : पूंजीवाद में बहुदलीय प्रजातन्त्र और साम्यवाद में एकतन्त्रवाद है। अहिंसा के अर्थशास्त्र में कर्तव्य आधारित शासन है।

११. **श्रम का फल** : पूंजीवाद में पूंजीपति अधिकांश हड़प जाते हैं और साम्यवाद में राज्य सर्वशक्तिमान होता है। अहिंसा का अर्थशास्त्र सामाजिकता की भावना और सम-वितरण पर आधारित है।

१२. **रोजगार** : पूंजीवाद में रोजगार प्रस्थिति और रिक्तता पर निर्भर है और साम्यवाद में वह राज्य के हाथों में होता है। अहिंसा का अर्थशास्त्र योग्यता को प्रधानता देता है।

१३. **विचार प्रक्रिया** : पूंजीवाद और साम्यवाद में स्वतन्त्र वैचारिकता का हनन है, जबकि अहिंसा का अर्थशास्त्र अनेकान्त को महत्त्व देता है।

इस प्रकार अहिंसा का अर्थशास्त्र पूंजीवाद और साम्यवाद के दोषों का निराकरण करता है। जैन आगम-ग्रन्थों में वर्णित आचार-दर्शन और सिद्धान्त अर्थशास्त्रीय महत्त्व के निम्न बिन्दुओं पर बल देते हैं-

❋ अहिंसा, शाकाहार, संयम, सादगी और मितव्ययिता।

❋ अपरिग्रह, असंग्रह, अनासक्ति और त्याग।

❋ वैचारिक सहिष्णुता और विश्व-शान्ति के लिए अनेकान्त का दृष्टिकोण।

❋ स्वावलम्बन, पुरुषार्थ और कर्त्तव्यपरायणता।

❋ सह-अस्तित्वपूर्ण व्यवस्था।

❋ प्रकृति और संस्कृति का संरक्षण।

❋ सामाजिक व मानवीय एकता।

❋ पारस्परिक अनुग्रह और सहयोग भाव।

❋ संसार को बाजार नहीं, परिवार मानना।

❋ साधन व साध्य की शुचिता पर बल।

❋ व्यवसाय में प्रामाणिकता और ईमानदारी।

❋ विकेन्द्रीय अर्थव्यवस्था।

❋ केन्द्र में अर्थ नहीं; मनुष्य होता है।

आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव सभ्यता और संस्कृति के अभिनव द्वार खोल दिये हैं। संचार क्रान्ति ने तो मनुष्य की जीवन चर्या और विश्व की व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन कर दिये हैं। उसके पास सुख के साधन तो

प्रचुर हैं, परन्तु शान्ति की साधनाएँ कम। वह एक जैविक इकाई है और उसकी मूलभूत नैसर्गिक आवश्यकताएँ हैं। वह एक सामाजिक प्राणी है और उसकी सामाजिक आवश्यकताएँ भी हैं। अर्थशास्त्र मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने की विधियों और प्रविधियों का शास्त्र है। परन्तु उसकी अन्तहीन और गैर-वाजिब इच्छाओं ने अर्थशास्त्र को अनर्थकारी संहारक शस्त्र की भाँति बना दिया है। आगमिक जीवन शैली अर्थशास्त्र को शान्ति और समृद्धि का शास्त्र बनाती है। अहिंसा का अर्थशास्त्र नीतिशास्त्र के साथ संयोजित है। वह जीवन और जीवन की गुणवत्ता का समादर करता है। विश्व की स्थायी उन्नति और सुख-शान्ति के लिए अहिंसा के अर्थशास्त्र का कोई विकल्प नहीं है। भगवान् महावीर के ये शब्द आज अधिक प्रासंगिक हो गये हैं- 'अत्थि सत्थं परेण परं, नत्थि असत्थं परेण पर।' अर्थात् शस्त्र (हिंसा) तो एक-से-एक बढ़कर हैं, परन्तु, अशस्त्र (अहिंसा) से बढ़कर कुछ नहीं है।

५३-बी, डोरे नगर, उदयपुर-३१३००२ (राज.)

अकेला

श्री त्रिलोकचन्द जैन

बेटा पहली बार मुम्बई जा रहा था। उसे गाड़ी में बैठाकर पिताजी जब घर वापस आये तो पत्नी ने पूछा- "क्यों जी उदास क्यों हो, बेटे को बैठने की जगह तो मिल गई थी ना?" "हाँ मिल गई थी, पर भीड़ बहुत थी, पैर रखने को भी जगह नहीं थी। चिन्ता जगह की नहीं, इस बात की है कि बेटा पहली बार मुम्बई जा रहा है वह भी अकेला।" पत्नी बोली- "अकेला क्यों, आप ही तो बता रहे हैं कि गाड़ी में पैर रखने की भी जगह न थी।" भीड़ तो बहुत थी पर साथी कोई नहीं था।

भीड़ तो मात्र संयोग की सूचक है साथ की नहीं। जब संयोग में सहयोग अपनापन जुड़ जाता है तो साथ बन जाता है। किन्तु जब कोई अपना है ही नहीं, कोई किसी का सहयोग कर ही नहीं सकता। सब स्वकृत कर्मानुसार है तो साथ की बात ही क्या?

जगत् में संयोग है, साथ नहीं। संयोग से इंकार करना भी भूल है और साथ मानना भी भूल है। यद्यपि संयोग क्षणभंगुर है, अशरण है, असार है, परन्तु है अवश्य। किन्तु साथ तो बिल्कुल है ही नहीं।

-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः ४०)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(अजीव पर्याय)

श्री धर्मचन्द जैन

(गतांक में द्विस्थान पतित में होने वाली हानि-वृद्धि को उदाहरण सहित समझाया गया था। इस अंक में चतुःस्थान पतित व षट्स्थान पतित को समझाया जा रहा है।)

प्र.२७२ चतुःस्थान पतित में होने वाली असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि को उदाहरण से किस प्रकार समझा जा सकता है।

उत्तर माना कि १० संख्यात है, १०० असंख्यात है तथा १००० अनन्त है। एक पुद्गल १०००० गुण काला है, दूसरा ९९०० गुण काला है। दोनों में १०० का अन्तर है। १००, दस हजार का सौवां भाग है। सौ की संख्या को हमने असंख्यात माना है, अतः दोनों पुद्गलों की तुलना करने पर असंख्यात भाग हीन-असंख्यात भाग अधिक का स्थान बनेगा।

एक पुद्गल १०००० गुण काला है, दूसरा पुद्गल १०० गुण काला है। १०० से १०००० सौ गुणा अधिक है। सौ को हमने असंख्यात माना है, अतः दोनों पुद्गलों की तुलना करने पर असंख्यात गुण हीन-असंख्यात गुण अधिक का स्थान बनेगा।

जिन पुद्गलों में प्रदेश, स्थिति, अवगाहना, वर्णादि में संख्यात तथा असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि होती है उसे चतुःस्थान पतित कहते हैं।

प्र.२७३ पुद्गलों की आपस में तुलना करने पर अवगाहना व स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान बनते हैं?

उत्तर एक पुद्गल की दूसरे पुद्गल से आपस में तुलना करने पर अवगाहना

व स्थिति दोनों की अपेक्षा अधिकतम चार स्थान बनते हैं- १. संख्यात भाग हीन-संख्यात भाग अधिक २. संख्यात गुण हीन-संख्यात गुण अधिक ३. असंख्यात भाग हीन-असंख्यात भाग अधिक ४. असंख्यात गुण हीन-असंख्यात गुण अधिक। इन चारों को मिलाकर चतुःस्थान पतित कहते हैं।

प्र.२७४ अवगाहना की अपेक्षा से पुद्गलों की तुलना करने पर अधिकतम चतुःस्थान पतित ही हानि-वृद्धि क्यों होती है?

उत्तर सभी प्रकार के पुद्गल चाहे वे परमाणु हों, संख्यात-असंख्यात अथवा अनन्त प्रदेशी स्कन्ध हों, वे सभी लोक में ही होते हैं। अलोक में तो मात्र आकाश द्रव्य ही है। लोक असंख्यात प्रदेशी है, अर्थात् लोक में आकाश प्रदेश असंख्यात ही होते हैं अतः पुद्गलों की अधिकतम अवगाहना लोक के बराबर असंख्यात प्रदेशी ही होती है। पुद्गल की कम से कम अवगाहना एक आकाश प्रदेश की होती है। एक आकाश प्रदेश और असंख्यात आकाश प्रदेशों में असंख्यात गुणी तक ही हानि-वृद्धि हो पाती है, अनन्त गुणी तक नहीं। इसी कारण से अवगाहना की अपेक्षा से तुलना करने पर अधिकतम चतुःस्थान पतित ही हानि-वृद्धि हो पाती है। अलोक में अनन्त आकाश प्रदेश हैं। जहाँ अनन्त आकाश प्रदेश हों, वहीं अवगाहना अनन्त गुणी हो सकती है, किन्तु अलोक में पुद्गल द्रव्य नहीं होने के कारण पुद्गलों की अवगाहना में अनन्त गुणी हानि-वृद्धि हो ही नहीं पाती।

प्र.२७५ स्थिति की अपेक्षा से पुद्गलों की तुलना करने पर अधिकतम चतुःस्थान पतित (असंख्यात गुणी तक) ही हानि-वृद्धि क्यों होती है?

उत्तर परमाणु से लेकर संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेशी स्कन्ध, इन सभी पुद्गलों की स्थिति कम से कम एक समय की तथा अधिक से अधिक असंख्यात काल की (असंख्यात उत्सर्पिणी-असंख्यात अवसर्पिणी) होती है। अनन्त काल की स्थिति किसी भी पुद्गल की

नहीं होती। जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात काल में अधिकतम असंख्यात गुणी तक ही हानि-वृद्धि होती है। अनन्त काल की स्थिति नहीं हो पाने के कारण अनन्त गुणी हानि-वृद्धि नहीं हो पाती, इसीलिए स्थिति की अपेक्षा से अधिकतम चतुःस्थान पतित ही हानि-वृद्धि हो पाती है।

प्र.२७६ पुद्गलों में प्रदेश व वर्णादि की अपेक्षा से होने वाली अधिकतम अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि को उदाहरण से कैसे समझा जा सकता है?

उत्तर माना कि १००० अनन्त है। एक पुद्गल १०००० गुण काला है, दूसरा पुद्गल ९९९० गुण काला है। दोनों में १० का अन्तर है। १०, दस हजार का १००० वाँ भाग है। १००० को हमने अनन्त माना है, अतः दोनों पुद्गलों में तुलना करने पर अनन्त भाग हीन-अनन्त भाग अधिक का स्थान बनेगा।

एक पुद्गल १०००० गुण काला है, दूसरा पुद्गल १० गुण काला है। १० से १०००० हजार गुणा अधिक है। हजार को हमने अनन्त माना है, अतः दोनों पुद्गलों की तुलना करने पर अनन्त गुण हीन-अनन्त गुण अधिक का स्थान बनेगा।

जिन पुद्गलों में प्रदेश व वर्णादि की अपेक्षा संख्यात-असंख्यात तथा अनन्त गुणी तक की हानि-वृद्धि होती है, उसे षट्स्थान पतित कहते हैं।

प्र.२७७ पुद्गलों में प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि किस प्रकार घटित होती है?

उत्तर परमाणु स्वतन्त्र होने से अप्रदेशी होते हैं। दूसरे शब्दों में एक-एक प्रदेशी होते हैं। जितने परमाणुओं से मिलकर स्कन्ध बना है, वह उतना ही प्रदेशी स्कन्ध कहलाता है। संख्यात परमाणुओं के मिलने पर संख्यात प्रदेशी स्कन्ध असंख्यात परमाणुओं के मिलने पर असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तथा अनन्त परमाणुओं के मिलने पर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध बनता है। पुद्गल में प्रदेशों की अपेक्षा अनन्त गुणी

तक हानि-वृद्धि संभव हो पाने के कारण षट्स्थान पतित अर्थात् संख्यात, असंख्यात और अनन्त-गुण हीन अधिक तक के छहों स्थान बन जाते हैं।

प्र.२७८ वर्णादि की अपेक्षा से षट्स्थान पतित हानि-वृद्धि किस प्रकार घटित होती है?

उत्तर परमाणु से लेकर संख्यात-असंख्यात-अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक के सभी पुद्गल एक गुण काले से लेकर अनन्त गुण काले तक हो सकते हैं। अर्थात् सभी पुद्गलों में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि की अपेक्षा संख्यात-असंख्यात तथा अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि हो सकती है, इसी कारण से वर्णादि की अपेक्षा से तुलना करने पर पुद्गलों में षट् स्थान पतित हानि-वृद्धि होती है अर्थात् उपर्युक्त छहों स्थान बन जाते हैं।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि संख्यात गुणी हानि-वृद्धि वाले पुद्गल द्विस्थान पतित, असंख्यात गुणी तक हानि-वृद्धि वाले चतुःस्थान पतित तथा अनन्त गुणी तक हानि-वृद्धि वाले षट्स्थान पतित कहलाते हैं। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

जिनवाणी पर अभिमत

'जिनवाणी' पत्रिका आज जैन धर्म की उन्नति के नवीन आयाम स्थापित कर रही है। आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कारों की खुराक प्रदान करने में कामयाब साबित हो रही है। जिसके लिए 'जिनवाणी' की टीम के सम्माननीय सदस्य महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद। फरवरी ०८ के अंक में प्रबुद्ध लेखक उदयपुर के डॉ. दिलीप धींग जी का आलेख 'नये साल का इनाम' पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई, प्रेरणा मिली। जिनवाणी पत्रिका हमेशा जिनशासन की शान बढ़ाती रहे एवं इसके प्रबुद्ध लेखक बन्धु अपनी बेहतरीन रचनाओं से हम पाठकों को लाभान्वित करते रहें-यही शुभ भावना।

-सुनित कुमार जैन, अलीगढ़ (टोंक)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (८)

प्रश्न१४. अवधिज्ञान कैसे समुत्पन्न होता है?

उत्तर– शुभ अध्यवसायों से, मन के शुभ परिणामों से लेश्याओं की विशुद्धि होने से तथा अवधि ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम होने से रूपी पदार्थों को विषय करने वाला अवधिज्ञान उत्पन्न होता है।

दशाश्रुत स्कन्ध के अनुसार जो प्रतिमाधारी साधु बारहवीं प्रतिमा में मन की एकाग्रता को बनाये रखे तो उसके अवधिज्ञान उत्पन्न होता है। चित्त समाधि के परिणामस्वरूप भी अवधिज्ञान उत्पन्न होता है।

सव्व काम विरत्तस्स, खमओ भयभेरवं।
तओ से ओही भवइ, संजयस्स तवस्सिणो।।-दशाश्रुतस्कन्धसूत्र

सर्व काम भोगों से विरक्त, भीम भैरव परीषह-उपसर्गों को सहन करने वाले तपस्वी संयत को अवधिज्ञान, उत्पन्न होता है।

अवधिज्ञान वह अतीन्द्रिय ज्ञान है जिसके द्वारा साधक द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की एक मर्यादा या सीमा के साथ रूपी पदार्थों को जानता है। अवधि ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम जैसा मंद या तीव्र होता है तदनुसार अवधिज्ञान की व्यापकता होती है।

देवों और नैरयिकों को जन्म से ही भव प्रत्यय अवधिज्ञान होता है। अवधिज्ञानावरणीय कर्म पुद्गलों के क्षयोपशम से तथा निर्जरा मूलक अनुष्ठानों द्वारा गुण प्रत्यय अवधिज्ञान होता है, जो मनुष्य व तिर्यञ्च के होता है। पक्षियों की उड़ान शक्ति जन्म-सिद्ध है, किन्तु मनुष्य बिना वायुयान, जंघाचरण अथवा विद्याचरण लब्धि के गगन में गति नहीं कर सकता। अतः नरक एवं देव को जन्म से तथा मनुष्य एवं तिर्यञ्च में क्षयोपशम से अवधिज्ञान होता है। तीर्थंकरों को जन्म से ही "नेरइय देव तित्थंकरा य ओहिस्स बाहिरा हुंति" अवधिज्ञान होता है।

प्रश्न१५. मंखलिपुत्र गोशालक और भगवान् महावीर स्वामी की धर्म-प्रज्ञप्ति में प्रमुख भेद क्या-क्या हैं?

उत्तर– मंखलिपुत्र गोशालक और भगवान् महावीर स्वामी की धर्म-प्रज्ञप्ति में कई भेद हैं। एक की धर्मप्रज्ञप्ति की आराधना मोक्ष के नजदीक ले जाने वाली है और एक की मिथ्या-भ्रम में डालने वाली है।

गोशालक	भगवान् महावीर
१. एकान्ततः नियतिवाद के प्रवर्तक	१. नियति के साथ काल,स्वभाव कर्म आदि ५ समवायों के प्रवर्तक
२. पुरुषार्थ का विरोध	२. पुरुषार्थ का सबल समर्थन
३. चमत्कार को नमस्कार	३. चमत्कार प्रयोग वर्जनीय, प्रयोगकर आलोचना न करने पर विराधक
४. ख्यातिप्राप्ति हेतु तप/चारित्र की पालना	४. आत्मा से कर्म-निर्जरा के लिए तप-चारित्राराधना,
५. अगर तुम मेरे मत को स्वीकार करोगे तो कुछ नहीं करते हुए भी शारीरिक मानसिक वेदनाओं से रहित हो जाओगे।	५. अगर सम्यक् पुरुषार्थ कर राग-द्वेष को गलाओगे तो कर्म-वेदन से रहित हो जाओगे।
६. एकान्तवादी	६. अनेकान्तवादी
७. असंयत	७. संयत
८. अचेलक	८. सचेलक/अचेलक
९. जीव का सुख-दुःख स्वयं का किया हुआ नहीं है।	९. सुख-दुःख स्वयं का किया हुआ है, "कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं"
१०.नियति ही सुख-दुःख का कर्त्ता	१०.जीव(आत्मा)स्वयं दुःख-सुख का कर्त्ता
११.उत्थान, कर्म, बल - वीर्य, पुरुषाकार-पराक्रम कुछ नहीं है।	११.प्रत्येक जीव में उत्थान, कर्म, बल वीर्य, पुरुषाकार-पराक्रम होता है।
१२.जीव के स्वयं के वश में कुछ नहीं	१२.जीव स्वयं अपना भाग्य-निर्माता है वह सिद्ध-स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।
१३.सभी पदार्थ नियति से उत्पन्न होते हैं	१३.सभी पदार्थ शाश्वत हैं।
१४.जिसे, जिससे,जिस समय, जिस रूप	१४.प्रायः निकाचित्त को छोड़कर

में होना होता है वह उससे उसी रूप में उत्पन्न होता है।	कर्मोदय पूर्व कोई भी परिस्थिति परिवर्तित की जा सकती है, निकाचित कर्मोदय से कई परिस्थितियाँ परिवर्तित नहीं की जा सकती।
१५.मात्र उदयकरण को मानते हैं।	१५.उदय के पहले जीव द्वारा कर्मों का बंध होता है उदय से पहले उन्हें उदीरणा, संक्रमण, अपवर्तन, स्थितिघात, रस-घात आदि करण लागू किये जा सकते हैं।
१६.जीव को शुद्ध-दशा स्वतः प्राप्त होती है।	१६.शुद्ध-दशा सम्यक्त्व, संयम, अयोगित्व, स्थितियों द्वारा संभव।
१७.व्यक्तियों का उत्थान-पतन नियति से	१७.उत्थान-पतन में पुरुषार्थ एवं नियति दोनों कारण हैं।
१८.व्रत-प्रत्याख्यान का कोई महत्त्व प्रतिपादित नहीं।	१८.व्रत-नियम, संवर, त्याग-प्रत्याख्यान आदि ग्रहण करने का उपदेश।

इस तरह मंखली पुत्र गोशालक की धर्म-प्रज्ञप्ति अज्ञान के घोर अन्धकार में ले जाकर प्रमाद तथा आलस्य का काला चश्मा पहनाकर जीव को जड़ता से भूषित कर मोक्ष के स्वप्न दिखाती है। जबकि भगवान् महावीर की धर्म-प्रज्ञप्ति सुप्त को जागृत कर, जागृत को सत्कर्म में प्रवृत्त कर अज्ञान के अंधेपन को दूरकर सम्यक् ज्ञान के चक्षु प्रदान कर, पुरुषार्थ की अंगुली पकड़, मोक्ष तक की सीढ़ियाँ पार करवाती है। (क्रमशः)

Fame is vapour, popularity an accident, riches take wings, only one thing endures and that is character.

❀ ❀ ❀

Look not mournfully to the past. It comes not back again. Wisely improve the present. It is thine, go forth.

❀ ❀ ❀

Wisdom is knowing what to do next, skill is knowing how to do it, and virtue is doing it.

जीवन-व्यवहार

परिग्रह : एक भयंकर ग्रह

श्री स्वरूपचन्द बाफना

जैनधर्म कोई काल्पनिक धर्म नहीं, अपितु जीवन की सच्चाई से जुड़ा हुआ धर्म है। यह मानवमात्र का कल्याणकारी धर्म है। जीवन को दुःखमुक्त बनाने तथा अनन्त अव्याबाध सुख का अनुभव कराने वाला धर्म है। हम पुण्यशाली हैं कि हमें इस धर्म के श्रवण का अवसर मिला।

जैन धर्म-पालन के पाँच प्रमुख अंग हैं- १. अहिंसा २. सत्य ३. अचौर्य ४. ब्रह्मचर्य और ५. अपरिग्रह। इनका पूर्णपालन श्रमण-श्रमणी करते हैं तथा अणुव्रत रूप में पालन हम गृहस्थ भी कर सकते हैं।

प्राणातिपात-विरमण, मृषावाद-विरमण, अदत्तादान-विरमण, मैथुन-विरमण एवं परिग्रह का परिमाण करके जीवन को सुन्दर बनाया जा सकता है।

यहाँ परिग्रह के परिमाण रूप पाँचवें अणुव्रत की उपयोगिता पर विचार करना है। हम यह जानते हुए भी कि परिग्रह दुःख का कारण है, यह विभिन्न पापों का मूल है, हम परिग्रह पर लगाम क्यों नहीं लगा पाते? परिग्रह को अठारह पापों में पाँचवाँ पाप कहा गया है। परिग्रह पाप है, इसमें कोई सन्देह नहीं, किन्तु जब इसकी प्राप्ति को पुण्य का फल समझ लेते हैं तो भ्रान्ति उत्पन्न हो जाती है तथा हम अधिकाधिक परिग्रह या संग्रह में लग जाते हैं।

परिग्रह के दो रूप हैं। एक तो मूर्च्छा या आसक्ति को परिग्रह कहा गया है, जो परिग्रह का वास्तविक रूप है। इसे भाव परिग्रह भी कहा गया है। परिग्रह का दूसरा रूप है धन, वस्तु, द्विपद, चतुष्पद आदि पर स्वामित्व एवं उनका संचय। यह द्रव्य परिग्रह अथवा बाह्य परिग्रह है। प्रायः भाव परिग्रह के साथ द्रव्य परिग्रह का घनिष्ठ सम्बन्ध है। मन में परिग्रह की भावना होने पर ही कोई बाह्य परिग्रह रख सकता है, अन्यथा उसे परिग्रह कम करने में ही सुख का अनुभव होगा।

मूर्च्छा या आसक्तिभाव रूप जो परिग्रह है वह हमारे सद्गुणों का ह्रास करता है। यदि आत्मा इस आसक्ति भाव के बंधन से मुक्त होती है तो द्रव्य परिग्रह के बंधन से भी अपने आप मुक्त हो सकती है। यदि हम इस मूर्च्छाभाव को प्रत्येक

पदार्थ से हटायेंगे तो हल्के हो जायेंगे और हम शान्ति एवं आनन्द का अनुभव कर सकेंगे।

सभी पापों का मूल परिग्रह है। जब तक हम इसे नियन्त्रण में नहीं रखेंगे तब तक अन्य पाप नहीं घटेंगे। भूमण्डलीकरण के युग में जो नई आर्थिक नीतियाँ इस भारतवर्ष में पिछले १५-२० वर्षों में लागू की गई हैं, उनसे हम सबकी संग्रहखोरी की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ी है। छोटे से छोटे आदमी से लेकर बड़े उद्योगपति एवं नेता भी इस संग्रहखोरी में तल्लीन हैं।

जब द्रव्य परिग्रह रहेगा तो आसक्ति भाव भी बढ़ेगा, अन्यथा इस पर लगाम लग सकती है। सूर्य, शनि, मंगल वगैरह नवग्रह से भी भयंकर ग्रह परिग्रह का ग्रह है, जिसने हम सभी मानवों को पागल बना दिया है। बाह्य परिग्रह में आसक्ति भाव तो विशेष पागल बना देता है।

बाह्य परिग्रह के प्रति मूर्च्छाभाव से हम विभिन्न तरह के क्रूर व नीच काम भी कर बैठते हैं। हम संग्रह की प्रवृत्ति में इतने तल्लीन हैं कि हमें अपने पुत्र के लिए, पौत्र के लिए और यहाँ तक कि आने वाली पीढ़ियों के लिए धन एकत्रित करना है। हमें रुकने के लिए कहने वाला कोई नहीं है।

कभी-कभी हमें एक-दो ऐसे उदाहरण भी समाज में मिलते हैं जिन्होंने परिग्रह की मर्यादा के साथ बगैर आसक्ति भाव के जीवन जीया है। ऐसे ही एक महानुभाव सुश्रावक नानचन्द भाई जवेरचन्द भाई शाह सूरत में हुए। जो प्रसिद्ध मैसर्स नानकचन्द जवेरचन्द शाह ज्वैलर्स के मालिक थे। उनसे मेरा मिलना प्रथम बार करीब १७-१८ वर्ष पहले सूरत में ही हुआ। मेरे किसी क्लाइन्ट के ज्वैलरी का वेल्यूएशन करवाना था, उन्हें मैं अपने साथ ले गया, उन्होंने वहाँ वेल्यूएशन किया और एक पैसा भी चार्ज नहीं किया। जिज्ञासावश मैंने उन्हें पूछा तो प्रत्युत्तर में कहा कि मेरे परिग्रह की मर्यादा की हुई है और जहाँ कहीं भी वेल्यूएशन के लिए जाता हूँ वहाँ पानी के अलावा कुछ नहीं लेता।

करीब दस वर्ष पहले आयकर विभाग ने वी डी आई एस स्कीम घोषित की। मैसर्स नानकचन्द जवेरचन्द ज्वैलर्स जो एप्रुव्ड वेल्यूअर थे, ने हजारों वेल्यूएशन सर्टिफिकेट निःशुल्क तैयार करके दिये। वे चाहते तो १०-१५ लाख रुपये कमा सकते थे, कोई गली नहीं निकाली। जैन समाज में से ही भामाशाह,

झगडू शाह, वस्तुपाल, तेजपाल जैसे श्रावक हुए हैं, यदि उनमें असीमित परिग्रह की वृत्ति होती तो क्या जिस श्रद्धा से हम उन्हें याद करते हैं, क्या करते?

मैं तीन अजैनों का भी जिक्र करना चाहूँगा। बिल गेट्स माइक्रोसोफ्ट कम्पनी के मालिक हैं। वे वर्ष में करोड़ों डॉलर का दान हर वर्ष करते हैं। जेकी चैन ने भी अपनी सम्पत्ति का ५० प्रतिशत दान किया है। अभी कुछ समय पहले आसक्ति भाव से हटने का एक अन्य उदाहरण सामने आया। वह था वारेन बफेट का। उन्होंने अपनी कुल सम्पत्ति का ८५ प्रतिशत दान बिल गेट्स के फाउण्डेशन को दिया। उन्होंने स्वयं या स्वयं के परिवार के नाम से कोई फाउण्डेशन नहीं बनाया, अपने मित्र बिल गेट्स के फाउण्डेशन को धनराशि प्रदान करते हुए कहा कि बिल गेट्स अभी ५२ साल के हैं और मैं ७५ साल का, बिल गेट्स इसको ज्यादा अच्छी तरह मैनेज करेंगे।

दूसरी ओर कभी-कभी देखने में आता है कि परिग्रह में आसक्त होकर हमारे जैन अग्रगण्य श्रावक ६०-७० वर्ष की अवस्था होने के बावजूद नये-नये प्रोजेक्ट डालते हैं। जबकि हमें अपरिग्रह के बारे में बचपन से सिखाया जाता है। हमें सोचना चाहिए कि हम ६०-७० वर्ष पार कर चुके हैं, हम बोनस की जिन्दगी जी रहे हैं। मृत्यु के एक पल का भी ठिकाना नहीं है। हमारे पास अथाह सम्पत्ति है। हम परिग्रह में आसक्ति कम करें और जितनी सम्पत्ति जोड़ी है, स्वयं ने पुरुषार्थ से कमाई है। इसका एक निश्चित प्रतिशत समाज को दें बगैर किसी शर्त के। इस तरह हम परिग्रह की आसक्ति से भी छूट सकेंगे।

हमारी दशा तो दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है। इस छोटी सी जिन्दगी में हम ज्यादा से ज्यादा जंजाल फैलाने में व्यस्त हैं। ज्यादा जंजाल बढ़ने से पाप भी बढ़ने वाले हैं और यदि हम जंजाल कम करके परिग्रह से आसक्ति हटायेंगे तो पाप भी कम हो जायेंगे। बाह्य वस्तुएँ बुरी नहीं है, किन्तु उनमें मूर्च्छा होना, आसक्ति होना बुरा है। प्रायः देखा जाता है कि हमारे प्रबुद्ध श्रावक समाज को योगदान देते हैं, लेकिन वे समय-समय पर समाज को जतलाते भी हैं; उन्हें बिना प्रतिफल की इच्छा से खुले दिल से सहयोग देना चाहिए, तभी उनकी आसक्ति कम होगी।

दूसरी ओर हमारी आसक्ति तो इतनी बढ़ी हुई है कि पुराने कपड़ों को भी गरीबों को न देकर बदले में बर्तन व बाल्टी वगैरह लेने की भावना रखते हैं। हमारे

घरों में फालतू की इतनी चीजें रहती हैं जिनका उपयोग जरूरतमन्दों को देकर किया जा सकता है। पैसे की गहरी आसक्ति के कारण वृद्धजन की सेवा-शुश्रूषा में भी आवश्यक खर्च नहीं करते।

यदि हम दैनिक जीवन में हमारी शुरुआत आसक्ति हटाने की इन छोटी-छोटी चीजों से करेंगे तो ही हम बड़े रूप से परिग्रह से आसक्ति हटा सकेंगे।

एक जमाना था लोग दान देकर शिक्षण संस्थाएँ खोलते थे और आज शिक्षा से ही पैसे कमाकर संग्रह करना शुरू हो गया है। अचम्भा तो तब होता है जब हमारे ही जैन समाज के अति सम्पन्न श्रावक शिक्षण संस्थाएँ खोलते हैं और स्वयं लोगों से बच्चों के प्रवेश के लिए डोनेशन मांगते हैं, ऐसा लगता है कि श्रीमंत लोग भी अब भिखारी हो गये हैं।

सारांश में हमें यह समझना चाहिए कि परिग्रह बढ़ाना पाप है, पुण्य नहीं है। आसक्ति-मूर्च्छा पाप का पोषण करने वाले मित्र हैं। हमें आज से ही इस आसक्ति को कम करने में लग जाना चाहिए। यदि हमें जीवन में शान्ति प्राप्त करनी है तो हमें बाह्य परिग्रह से आसक्ति हटानी ही होगी एवं बाह्य परिग्रह का भी परिमाण करना होगा।

-ए ६१४, इण्डिया टेक्सटाइल मार्केट, चौथी मंजिल, रिंग रोड, सूरत (गुजरात)

सामायिक की महिमा

श्री लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद

- सामायिक की आदत एक इबादत है।
- सामायिक एक ऐसी पतवार है जो जिन्दगी की नाव को भवसागर के पार पहुँचा देती है।
- यदि हम जीवन के हर कोने को आलोकमय बनाना चाहते हैं तो सामायिक की शरण ग्रहण करनी चाहिए।
- जिन्दगी के हर पल के सदुपयोग की बुद्धि सामायिक करते रहने से प्राप्त होती है।
- सामायिक एक ऐसा कवच है जो हमको विषय-वासना से बचाता है।
- वर्तमान को सार्थक करने की कला सामायिक में विद्यमान है, क्योंकि वर्तमान अपना है।

युवा-स्तम्भ

बातें छोटी, बड़े काम की

प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन

- जिस तरह हम घर-दुकान व शरीर में सफाई-स्वच्छता को पंसन्द करते हैं, कचरा-धूल, मिट्टी व गन्दगी को पसन्द नहीं करते हैं। ठीक इसी प्रकार हमें अपने मन-मस्तिष्क को भी साफ-स्वच्छ रखना है। इस स्वच्छता के लिए आवश्यकता है ईर्ष्या-द्वेष और निन्दा-विकथा के कचरे से अपना ध्यान हटाने की। गुणग्राही, गुण अनुमोदक व आत्मार्थी साधक बनने की। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो स्वयं एवं औरों के आत्मिक सुख-शांति में अभिवृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर पाते हैं। जरूरत है चिन्तन-मनन एवं जीवन की सार्थकता के लिए गम्भीरता की।

- जिस तरह बासी-सड़ी रोटी, गंदा पानी, बदबूदार सब्जी आदि दूषित पदार्थ खाने-पीने की हमारी इच्छा नहीं होती है। अच्छी से अच्छी वस्तु हमारी पसंद होती है। ठीक इसी प्रकार हमें सदैव दूसरों में गुण, अच्छाइयाँ देखनी चाहिए, क्योंकि दूसरों की कमियों एवं बुराइयों को देखने का सीधा सा अर्थ है उन्हें अपने जीवन में आमंत्रण देना। वस्तुतः मानव की प्रकृति अनुकरणात्मक है अर्थात् हम जैसा देखते हैं, वैसा करते हैं और जैसा कार्य करते हैं वैसे बन जाते हैं। अतः दुर्लभ मानव जीवन की सार्थकता के लिए हमें सदैव गुणों की ओर अपना ध्यान लगाना है और गुणवान, पुण्यवान, भाग्यवान, आदर्श श्रमणोपासक बनना है।

- कांटों भरे पथ पर चलने की अपेक्षा हम व्यवस्थित सड़क पर चलना अधिक पसन्द करते हैं और सदैव काँटों, गड्ढों व दुर्घटनाओं से अपने आपको बचाने का प्रयास-पुरुषार्थ करते हैं। ठीक इसी तरह से जीवन के हर मोड़ व हर कदम पर दुर्गुण रूपी काँटे बिखरे पड़े हैं। हमें सद्गुण, सद्विचार रूपी सड़क पर चलते हुए सदैव शुभ चिन्तन रखना है, क्योंकि बुराई, दुर्गुण और ईर्ष्या-द्वेष के ये भयंकर काँटे हमें इस भव, परभव, भव-भव में दुःखी और अशांति देने वाले

हैं। अतः गुणग्राहकता ही जीवन का सार है, उसे हमें जीवन में अपनाना है।

- सामाजिक एकता, गुणग्राहकता, आत्मार्थीपन तथा सद्गुणों का पतन तब से शुरु हो जाता है जब से हम ईर्ष्या, निन्दा, विकथा व अवगुण देखने की प्रवृत्ति प्रारम्भ कर देते हैं। 'जिसके कर्म जिसके साथ, जो बाँधेगा वो भुगतेगा' की लोकोक्ति में विश्वास करके हमें अपनी आत्मा को व्यर्थ कर्मों के बन्धन से बचाना है। वस्तुतः ईर्ष्या-द्वेष के इस दौर में हम सभी को दृढ़ता पूर्वक यही संकल्प करना है कि- हम कभी भी बुरा नहीं सोचेंगे, बुरा नहीं करेंगे और बुरा नहीं देखेंगे। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो निश्चित ही यह सारी सृष्टि और जन-समुदाय हमें सुन्दर दिखाई देने लगेंगे और हम जीवन में प्रतिक्षण आत्म-आनन्द को प्राप्त करते चले जायेंगे जो हम सभी के लिए परम आवश्यक है।

- हम जिस तरह का चश्मा अपनी आँखों पर लगाते हैं, हमें दुनिया उसी रंग की दिखाई देती है। यदि हम अवगुण, निन्दा, विकथा व द्वेष का चश्मा अपने दिलो-दिमाग पर लगाकर रखते हैं तो हमें यह दुनिया दुष्ट, बु[illegible]गारी, घृणा योग्य दिखाई देती है। जबकि गुणग्राहकता का चश्मा लगाने पर प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ व व्यवस्था से कुछ प्रेरक शिक्षा प्राप्त होती है और हम जीवन का वास्तविक विकास कर पाते हैं। आवश्यकता है अपना नजरिया बदलने की, क्योंकि सोच बदलने से ही भाग्य के सितारे बदल सकते हैं। हम पाप कर्मों के बंधन के स्थान पर पुण्यार्जन व निर्जरा का कार्य कर सकते हैं अर्थात् हमें नित्य प्रति चिन्तन यही करना है कि-

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो घट शोधूँ आपणों, मॉसु बुरो न कोय॥

हम सभी गुणग्राही, गुणानुमोदक, जिनशासन रक्षक, ज्ञानवान, विवेकवान आत्मार्थी साधक बनें....सद्गुणों को ग्रहण करके अपने जीवन का प्रतिपल, प्रतिक्षण विकास करते रहें....हमारे जीवन व्यवहारों से औरों की धर्म के प्रति श्रद्धा-आस्था बढ़े, हम समझदार, गम्भीर, जानकार, दूरदृष्टि साधक बनें, यही शुभ मंगलभावनाएँ हैं।

-कर सलाहकार, ए.के. जैन एण्ड कम्पनी, भवानीमण्डी (राज.)

धारावाहिक (क्रमशः४६)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- लोलुपता इस जन्म और पर-जन्म में दुःखों की परम्परा को उत्पन्न करती है। अतः रूप श्री! इन्द्रिय लोलुपता के कारण सिचानक का उदाहरण तुम पर ही घटित होता है। इस कथन के साथ जम्बूकुमार संसार की नश्वरता और क्षणिकता की विभिन्न सूक्तियों से सातवीं पत्नी रूप श्री को संयम हेतु प्रेरित करते हैं। अब आगे :-

देखो, संसार में कोई किसी का साथी नहीं है। इस बात को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करता हूँ, जिसे तुम सरलता से समझ सकोगी।

सुग्रीव नामक एक अतिशय सुंदर शहर था। जितशत्रु राजा का उस शहर पर शासन था। राजा जितशत्रु अत्यन्त नीतिनिष्ठ और धर्म-धुरीण था। राजा का एक पुत्र था और वह युवराज था। उसके तीन मित्र थे। एक मित्र रात-दिन युवराज के साथ रहता था। दूसरा मित्र दिन में उसके साथ रहता था और तीसरा कभी-कभी युवराज से मिलता और जब मिलता तब साधारण शिष्टाचार कर लेता था। युवराज रात-दिन पास रहने वाले पहले मित्र पर बहुत प्रेम करता था। उसे बड़े आराम से रखता था। जो वस्तु युवराज स्वयं खाता वही उस मित्र को खिलाता था। जो स्वयं पहनता वही अपने अभिन्न-हृदय मित्र को पहनाता था। दूसरे मित्र को भी वह आराम से रखता था, पर पहले मित्र की अपेक्षा उसमें कुछ कम स्नेह करता था।

राजा ने एक दिन विचार किया- "युवराज के तीन मित्र हैं। पर वह तीनों सच्चे हृदय से युवराज को चाहते हैं या ऊपरी हृदय से -सिर्फ स्वार्थ के लिए ? अथवा तीनों में से कौन कितना चाहता है? कौन युवराज के लिए कितना स्वार्थ त्याग कर सकता है ? इन सब बातों की परीक्षा अवश्य करनी चाहिए।" ऐसा विचार करके राजा ने दूसरे दिन सूर्योदय होते ही, अगले दिन युवराज को फाँसी की आज्ञा सुना दी।

एकाएक राजा की यह भीषण आज्ञा सुनकर राज्य भर में आश्चर्य फैल गया। प्रजा आंतक के मारे थर-थर काँपने लगी। कोई-कोई कहने लगे राजा को

यह क्या सूझा है कि वह अपने एक मात्र उत्तराधिकारी के प्राणों का ग्राहक बन गया है?

दूसरे ने कहा-''भाई, राजनीति इसी को कहते हैं। 'वारांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा' अर्थात् राजनीति वेश्या के समान अनेक रूप धारण करती रहती है। उसका बाहरी रूप कुछ और होता है, भीतरी रूप कुछ और होता है। हम लोग उसके असली रूप को नहीं पहचान सकते।''

तीसरे ने कहा- ''अपने इकलौते पुत्र को फाँसी पर चढ़ा देना भी कोई राजनीति हो सकती है क्या ? यह राजा का निरा पागलपन है। पता नहीं उसे क्या सूझा है ? मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि राजा को उन्माद रोग हो गया है।''

चौथा नागरिक बोला- ''उन्माद होने पर तो सभी कामों में उसकी झलक आनी चाहिए। सिर्फ युवराज को प्राण दण्ड देने के लिए ही तो उन्माद होते कभी देखा नहीं।''

पाँचवें को दूर की सूझी। बोला-''अजी, उन्माद नहीं है। मुझे तो यह प्रेम के अभिनय का परिणाम जान पड़ता है। किसी नई-नवेली पर राजा मोहित हो गया होगा। पर सुन्दरी अपनी सौत के लड़के को युवराज पद पर प्रतिष्ठित होते न देख सकी होगी। उसकी फरमाइश को पूरा करने के लिए ही शायद यह क्रूरतापूर्ण कृत्य किया जा रहा है।''

छठे महाशय अपनी राज-श्रद्धा को व्यक्त करते हुए बोले-आप लोगों की आलोचना सुनकर मुझे तो आश्चर्य होता है। महाराज जितशत्रु दीर्घकाल से राज्य कर रहे हैं। उनकी न्याय परायणता के विरुद्ध आज तक किसी को अंगुली उठाने का भी अवसर नहीं मिला है। आज क्या महाराज एकदम पतित हो गए होंगे ? कदापि नहीं ! ऐसा होना संभव नहीं। अवश्य ही युवराज ने गुरुतर अपराध किया होगा। युवराज के प्राणदण्ड के समाचार से हम लोगों को जब हार्दिक वेदना हो रही है तब स्वयं महाराज को- जिनकी आशाएँ उसी पर अवलम्बित हैं जो उनका जीवनाधार है-कितना कष्ट हुआ होगा? पर नीति की मर्यादा को अक्षुण्ण रखने के लिए उन्होंने अपनी छाती पर पत्थर रखकर यह आज्ञा दी होगी। हमें भूलकर भी महाराज के विरुद्ध आलोचना नहीं करनी चाहिए। उनके प्रति हार्दिक संवेदना व्यंक्त करना हमारा धर्म है। उन पर कामुकता का आरोप लगाना तो हद दर्जे की धृष्टता है। महाराज जितशत्रु धर्मात्मा हैं, स्नेहशील हैं, जितेन्द्रिय हैं, नीति निष्ठ हैं। अभी

देखिए, सारा रहस्य खुल जाएगा। उतावली न कीजिए।

राजा की आश्चर्यजनक आज्ञा का हाल जहाँ पहुँचता था, वहीं इस प्रकार की अनेक चर्चाएँ होने लगती थीं। पर असली मर्म का ज्ञान सिवाय राजा के, और किसी को न था। मंत्री भी राजा का आदेश सुनकर चकित रह गया था। वह तत्काल महाराज के समीप पहुँचा और अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहने लगा-

मंत्री- अन्नदाता! यह क्या सुन रहा हूँ। मैंने जो कुछ सुना है, क्या यह सही है पृथ्वीनाथ!

राजा- मंत्री जी! पागल तो नहीं हो गए हो? मुझे क्या पता कि आपने क्या सुना है? और वह सही है या गलत? कहो तो जान पड़े।

मंत्री- युवराज को.....?

राजा- हाँ, अच्छा समझ गया। युवराज को कल प्राणदण्ड दिया जाएगा, यह सर्वथा सत्य है।

मंत्री- क्यों महाराज! युवराज ने क्या कोई सत्गुरु अपराध किया है?

राजा- मंत्रीजी, सम्भल कर बात कीजिए। यह मेरा आदेश है।आपको मुझसे कैफियत तलब करने का अधिकार किसने दिया है? मैं कोई कारण नहीं बताना चाहता। मेरी आज्ञा पालनी होगी।

मंत्री-दीनानाथ! आपकी सर्वत्र कीर्ति फैली हुई है। आप के यश से संसार धवलित हो रहा है। यदि आप इस आदेश को नहीं बदलेंगे तो आपके उज्ज्वल यश में अमिट कालिमा लग जाएगी। पुत्र घातक का कलंकित सम्बोधन सुनकर आप किस प्रकार सहन करेंगे? मैं भी मुँह दिखाने योग्य न रह जाऊँगा।

राजा- मंत्री! मैंने सब सोच-समझ लिया है। मुझमें सब कुछ सहन करने का सामर्थ्य है। तुम जाओ और चुपचाप मेरी आज्ञा का पालन करवाओ।

मंत्री- पृथ्वीनाथ! ऐसा न होगा-कदापि न होगा। जब तक मैं मंत्री पद पर प्रतिष्ठित हूँ ,तब तक आप स्वयं भी अन्याय न कर पाएंगे। मैं आपकी इस अन्यायपूर्ण आज्ञा के विरुद्ध प्राणदण्ड को रोकूंगा। मंत्री सिर्फ पेट पालने के लिए नहीं है। वह न्याय का समर्थक है, मैं इस अन्याय का हरगिज समर्थन नहीं करूँगा।

राजा- मालूम होता है चींटी के पंख आए हैं। मंत्री, तेरा बड़ा साहस कि तू मेरी आज्ञा के विरुद्ध बर्ताव करेगा? जानते हो इसका क्या फल होगा? तुम्हें अपने

पद से हटना पड़ेगा। तुम्हारी सारी जायदाद जप्त कर ली जाएगी और जेलखाने में ठूँस दिए जाओगे। भली-भाँति अपने भविष्य को सोच लो।

मंत्री- महाराज ! यह जीवन और जायदाद जाने वाली है-एक न एक दिन चली ही जाएगी। सदा रहने वाली नहीं। ऐसी दशा में यदि अन्याय का प्रतिकार करने में यह जाए तो इसका जाना सफल हो जाएगा ! मैंने आपसे ही सीखा है कि न्याय की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान कर देना ही जीवन की सार्थकता है।

आज वह समय आ पहुँचा है। आप मुझे जेल में डालिए, फाँसी चढ़ाइए, जायदाद जप्त कीजिए, इच्छा हो सो कीजिए, पर मेरे मंत्री रहते यह अन्याय न हो सकेगा-न हो सकेगा, हर्गिज न हो सकेगा।

राजा- न्याय की दुहाई देने वाले राजद्रोही मंत्री ! जाओ अभी, इसी क्षण, मैं तुम्हें मंत्री पद से अपदस्थ करता हूँ। फिलहाल यही दण्ड तुम्हारे लिए पर्याप्त है।

मंत्री चुपचाप वहाँ से चल दिया। यद्यपि वह पदच्युत कर दिया गया था फिर भी संतोष का भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट अंकित था। आज वह पराजित होकर भी जीत गया था।

मंत्री के साथ राजा ने जो सलूक किया उससे आतंक और ज्यादा फैल गया। अब राजा के पास जाने का कोई साहस न कर सका। जिसने यह सब सुना वही दुःख भरे दिल को लेकर रह गया। किसी को कुछ नहीं सूझता था। अब यह निश्चित था कि कल युवराज को प्राणदण्ड मिल जाएगा।

युवराज का पहला रात-दिन साथ रहने वाला मित्र बड़ी असमंजस में पड़ा था। वह सोचने लगा-जब मंत्रीजी को भी अपने पद से च्युत होना पड़ा, तब मैं किस खेत की मूली हूँ ! मेरी सिफारिश कौन सुनेगा ? यही नहीं, अब तो युवराज के साथ रहने में अपना भी हित नहीं है। कोई बहाना करके यहाँ से टरक जाने में ही भला है। ऐसा सोचकर स्वार्थी साथी बोला-राजकुमार ! भुजिए और सेव तेल के बहुत ज्यादा खा लिए थे। आज वे पेट में उत्पात मचा रहे हैं। दस्त आरम्भ हो गए हैं। अतः मुझे घर जाना बहुत जरूरी है। आज्ञा दीजिए, जल्दी चलूँ।

युवराज ने कहा-"तुम सदा यहाँ निवृत्त होते हो। आज भी यहीं हो लो। इसके लिए घर जाने की क्या आवश्यकता है? तुझे पता ही है कि महाराज किसी कारण मुझ पर नाराज हो गए हैं, कल मुझे प्राणदण्ड मिलेगा। मैं सदा के लिए तुझसे

बिछुड़ जाऊँगा। जीवन भर हम-तुम साथ रहे हैं तो अब मृत्युकाल आने पर क्यों अलग होतें हो ? थोड़ा और ठहरो। फिर तो जाना ही होगा। तुम्हीं पर मेरा पूर्ण विश्वास है इस घोर आपत्ति काल में तुम मुझे छोड़कर कैसे जा सकते हो? प्रियमित्र! थोड़ी बातें और कर लो, फिर तो सब कुछ समाप्त होने जा रहा है।''

युवराज के इस प्रेमपूर्ण अनुनय युक्त कथन को सुनकर भी उस स्वार्थी मित्र ने वहाँ ठहरना स्वीकार न किया। वहाँ से वह अपनी जान बचाने के लिए भागा और घर आ पहुँचा।

(क्रमशः)

जिनवाणी के लेखकों को पुरस्कार योजना

जिनवाणी के प्रबुद्ध लेखकों को सूचित करते हुए प्रमोद है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा यह निश्चय किया गया है कि जनवरी २००८ से दिसम्बर २००८ के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ को निम्न वर्गानुसार पुरस्कृत किया जाएगा-

१. आध्यात्मिक/नैतिकशिक्षा परक लेख	५१००/-
२. शोधालेख/वैज्ञानिक लेख	५१००/-
३. आगमिक/तात्त्विक/जीवन-शैली से सम्बद्ध लेख	५१००/-
४. अंग्रेजी भाषा में श्रेष्ठ रचना	५१००/-
५. युवा-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	५१००/-
६. नारी-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ लेख	५१००/-
७. बाल-स्तम्भ में प्रकाशित श्रेष्ठ रचना	५१००/-
८. श्रेष्ठ कविता	३१००/-
९. संवाद स्तम्भ में श्रेष्ठ समाधान	३१००/-
१०.श्रेष्ठ प्रेरक-प्रसंग/क्षणिकाएँ/विचार	२१००/-
११.विविध	३१००/-

आवश्यक होने पर विभिन्न स्तम्भों में पुरस्कार योग्य लेखों में द्वितीय, तृतीय पुरस्कार भी दिए जा सकते हैं। उपर्युक्त पुरस्कारों की घोषणा उत्कृष्ट रचनाधर्मिता के संवर्धन एवं जिनवाणी के पाठकों हेतु प्रेरणाप्रद नूतन पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा की सहमति से की जा रही है। लेखकों की रचनाएँ मौलिक, स्पष्ट, प्रभावोत्पादक एवं पाठकों को दिशाबोध कराने वाली होनी चाहिए।

-प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

उपन्यास (५)

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- एक दिन मौका देखकर सौतेली माँ ने निर्मला ओर सोमदत्त को घर से बाहर निकाल दिया। वे दोनों भाई-बहिन नगर से निकलकर वन की ओर चले गये। दिनभर वन में चलते, फल तोड़कर पेट भरते, नदियों का पानी पीते और रात को वृक्षतले सो जाते। इस प्रकार हँसी-खुशी से दिन बिताते वे सघन वन की ओर बढते जा रहे थे। अब आगे....

एक दिन दोनों बहन-भाई घने जंगल में पहुँच गये। सामने ऊँची पहाड़ियाँ और सघन झाड़ियाँ थीं। एक ओर साफ मैदान था। मैदान में हरिणों का झुंड मस्ती से घास चर रहा था, चौकड़ियाँ भर रहा था।

सोमदत्त भी हरिणों की क्रीड़ा देखने रुक गया, बोला-दीदी, देखो ये हरिण कितनी आजादी से खेल रहे हैं, इन्हें कोई डर नहीं, कोई रोक-टोक नहीं, मन के मौजी उछाले मारते, कूदते-फाँदते चल रहे हैं। कितना सुखी जीवन है इनका ?

निर्मला ने सोमदत्त के सिर पर हाथ फिराकर कहा- हाँ भैया, घास-पात खाकर भी आजादी में जो आनन्द है वह कुछ अनूठा ही है।

तभी अचानक एक सिंह की दहाड़ सुनाई दी। झाड़ियों में हलचल होने लगी। मस्ती में दौड़ते हरिण चौकन्ने होकर इधर-उधर देखने लगे। दो क्षण दूर दूर तक देखा, फिर सिंह की पदचाप का आभास होते ही उसकी विपरीत दिशा में उछालें भरकर दौड़ पड़े। क्षणभर में सारे हरिण गायब हो गये।

सोमदत्त बोला-"दीदी ! यह क्या? अभी तो हरिण मस्ती में घास चर रहे थे और अब डरकर भाग रहे हैं।"

निर्मला ने कहा-"हाँ, भैया, तुमने सुनी नहीं सिंह की दहाड़, जरूर आस-पास कोई शेर है। उसकी आवाज आते ही हरिण डरकर अपनी जान बचाकर

भाग गये। कितने चतुर हैं ये ! खतरे का आभास पाते ही अपना बचाव करने जान मुट्ठी में लेकर भाग जाते हैं। हमें भी पग-पग पर सावधान रहना चाहिए। देख, चल अब हम भी भाग चलें। कहीं सिंह हमारी तरफ नहीं आ जाए। देख, यह पास में ही बड़ा पेड़ है न जामुन का, इस पर चढ़ जाते हैं वरना हमें भी डर हो सकता है। खतरा आने से पहले ही सावधान होने में समझदारी है।''

दोनों भाई-बहन जामुन के पेड़ पर चढ़ गये। थोड़ी देर बाद जब खतरा टल गया, हरिण वापस उधर घूमने लगे। तब दोनों बहन-भाई भी नीचे उतर गये और एक राजमार्ग पर आ गये। रास्ता बड़ा था। लग रहा था यह रास्ता जरूर किसी बड़े शहर को जाता है। चलते-चलते धूप बहुत तेज हो रही थी। सूर्य जैसे आग ही उगल रहा था। दोनों का चलना बहुत ही कठिन हो गया था। एक सघन वट वृक्ष के नीचे वे बैठ गये और मीठी-मीठी बातें करने लगे। तभी उन दोनों के कानों में घोड़े की टापों की आवाज पड़ी। सोमदत्त डर गया और बोला-

''बहन ! यह कौन आ रहा है? मुझे तो डर लगता है।''

निर्मला ने साहस बँधाया-

''डर मत भैया ! होगा कोई, हमें क्या ?''

''नहीं बहन तुमने कहा था, खतरा आने से पहले ही अपना बचाव कर लेना चाहिए।''

निर्मला ने निगाहें फैलाकर देखा तो घोड़े पर चढ़ा कोई एक व्यक्ति उधर ही आ रहा था। सोमदत्त डरकर काँपने लगा। निर्मला ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और कहा-''अरे, तू डर क्यों रहा है ? यह कोई शेर चीता थोड़े ही है। क्या ले लेगा हमारा। हमारे पास तो कुछ भी नहीं है।''

''नहीं दीदी ! मुझे तो शेर से नहीं, इन्सान से डर लगता है। हमें कोई पकड़कर ले जायेगा और फिर अपने घर ले जाकर उसी तरह काम करायेगा, मारेगा और घर के भीतर बंद कर देगा।''

''नहीं ! नही ! ऐसा क्यों करेगा ? वह कोई हमारा पिता थोड़े ही है जो माँ के कहने से हमें पकड़ने आ रहा हो।''

''कुछ भी हो दीदी, मुझे तो डर लग रहा है। चलो इस पेड़ पर चढ़कर हम पत्तों में छिप जायेंगे। इसे हम दिखाई नहीं देंगे तो पकड़ेगा कैसे ?''

दोनों भाई-बहन वट वृक्ष पर चढ़े और एक मोटी डाल पर बैठ गये। सघन पत्तों ने उन दोनों को छिपा लिया। उत्सुकता और सावधानी से देखने लगे कि घुड़सवार कौन है, कैसा है, क्या करता है ?

घुड़सवार था कंचनपुर का राजा रूपसेन। वह शिकार खेलने वन में आया था। एक हिरन वन में दिखाई दिया तो उसी के पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। हिरन अपने प्राण बचाने के लिए जी तोड़कर दौड़ा तो राजा उसके प्राण लेने के लिए। काफी देर तक दोनों दौड़ते रहे। लेकिन इस भाग-दौड़ में हिरन ऐसा छिपा कि राजा उसे लाख प्रयत्न करने पर भी खोज न सका। आखिर राजा रूपसेन निराश हो गया।

उसके पीछे की ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसे अपने शिकार के साथी सैनिक भी दिखाई नहीं दिये। वे बहुत पीछे रह गये थे।

राजा रूपसेन शिकार हाथ से निकल जाने से खीझ उठा था। ऊपर से चिलचिलाती धूप। उसका मस्तक गरम हो गया था। अब उसे विश्राम की जरूरत थी।

घना वृक्ष देखा तो घोड़ा रोक लिया। उसी की छाया में अपना उत्तरीय बिछाकर राजा लेट गया। मुकुट उतारकर अपने सिर के पास ही रख लिया। पसीने से तर-बतर शरीर को वन की ठंडी वायु और भी ठंडी लगी। उसे काफी राहत मिली। लेटते ही उसे नींद की झपकी आ गई।

जिस वृक्ष के नीचे राजा सोया हुआ था, उसी वृक्ष के ऊपर सोमदत्त और निर्मला एक डाल पर बैठे हुए राजा की गतिविधियों को देख रहे थे।

सोमदत्त ने राजा के मुकुट में लगे मयूर रत्नों को देखा तो उसका मन मचल गया। बच्चा ही तो था वह। अपनी बहन के कान में धीरे से उसने अपनी इच्छा बताई-

"दीदी ! इस आदमी के मुकुट में लगे रंग-बिरंगें काँच के टुकड़े मुझे बहुत अच्छे लग रहे हैं। कैसे चमक रहे हैं ये ?"

रत्न उसने कभी देखे नहीं थे, वह उनको काँच के टुकड़े समझ रहा था।

बहन निर्मला ने बताया-"सोमू ! ये काँच के टुकड़े नहीं हैं, रत्न हैं, हीरे हैं।"

''रत्न क्या होते हैं ?'' सोमू ने जिज्ञासा की।

निर्मला ने बताया-

''ये बहुत कीमती होते हैं।''

सोमू कुछ देर के लिए चुप तो हो गया, पर मुकुट में लगे मयूर के रत्नों को ललचाई आँखों से देखता ही रहा।

निर्मला ने उसे ललचाई आँखों से देखते हुए देखा तो बड़े प्यार से समझाया-

''सोमू! जो चीज अपनी नहीं, उस पर क्यों ललचा रहा है ?''

सोमदत्त बोला-

''दीदी! इसकी चमक मेरे मन में समा गई है। तू इसे चुपके से उठा ला। मैं पहनूँगा तो मैं भी राजा जैसा लगूँगा।''

निर्मला ने कानों पर हाथ रख लिए, बोली-

''सोमू! तू यह क्या कहता है? चोरी करना अपना काम नहीं है भैया! यह बहुत बड़ा पाप है। तू ऐसे बुरे विचार को अपने दिल से निकाल दे।''

निर्मला ने सोमदत्त को बहुत समझाया लेकिन वह माना ही नहीं। हठ पर अड़ गया। यहाँ तक कह दिया कि ''मैं तुझसे बोलूँगा नहीं। पेड़ से कूदकर अभी मर जाऊँगा।''

संसार में राजहठ, स्त्रीहठ और बालहठ प्रसिद्ध हैं। बालक भी जब किसी चीज को पाने की हठ पर अड़ जाता है तो उसे लिए बिना मानता ही नहीं। सोमू भी अभी बालक ही था। वह भी हठ पर अड़ गया। उसकी इस हठ के सामने निर्मला को झुकना पड़ा, न चाहते हुए भी चोरी जैसे निन्द्य कर्म को करने के लिए तैयार होना पड़ा।

मनुष्य चोरी करता ही राग के कारण है। कभी उसके स्वयं के मन-मस्तिष्क में किसी वस्तु के प्रति राग हो जाता है, ललचा जाता है तो कभी जिससे वह अत्यन्त मोह करता है, उसकी इच्छा पूरी करने के लिए चोरी करता है।

निर्मला को भी अपना भाई सोमदत्त प्राणों से भी अधिक प्यारा था। इस प्रेम के वशीभूत होकर ही वह उस रत्नजटित मुकुट को चुराने के लिए तैयार हो गई। भाई के प्रति मोह ने उसके विवेक पर परदा डाल दिया।

आवाज न हो और राजा की नींद न टूट जाये, इसलिए सावधानी बरतते हुए वह नीचे खिसकने लगी।

लेकिन कितनी भी सावधानी रखी जाये, खिसकने से कुछ आवाज तो होती ही है और फिर वन में मनुष्य कभी इतनी गहरी नींद नहीं सोता कि खिसकने की आवाज से जागे ही नहीं; क्योंकि वहाँ सर्प निकलने का भय सदा ही बना रहता है। इसलिए चौकन्ना रहना आवश्यक होता है।

खिसकने की आवाज कानों में पड़ी तो राजा की नींद टूट गई और जब तक निर्मला के पाँव जमीन पर टिके तब तक तो वह अचकचाकर बैठ गया, निर्मला एकदम सकुचा गई। इस स्थिति का सामना करने के लिए वह तैयार न थी, घबड़ा गई।

राजा ने निर्मला को देखा तो उसके सुन्दर रूप पर मुग्ध हो गया। उसकी समझ में न आया कि अचानक ही यह सुरूप सुन्दर कन्या कहाँ से प्रगट हो गई। उसने पूछा–

''तुम कौन हो ? वनदेवी हो या मानवी...।''

निर्मला ने सरल स्वर में कहा–

''मैं वनदेवी नहीं, एक अनाथकन्या हूँ, जिसका कोई आश्रय नहीं ...।''

निर्मला इतना ही कह सकी। तब तक राजा बोल उठा–

''मैं यहाँ का राजा हूँ। मेरे रहते तुम अनाथ कैसे रह सकती हो ? मेरा महल तुम्हारा आश्रय होगा।''

मुग्ध तो पहले से ही था राजा; लेकिन उसे अनाथ और आश्रयविहीन जानकर ललचा गया। समझ गया कि यह पके आम के समान अनायास मेरे हाथ लग गई है।

राजा घोड़े पर चढ़ा। लगाम थामी और निर्मला को उठाकर घोड़े पर बिठा लिया तथा घोड़े को ऐड़ लगा दी। सधा हुआ घोड़ा राजधानी की ओर भाग चला।

(क्रमशः)

आवश्यक सूचना

परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ८ के होली चातुर्मास पर, दिनांक १३ से २२ मार्च तक, पनवेल (महाराष्ट्र) में विराजने की संभावना है।

नारी-स्तम्भ

प्रेम से कीजिये अपने बालकों का लालन-पालन (३)

डॉ. भीकमचन्द प्रजापति

(३) बालक की भूल कैसे सुधारें : आपकी गंभीर भूल : जब बालक से कोई भूल हो जाती है तो प्रायः आप व परिवार के अन्य सदस्य उस पर क्रोध करते हैं, उसे कटु भाषा में डाँटते फटकारते हैं, कभी-कभी मारपीट भी कर देते हैं। ऐसा करना आपकी बहुत गंभीर गलती है।

परिणाम : इस भूल के निम्नलिखित परिणाम होंगे-

(क) बालक उस भूल को बार-बार करेगा। भूल मिटने की बजाय बढ़ जायेगी।

(ख) बालक में हीनता का भाव पैदा हो जायेगा। वह स्वभाव से डरपोक बन जायेगा। किसी के साथ बातचीत करने में उसे हिचकिचाहट होगी। वह दबा दबा रहने लगेगा। समूह के बीच आने में उसे घबराहट होगी।

(ग) उसकी मानसिक शक्तियाँ कुंठित हो जायेगी, मस्तिष्क का विकास अवरुद्ध हो जायेगा। फलस्वरूप वह पढ़ने लिखने में भी कमजोर रहेगा।

(घ) कालान्तर में वह क्रोधी स्वभाव का बन जायेगा।

(च) बड़ा होकर वह आपका विद्रोही बन जायेगा, आपको अपना शत्रु समझने लगेगा। फिर उससे आप अपने प्रति सद्भाव, सम्मान व सेवा की तो कल्पना भी न करें।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न : आपके हृदय में यह प्रश्न पैदा होगा कि फिर हम क्या करें ? क्या बालक की भूल को मौन रह कर चुपचाप सहन करते रहें, क्या उसे देखते रहें, उसे कुछ न कहें, उसे सजा नहीं दें? यदि हम उसे कुछ नहीं कहेंगे तो उसकी भूल का सुधार कैसे होगा? आपके इन प्रश्नों का उत्तर आगे दिया जा रहा है।

(क़) क्रोध न करें : आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि बालक की भूल पर आपको लेशमात्र भी क्रोध न आये। आपके मन में भी यह भावना न आये कि बालक बड़ा खराब है। इतनी बार समझा देने पर भी यह भूल कर रहा है। मन में इस प्रकार की भावना आना भी सूक्ष्म क्रोध है।

आप में क्रोध न करने की शक्ति तब आयेगी जब आप इस बात पर विचार करेंगे कि बालक ने जानबूझ कर भूल नहीं की है; उसकी भूल से जो नुकसान हुआ है, वह हो चुका है, क्रोध करने से उस नुकसान की पूर्ति नहीं होगी; बालक को अपनी भूल महसूस हो चुकी है; अपनी भूल के लिये उसने अपनी मूक भाषा में क्षमा भी माँग ली है और मन में यह निश्चय भी कर लिया है कि भविष्य में मैं दुबारा इस भूल को नहीं करूँगा। इन बातों को मानते ही आप शांत हो जायेंगे, आपको क्रोध नहीं आयेगा। उदाहरण लीजिये, बालक के हाथ से काच का ग्लास टूट जाता है। आप देखेंगे कि ग्लास टूटते ही बालक सहम जाता है, डर जाता है। वह सोचता है कि मुझसे गलती हो गई, अब माँ मुझे मारेगी। ऐसा सोचना ही गलती महसूस करना, क्षमा माँगना, उसे दुबारा न करने का निश्चय करना है। क्रोध करने से वह ग्लास वापस नहीं आयेगी। सोचिये, जिसने अपनी भूल महसूस करके क्षमा माँग ली, उस पर आप क्रोध करेंगे, उसे डांटेगे, दंड देंगे तो क्या उसके हृदय में आपके प्रति क्रोध व विद्रोह की भावना पैदा नहीं होगी ? अवश्य होगी। वह सोचेगा, आप भी गलतियाँ करते हैं; अपने को सजा नहीं देते और मुझे सजा दे रहे हैं। असमर्थता के कारण वह आपके क्रोध व सजा को सहन कर लेगा, पर उसके हृदय में आपके प्रति आदर का भाव कम हो जायेगा।

(ख) क्रोध का अभिनय करें : भीतर से एकदम शांत रहें। मन में सोचें कि बालक भूल कर रहा है। इसे सुधारना मेरा कर्त्तव्य है। यदि यह भूल नहीं मिटेगी तो इसका अहित होगा। ऐसा सोच कर अन्दर से शांत रहते हुए बाहरी क्रोध का शानदार अभिनय करें। इस अभिनय में आप बालक को डाँटिये, फटकारिये, सजा दीजिये। इस डाँट फटकार में आपके शांत हृदय के हितभाव रूपी अणु परमाणु झलकते रहेंगे और इस अभिनय के निम्नलिखित निश्चित परिमाण होंगे - बालक उस भूल को बार-बार नहीं करेगा, उसके हृदय में आपके प्रति प्रेम पैदा हो जायेगा। उसमें हीनता, दीनता, हिचकिचाहट, भय जैसे दोष पैदा नहीं होंगे, उसका मानसिक विकास तेज गति से होगा, बड़ा होकर वह अत्यन्त शांत स्वभाव का बनेगा ; आपके प्रति उसके हृदय में अपार सद्भाव सम्मान व प्रेम रहेगा।

४. बड़ी अवस्था में आपका कर्त्तव्य : नाजुक अवस्था : बारह वर्ष से उन्नीस बीस वर्ष की आयु बालक के जीवन की नाजुक अवस्था है। इस अवस्था में आपका बालक गलत संगति में पड़ कर बिगड़ सकता है, उसके व्यक्तित्व में विभिन्न दोष

पैदा हो सकते हैं और इसी अवस्था में वह गुणों का सम्पादन करता है। इसलिये इस समय बालक पर पूरा ध्यान देना आवश्यक है।

पारिवारिक सभा: अपने बालकों के विकास के लिये आप पारिवारिक सभा कीजिये। अपने परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर निम्नलिखित बातों पर चर्चा कीजिये –

(१) स्वास्थ्य : तन को स्वस्थ व मन को प्रसन्न रखने के उपाय बतायें। समय पर सोना, उठना, पढ़ना, शारीरिक श्रम, व्यायाम, स्नान, सफाई, भोजन, गलत खानपान से हानि आदि बातों की चर्चा करें। बड़ों को प्रणाम करना, सबका आदर करना, सत्य बोलना, मधुर बोलना आदि का महत्त्व बतायें।

(२)दोष चर्चा : वर्तमान युग के दोषों की चर्चा करें। बीड़ी, सिगरेट, शराब, विभिन्न प्रकार के मसाले, बाजारू खानपान, अखाद्य वस्तुओं का सेवन, नशीली चीजें आदि के बारे में बातचीत करके दोषों से सावधान रहने की प्रेरणा दें।

(३)शिक्षा एवं गुणों का महत्त्व : यह बतायें कि व्यक्ति के जीवन में उसके व्यवहार व गुणों का विशेष महत्त्व होता है। कड़ी मेहनत से गुण विकसित होते हैं। इस समय की कड़ी मेहनत पूरे जीवन को आनन्द से भर देगी।

(४) सामान्य शिष्टाचार : घर के बड़े छोटे सदस्यों, अतिथियों, रिश्तेदारों के साथ शिष्टाचार के व्यवहार की प्रेरणा दें। बातचीत का तरीका बतायें। स्वावलम्बी जीवन की शिक्षा दें।

(५) उनकी बात सुनें : अत्यन्त प्रेम व उत्साह से उनकी बातों, कठिनाइयों व इच्छाओं को सुनें, समझें और तदनुसार आवश्यक कार्यवाही करें।

बालक की बुराई को कैसे सुधारें : आपके सम्पूर्ण प्रयासों के बावजूद भी संयोगवश यदि बालक के व्यक्तित्व में कोई बुराई पैदा हो जाए, जैसे सिगरेट, शराब, नशीली वस्तुएँ, अखाद्य भोजन, विभिन्न प्रकार के बाजारू मसाले, गुटखा, पान पराग आदि का सेवन; चोरी करना, जुआ खेलना आदि, तो प्रेम से ही उसकी बुराई को मिटाने का प्रयास कीजिए। बुराई मिटाने की विधि के मुख्य अंग इस प्रकार हैं – अपने मन में उसे संसार का मेहमान मान कर मन से प्रणाम करें, मन में उसे बुरा न समझें, मन से क्रोध न करें, अपने हृदय में करुणा की भावना रखें, बुराई मिटाने के लिये निःस्वार्थ भाव से भगवान् से प्रार्थना करें; एकान्त में अत्यन्त प्रेम से समझायें;

परमात्मा पर छोड़कर निश्चिंत हो जाएँ और पूरी सेवा करते रहें। इन सब बिंदुओं का सारांश है – ममता तोड़ दें, प्रेम दें और परमात्मा पर छोड़ दें।

विवाह एवं गृहस्थ जीवन : आपने पुत्र-पुत्री का विवाह कर दिया, वे गृहस्थी बन गये। अब आप अपने पारिवारिक रिश्तों को प्रेम से निभाइये।

यदि आप अपने बालकों का लालन-पालन उपर्युक्त विधि से करेंगे तो आपके बालकों का व्यक्तित्व गुणों से ओत-प्रोत हो जायेगा; आप उनके मोह में आबद्ध नहीं होंगे, उनके साथ आपका प्रेम का सम्बन्ध बन जायेगा। यह आपके गृहस्थ जीवन की एक सफलता है।

-'परिवार में प्रसन्नता पूर्वक रहने की कला' पुस्तक से साभार, द्वारा निरंजन अग्रवाल, एफ १/७, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-१, नई दिल्ली-११००२०

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	:	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	प्रेमचन्द जैन
4. प्रकाशक का नाम	:	प्रेमचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम	:	डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	3 के 24-25, कुडी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)

मैं प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2008 हस्ताक्षर-प्रेमचन्द जैन

प्रकाशक

15 मार्च 2008
जिनवाणी 78

गुरु से बड़ा न कोई

डॉ. मंजुला बम्ब

'गुरु' एक छोटा-सा शब्द है जो अपने में काफी गहरा अर्थ समेटे हुए है। 'गु' यानी अन्धकार तथा 'रु' यानी प्रकाश अर्थात् जो हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए, अज्ञान से ज्ञान की ओर खींचे, असभ्य से सभ्य बनाऐ, बुराई से भलाई की तरफ ले चले, वही गुरु है।

गुरु की महिमा बड़ी निराली है। जिसने भी गुरु की महिमा को पहचाना है उसका उद्धार हुआ है। गुरु ही मनुष्य को उसके अन्दर का चेहरा दिखाता है, जो वास्तविक होता है। गुरु की वाणी ही भटके हुए राही को सही दिशा बताती है। बिना गुरु के यह जीवन उस नाव के समान हैं जो बिना पतवार के आगे बढ़ी जा रही है। जिस प्रकार बिना पतवार के नाव दिशा नहीं ढूँढ पाती और उसकी दशा निश्चित रूप से खराब होने वाली होती है, नदी के अथाह जल में डगमगा जाने का निश्चित खतरा रहता है उसी तरह बिना गुरु के मनुष्य जीवन दिशा भटक सकता है और दशा भी बिगाड़ लेता है।

गुरु वह शक्ति है जिसका दर्शन बंद आँखों से भी चारों प्रहर बना रहता है। गुरु वह है जिसका स्मरण मात्र ही सभी दुःखों से उपरत कर देता है। जिसके शब्दों में माधुर्य बरसता है और मौन में सुकून समाता है। गुरु बिना बोले बहुत कुछ कह जाते हैं। गुरु शिष्य से कुछ छीनता भी है तो भले के लिए। जैसे दर्जी कपड़ा काटता है नये वस्त्र बनाने के लिए, कंदोई दूध फाड़ता है मिष्ठान्न बनाने के लिए, कुम्भकार मिट्टी रोंदता है घड़ा बनाने के लिए, इसी तरह गुरु हमारे दुर्गणों का अवसान करता है गुणों को प्रकट करने के लिए। गुरु का हर निर्णय हर क्रिया-प्रक्रिया शिष्य की भलाई के लिए होती है। गुरु का हर इशारा, हर कदम महत्त्वपूर्ण होता है, उसमें कोई रहस्य, कोई राज, कोई सीख तो कोई भलाई छिपी होती है। बस जरूरत है तो उसे भीतर की आँख से देखने की।

गुरु का हृदय धरती की तरह विशाल है, कहीं कठोर तो कहीं संवेदनशील है। गुरु ऊर्जा का भंडार है। उसमें अखूट सहनशक्ति है। गुरु अपने ज्ञान और अपने अनुभव को स्थानान्तरित करने की, सौंपने की कला जानता है। गुरु सेतु है परमात्मा और आत्मा के बीच का। गुरु आशा की किरण है जिसके सहारे शिष्य पनपता है। गुरु डोर है माला की जिसके सहारे शिष्य प्रभु के गले से लिपटा रहता है। यही गुरुत्वाकर्षण शिष्य को गुरु से सदा बाँधे रखता है।

३, हेम-मंजुल, रामसिंह रोड, होटल मेरू पैलेस के पास, जयपुर

बाल-स्तम्भ

मृत्यु का विचार : बदले आचार

साध्वी निधि-कृपा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० अप्रेल २००८ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

महाराष्ट्र के एक महान संत हुए हैं-रामदास। वे हर घड़ी धर्मध्यान और प्रभु चर्चा में लीन रहते थे। मानव मात्र को उत्कर्ष का मार्ग समझाते थे और उस पर चलने की प्रेरणा देते थे। एक दिन एक जिज्ञासु उनके चरणों में आया और बोला- "महाराज! आप बड़े महान् हैं, कितनी अच्छी और सच्ची धर्म की बातें सुनाते हैं अतः मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि क्या आपके मन में कभी कोई विकार नहीं आता?"

संत रामदास ने उसकी जिज्ञासा को जानकर गंभीरतापूर्वक कहा- "सुनो भाई! तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर तो मैं बाद में दूँगा, परन्तु एक बात बता देना चाहता हूँ कि आज से ठीक एक महीने बाद इसी समय तुम्हारी मृत्यु होने वाली है।"

संत के इन वचनों को सुनकर उस आदमी के पैरों के नीचे से धरती खिसक गई। उसका शरीर थर-थर काँपने लगा। जैसे-तैसे वह घर पहुँचा। तत्काल उसने घर के सभी सदस्यों को बुलाया और आँखों में आँसू बहाते हुए संत की भविष्यवाणी बता दी। सुनकर घर के लोक स्तब्ध रह गए और यह सोचकर रोने लगे कि इतने महान् संत की बात झूठी तो नहीं हो सकती।

उस जिज्ञासु को मृत्यु के आगमन का इतना गहरा आघात लगा कि

वह बीमार हो गया। एक-एक दिन गिनने लगा। उसके सम्बन्धी, मित्र और मिलने वालें आकर उसे सान्त्वना देने लगे, किन्तु उसे चैन कहाँ। ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे थे, उसकी वेदना बढ़ती जा रही थी।

आखिर वह दिन आ ही गया। लोगों की भीड़ जमा हो गई। सब हैरान और दुःखी थे। इतने में स्वामी रामदास आ गए। भीड़ को देखकर उन्होंने पूछा- "वत्स! यह सब क्या हो रहा है?"

जिज्ञासु ने हताश होकर कहा- "महात्मन्! क्या आप भूल गए? आपने कहा था, एक महीने बाद मेरी मौत होने वाली है। आज उसका आखिरी दिन है और वह घड़ी अब आने ही वाली है।"

यह सुनकर संत रामदास मुस्कराये और मधुर स्वर में उन्होंने पूछा- "पहले यह बताओ कि इस एक महीने में तुम्हारे मन में कोई विकार पैदा हुआ?"

आश्चर्यचकित होकर जिज्ञासु ने कहा- "स्वामी जी! मेरे सामने तो हर घड़ी मौत खड़ी है फिर विकार कहाँ से आता?"

संत रामदास ने हँसकर कहा- "अरे पगले! तेरी मौत नहीं आने वाली; मैंने तो तुम्हारे सवाल का जवाब दिया था। जैसे तुम्हारे सामने एक महीने तक मौत खड़ी रही, वैसे ही मेरी हर धड़कन के साथ प्रभु का स्मरण रहता है।" ऐसा बोध-पाठ मिलने के बाद जिज्ञासु का जीवन ही बदल गया।

मृत्यु का सतत बोध हमें जीवन की गहराइयों में ले जाता है। दूसरे की मृत्यु से अपनी मृत्यु का बोध ले सकते हैं क्योंकि हर पीले पत्ते का टूटना हमारी मौत है; हर पानी के बुलबुले का फूटना हमारी मौत है; हर शाम सूरज का ढलना हमारी मौत है; हर चिता का जलना हमारी मौत है; हर अर्थी का उठना हमारी मौत है- अगर हम चिन्तन कर सकें तो...लेकिन आदमी बड़ा बेईमान है। यदि पड़ौस में किसी की मृत्यु हो जाए तो लोग कहते हैं बेचारा चला गया। इस लहजे में यह बात कही जाती है जैसे हम तो अमर रहने वाले हैं। इसलिए किसी की सड़क से गुजरती अर्थी को देखकर यह मत कहना कि बेचारा चल बसा, अपितु उस अर्थी को देखकर सोचना कि किसी दिन मेरी अर्थी भी इस तरह से गुजरेगी। उस अर्थी से अपनी मृत्यु का बोध ले लेना

क्योंकि दूसरे की मौत हमारे लिए एक चुनौती है।

प्रश्न

१. जिज्ञासु ने संत को महान् क्यों कहा?
२. दो-दो समानार्थक शब्द बताइए- चरण, मौत, परन्तु, वत्स।
३. 'पैरों तले जमीन खिसकना' मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिये।
४. संत के मन में विकार क्यों नहीं आते थे?
५. प्रकृति हमें किस प्रकार मृत्यु का बोध देती है?
६. 'अर्थी' शब्द के विभिन्न अर्थ बताइए। यहाँ अर्थी का क्या तात्पर्य है?

-'जीवन पाथेय' से संकलित

बाल-स्तम्भ [जनवरी-२००८] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-२००८ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अनाथ कौन?' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ३२ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २५ में से दिये गये हैं

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	नमन मेहता-पीपाड़ शहर	२३.५
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	आयुष कोटड़िया-जोधपुर	२३.२५
तृतीय पुरस्कार- १५०/-	पीयूष जारोली-बालोतरा	२३
सान्त्वना पुरस्कार- १००/-	कीर्तिका कोठारी-ब्यावर	२२.७५
	दर्शना जैन-जोधपुर	२२.७५
	परितोष जैन-सवाईमाधोपुर	२२.७५
	मीनाक्षी जैन-नागौर	२२.५
	रूपमाला छाजेड़-समदड़ी	२२.५

कहानी प्रतियोगिता

विद्वान् लेखकों एवं बाल रचनाकारों से निवेदन है कि वे जिनवाणी में प्रकाशनार्थ अच्छी कहानियाँ भिजवाएँ। श्रेष्ठ कहानी को ५१००/- रुपये के प्रथम पुरस्कार, ३१००/- के द्वितीय पुरस्कार एवं ११००/- के तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। कहानी आगमिक हो अथवा नैतिक जीवन मूल्यों की संवाहक होनी चाहिएं। कहानी की भाषा प्रभावी एवं अक्षर सुस्पष्ट होना चाहिए। श्रेष्ठ कहानियों को जिनवाणी में प्रकाशित किया जाएगा। **-सम्पादक**

संवाद (११)

जनवरी २००८ की जिनवाणी में पूछे गए निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर प्राप्त हुए हैं, जो यहाँ प्रकाशित हैं-

८. प्रश्न-''हमारा बच्चा इतना ढीठ हो गया है कि वह अपने मन की ही करता है एवं हमारा कहना नहीं मानता है। हम क्या करें?''

-करुणा (काल्पनिक नाम)

मिनी चेलावत, इन्दौर- बच्चों को संस्कारित करने का तरीका उनकी उम्र के अनुसार होना चाहिए। गीली मिट्टी आसानी से साँचे में ढाली जा सकती है उसी तरह कच्ची उम्र में बच्चों को प्यार-दुलार से सिखाया जाना चाहिए। जरूरत पड़ने पर सख्ती हो, किन्तु दिखावे भर के लिए। बड़ी उम्र के बच्चे भटकें तो वाणी से उपदेश देने के पहले आचरण प्रस्तुत करें। आचरण देखकर बच्चा सहज सीख सकता है। बच्चे के माता-पिता होने के साथ बच्चों के दोस्त बनने की कोशिश से भी बच्चों में भटकाव नहीं रहेगा।

विजय पटवा, पुणे- बच्चा ढीठ होता जा रहा है इस शिकायत का मूल कारण बच्चे को प्रदत्त संस्कार हैं। बच्चा हो या बड़ा वह अभिभावक की हर बात माने, ऐसी मानसिकता सबकी नहीं होती। हमें सकारात्मक दृष्टिकोण से यह देखना चाहिये कि हमारा बच्चा कितनी बातें मानता है। जो-जो बातें बच्चा मानता है उसे अन्य के सामने दोहराना चाहिये। परिणामस्वरूप जो बातें बच्चा नहीं मानता उन्हें भी मानने की मानसिकता बनेगी। प्रेमभाव से सभी सम्भव है। बच्चा ९० प्रतिशत बातें मानता है। बच्चे को कैडबरी देकर देखें, वह खायेगा। बच्चा बात मानता है। जिन बातों को बच्चा नहीं मानता उसे उदाहरण देकर नहीं मानने के दुष्परिणाम बताये जायें। जनरेशन गेप के कारण भी कुछ बातें बच्चा नहीं मानेगा, इस तथ्य को ध्यान में रखा जाय तो समस्या का सहज समाधान संभावित है।

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- ''बालक ढीठ हो गया है।'' यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। अतः इस समस्या के कारणों की खोज मन के स्तर पर की जानी चाहिये, न कि बाह्य रूप से भीतरी कारणों को जानने के लिए-

१.बच्चा किन-किन बातों पर जिद्द करता है।

२.किस व्यक्ति के सामने जिद्द करता है।

३.जिद्द पूरी होने पर क्या करता है।

४.जिद्द पूरी नहीं होने पर उसकी क्रियाओं में कैसा परिवर्तन आता है।

उपर्युक्त चार बातों पर आपको गम्भीरता से चिन्तन करना होगा। इन सब पर विचार करने के पश्चात् आप पायेंगे कि जहाँ बच्चे के (ईगो हर्ट) अंह को ठेस पहुँचती है वहाँ जिद्द करता है। एक समाधान तो यह है कि आप बच्चों से आदेशात्मक भाषा में व्यवहार न करें अपितु उसका सम्मान करते हुए बात कहें और उसके परिणाम से भी अवगत करायें। दूसरा समाधान है कि रात्रि में जब उसे नींद आने ही वाली हो अर्थात् अर्द्धनिद्रा में हो तब आप उसे प्यार से उन सुझावों को कहें जिसका परिवर्तन आप उसमें चाहते हैं। वे बातें सीधे उसके अवचेतन मन में चली जाती हैं। परिणामस्वरूप परिवर्तन स्वतः होने लगता है।

घेवरचन्द गोदीका, जयपुर– सबसे पहले तो बच्चों के कहे अनुसार गीत न गावें और उन्हें खर्चे हेतु अनापशनाप पैसा न देवें। जो उन्हें खाना हो वह घर में ही तैयार करें और उसकी प्रशंसा करते हुए खावें और खिलावें। खेल-खेल में ही उसे इतना प्यार दें कि वह आपका स्नेही बन जाय। सबसे अहम बात यह भी है कि बालक को संस्कार देने वाली स्कूल में ही भर्ती कराया जावे जहाँ उसकी मनोदशा के अनुसार शिक्षा-दीक्षा दी जाये। बालकों को बार-बार उपदेश देने से भी अक्सर बालक चिड़चिड़े और अवज्ञाकारी बन जाते हैं। बालकों को प्यार के साथ बोलना चाहिए और उन्हें प्यार से समाझना चाहिए। बालकों को घर में अकेला भी नहीं छोड़ना चाहिये, इससे बालक कुंठित हो जाता है।

नया प्रश्न

८. प्रश्न–''मेरे पास पर्याप्त सम्पत्ति है, परिवार की भी अनुकूलता है, शरीर भी ठीक है, समाज में भी प्रतिष्ठा है फिर भी मन में शान्ति नहीं रहती है। इसका क्या कारण है?''

-चिन्तन (काल्पनिक नाम)

इस प्रश्न के उत्तर हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि आगामी अंक में उत्तर सम्मिलित किए जा सकें।

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

वीतराग ध्यान की प्रक्रिया- *कन्हैयालाल लोढ़ा,* ***सम्पादक***-*संजय अग्रवाल* ***प्रकाशक***-*(१) प्राकृत भारती अकादमी, १३-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७, फोन-०१४१-२५२४८२७, (२) सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-३०२००३, फोन-०१४१-२५७५९९७ (३) शंकर फाउण्डेशन, मलाड को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लि., शॉप नं. ५, बिल्डिंग नं. ७, पोद्दार पार्क, पोद्दार रोड, मलाड (ईस्ट), मुम्बई-४०००९७* ***पृष्ठ*** *१६+१००* ***मूल्य*** *६५ रुपये, सन् २००७*

चित्त की एकाग्रता एवं शान्ति के लिए तथा राग-द्वेष आदि दोषों के उन्मूलन के लिए ध्यान आवश्यक है। आचारांग सूत्र एवं जैन योग के ग्रन्थों का आलम्बन लेकर ध्यानसाधक एवं प्रबुद्ध चिन्तक श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा ने 'वीतराग ध्यान प्रक्रिया' प्रस्तुत की है जो मन के द्वारा श्वास के आवागमन को देखने की क्रिया से प्रारम्भ होती है। इसमें चित्त में अन्तर्मुखी होने की क्षमता प्राप्त होने पर शरीर के विभिन्न अंगों में अभिव्यक्त संवेदनाओं को बिना किसी प्रतिक्रिया के समभाव से देखने का अभ्यास किया जाता है। संवेदनाओं को साक्षीभाव से देखा जाता है, जिससे वीतरागता एवं समत्व की साधना की पुष्टि होती है। यही साधना आगे देहातीत होने का मार्ग प्रशस्त करती है। इस ध्यान-प्रक्रिया पर विपश्यना ध्यान-साधना का भी प्रभाव है तथापि यह जैन साधना पद्धति के अनुकूल है। जैन समाज में इस समय प्रेक्षाध्यान, समीक्षणध्यान जैसी पद्धतियाँ प्रचलित हैं, किन्तु लोढ़ा सा. द्वारा प्रस्तुत 'वीतराग ध्यान की प्रक्रिया' निश्चित ही श्रेयसी है।

पुस्तक के प्रथम खण्ड में वीतराग ध्यान के स्वरूप, नियमावली, लक्ष्य, पूर्वाभ्यास, अन्तर्यात्रा, सावधानियों एवं विधि की विवेचना की गई है। द्वितीय खण्ड में वीतराग ध्यान से सम्बद्ध कुछ लेख हैं तथा परिशिष्ट में जैन ग्रन्थों के ध्यान सम्बन्धी संदर्भ दिए गए हैं। महाबलेश्वर में आयोजित चिन्तन शिविर का यह सुपरिणाम है कि ध्यान साधक लोढ़ा सा. ने वीतराग ध्यान की प्रक्रिया विस्तार से एवं सांगोपांग रीति से सहज शैली में प्रस्तुत कर ध्यान-अभिलाषियों को उपकृत किया है।

जैन दर्शन में त्रिविध आत्मा की अवधारणा *- साध्वी डॉ. प्रियलता श्री* ***प्रकाशक/प्राप्ति स्थान*** *- (१) पार्श्वमणि जैन तीर्थ ट्रस्ट, पो. पेद्दतुम्बलम्, वाया-आदोनी, जिला-कर्नूल-५१८३०१ (२) प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड, शाजापुर-४६५००१ (म.प्र.),* ***पृष्ठ*** *३२+४२२* ***मूल्य*** *२५० रुपये, सन् २००७*

जैनदर्शन में मोक्षप्राभृत, नियमसार, रयणसार, योगसार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि ग्रन्थों में आत्मा के तीन प्रकार प्रतिपादित हैं- १. बहिरात्मा २. अन्तरात्मा ३. परमात्मा। आध्यात्मिक विकास के गुणस्थान-सिद्धान्त की दृष्टि से पहले से तीसरे गुणस्थान तक बहिरात्मा की अवस्था है जो बहिर्मुख है। चतुर्थ से बारहवें गुणस्थान तक अन्तरात्मा की अवस्था है। यह साधक की अवस्था है। तेहरवाँ एवं चौदहवाँ गुणस्थान परमात्मदशा का सूचक है। साध्वी डॉ. प्रियलता श्री ने डॉ. सागरमल जी जैन, शाजापुर के निर्देशन में 'जैन विश्व भारती, लाडनूँ' से 'जैन दर्शन में त्रिविध आत्मा की अवधारणा' विषय पर पी-एच्. डी. उपाधि प्राप्त की है। वही शोधग्रन्थ पुस्तकाकार में प्रकाशित है। पुस्तक में आठ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में जैनदर्शन में आत्मा के स्वरूप, प्रकार, आध्यात्मिक विकास एवं त्रिविध आत्मा पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय में उपनिषद्, बौद्ध एवं जैन साहित्य में आत्मा की विभिन्न अवस्थाओं का निरूपण किया गया है। जैन ग्रन्थों में आत्मा के इन त्रिविध स्वरूप की चर्चा कुन्दकुन्द से लेकर बीसवीं शती के साहित्य तक मिलती है, जिसका विवरण भी इस अध्याय में दिया गया है। तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अध्यायों में क्रमशः बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा के स्वरूप, लक्षण एवं प्रकारों का जैन साहित्य के आधार पर विस्तृत निरूपण किया गया है। षष्ठ अध्याय में लेश्या, गुणश्रेणी एवं गुणस्थान के संदर्भ में त्रिविध आत्माओं की चर्चा है। सातवें अध्याय में आधुनिक मनोविज्ञान के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व तथा फ्रायड के त्रिविध अहम् के साथ त्रिविध आत्मा की अवधारणा की तुलना की गई है। अष्टम अध्याय में ग्रन्थ का उपसंहार है। डॉ. सागरमल जी के निर्देशन में लिखित होने से इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता एवं उपादेयता असंदिग्ध है।

जैनदर्शन में समत्वयोग : एक समीक्षात्मक अध्ययन *- साध्वी डॉ. प्रियवंदना श्री* ***प्रकाशक/प्राप्ति स्थान*** *- (१) पार्श्वमणि जैन तीर्थ ट्रस्ट, पो. पेद्दतुम्बलम्, वाया-आदोनी, जिला-कर्नूल-५१८३०१ (आ.प्र.) (२) प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड, शाजापुर-४६५००१ (म.प्र.),* ***पृष्ठ*** *३२+३७६*

मूल्य २५० रुपये, सन् २००७

आज मनुष्य विक्षोभों एवं तनावों से संत्रस्त है। राग-द्वेष, काम-क्रोध के आवेगों पर उसका कोई नियन्त्रण नहीं है, फलतः वह दुःखी एवं अशान्त है। अशान्ति, तनाव एवं दुःखों से मुक्ति के लिए 'समत्व योग' की साधना अत्यन्त उपादेय है। समत्वयोग एक प्रकार से सामायिक एवं समता की साधना है। समत्वयोग का प्रतिपादन जैन दर्शन में तो हुआ ही है, उपनिषदों, गीता, महाभारत एवं बौद्धदर्शन में भी इसकी चर्चा है। साध्वी डॉ. प्रियवन्दना श्री ने मुख्यतः जैनदर्शन को आधार बनाकर समत्वयोग का विश्लेषणात्मक निरूपण किया है। जैन विश्वभारती, लाडनूँ से विश्रुत जैन विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में पी-एच्.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध ग्रन्थ के इस पुस्तकीय आकार में ७ अध्याय है। प्रथम अध्याय में जैन साधना, समत्व योग के महत्त्व एवं तात्पर्य का निरूपण हुआ है। द्वितीय अध्याय में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के संदर्भ में समत्व योग का प्रतिपादन है। तृतीय अध्याय में साधक, साध्य और साधना की त्रिपुटी के साथ चौदह गुणस्थानों एवं षडावश्यकों की भी चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में समत्व योग की वैयक्तिक साधना एवं सामाजिक-वैषम्य के निराकरण पर प्रकाश डाला गया है। अनित्यादि सोलह भावनाओं के संदर्भ में भी समत्व का प्रतिपादन है। पंचम अध्याय में अन्य दर्शनग्रन्थों के साथ जैनदर्शन के समत्वयोग का तुलनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। षष्ठ अध्याय में आधुनिक मनोविज्ञान के साथ समत्वयोग की चर्चा है तथा अन्तिम सप्तम अध्याय में ग्रन्थ का सार दिया गया है। समत्वयोग की समग्र चर्चा की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है।

बिना दवा मधुमेह (डायबिटीज) का प्रभावशाली उपचार *- डॉ. चंचलमल चोरडिया* ***प्रकाशक*** *- कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, चोरडिया भवन, गोल बिल्डिंग रोड, जालोरी गेट, जोधपुर-३४२००३, फोन- ०२९१-२६२१४५४, मो. ९४१४१३४६०६* ***पृष्ठ*** *२४* ***मूल्य*** *११ रुपये, सन् २००७*

मधुमेह (डायबिटीज) के रोगी रोग-नियन्त्रण के लिए नियमित औषधि का सेवन करते हैं, किन्तु चोरडिया सा. ने लघु पुस्तिका में ऐसे अनेक नुस्खे दिए हैं जिनका सावधानी पूर्वक पालन करने से दवा लिए बिना ही मधुमेह का प्रभावशाली उपचार सम्भव है। पुस्तिका सभी के द्वारा पठनीय है, ताकि मधुमेह के उत्पन्न होने से भी बचा जा सके।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (१६) का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी, २००८ अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१६) में २४४ प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अक्टूबर से दिसम्बर २००७ के अंकों पर आधारित थी। इस प्रतियोगिता की पुरस्कार राशि का सौजन्य सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं तत्त्वज्ञ वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान नवरतनमल जी भंसाली-बैंगलोर ने किया है। सामान्य श्रेणी एवं युवा श्रेणी के सभी पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

सामान्य श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये	कमला सेठिया-मसूदा	(५०)
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये	अश्विनी आनन्द जैन-जालना	(५०)
तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये	किरण कुम्भट-जोधपुर	(५०)

सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक

पुष्पा मेहता-पीपाड़	(५०)	सुनीता दुस्साज-जयपुर	(५०)
कंचन बाई कोचर-धूले	(५०)	पुष्पा गोलेच्छा-ब्यावर	(५०)
राजुल कोठारी-धूले	(५०)	पुष्पा पारसमल ताथेड़-धूले	(५०)
विमल राणुलाल कोचर-नाशिक	(५०)	शीला सुभाषचन्द जी लुणावत-खेतिया	(५०)
मंजुला छाजेड़-समदड़ी	(५०)	सुनिता नवलखा-कोटा	(५०)

युवा श्रेणी

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये	हितेश महेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर	(५०)
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये	अनीता दुग्गड़-धूले	(५०)
तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये	मीना मेहता-पीपाड़	(५०)

सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक

उषा जैन-कोटा	(५०)	इन्द्रप्रसाद जैन-जोधपुर	(५०)
प्रमिला मेहता-दूंदू	(५०)	रितेश जैन-कोटा	(५०)
वर्षा बाफना-जोधपुर	(५०)	गरिमा जैन-कोटा	(५०)
श्वेता प्रशांत वैदमुथा-नाशिक	(५०)	समता डोसी-मेड़ता सिटी	(५०)
अनिल कुमार जैन-जयपुर	(५०)	मंगलचन्द जी बाघमार-मेड़ता सिटी	(५०)

अन्य ५० अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- मोहनलाल जैन-केसरीसिंहपुर, चंदनबाला जैन-अशोकनगर, प्रीति त्रिलोकचंद जैन-सवाईमाधोपुर, दिलीप जैन-जोधपुर, ऋषभ जैन-सुमेरगंजमंडी, जम्बूकुमार जैन-जयपुर, कुसुम फोफलिया-जयपुर, नीलम कांकरिया-नागौर, सुनीता कोटडिया-शहादा, अनिल जैन-कोटा, सुनीता मेहता-जोधपुर, नेनचंद बाफणा-जोधपुर, निशा लुंकड़-कोटा, नीलू जैन-लुधियाना, दर्शिका कंवरलाल जी टाटिया-जलगांव, ज्योति राजेन्द्र ताथेड़-धुले, विजया सुभाषचन्द जी लोढ़ा-धुले, ममता जैन-धुले, सरोज पारसमल रूणवाल-धुले, मंगला जी शिंगी-राहणा, सतीशचन्द रमणलाल जैन-धुले, मनीषा सिंघवी-सूरत, वैशाली ललित कोठारी-धुले, शोभा सागरमल कोठारी-धुले, अश्विनी आनंद जैन-जालना, कलावती नेमीचन्द चोरडिया-जलगांव, अनुजा आशीष कांकरिया-जलगांव, विजय छाजेड़-समदड़ी

४९ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :- माना जैन-बड़वानी, शोभा कवाड़-नासिक, नवकार जैन-पांचलासिद्धा, आयुषी

त्रिलोक चंद जी-आचीणा, रूचिका लुणावत-जोधपुर, आशा अग्रवाल-जयपुर, पारस जैन-वल्लारी, सुनीता लुणावत-आचीणा, अमीता जैन-जोधपुर, निर्मला जैन-भंडारा, राखी जितेन्द्र लोढ़ा-भांयदर, मनोज जैन-जयपुर, कमलेश जैन-खेड़ली, शालिनी जैन-खेड़ली, बीना जैन-अलीगढ़(राज.), कांतिलाल महात्मा-चितौडगढ़, निशा बाघमार-जबलपुर, चुकी कंवर कोठारी-चैन्नई, विजयलक्ष्मी मुणोत-जयपुर, शैली कुम्भट-जोधपुर, दीपक कांकरिया-नागौर, निकिता कांकरिया-नागौर, दिव्या डागा-जयपुर, पूनमचंद राणुलाल जैन-शहादा, हंसराज मोहनोत-जयपुर, डी. अनिल जैन-मैसूर, विमला बोहरा-जयपुर, मुकेश जैन-बारां, उषा प्रवीण जैन-धुले, विमला मिश्रीलाल खींवसरा-धुले, हर्षल पूनमचन्द जैन-शहादा, हीरा रमेश कर्नावट-अहमदनगर, संजय देशलहरा-इन्दौर, सुशीला जैन-इन्दौर, लता सतीष आंचलिया-धुले, राखी एस. जैन-धुले, प्रमीला पोखरणा-धुले, पूजा प्रवीण बरडिया-धुले, उषा प्रवीण बरडिया-धुले, कोमल पी. जैन-धुले, सुशीला रांका-जलगांव, सुशील इ. रांका-जलगांव, कविता आयुष कांकरिया-जलगांव, सरला एस. कांकरिया-जलगांव, अपूर्वा अतुल रांका-जलगांव, अपना जैन-वणी, कंचन मिश्रीलाल चौपड़ा-जलगांव, मंजू जैन-कुर्नूल, वरमाला विक्रम राठौड़-धुले, लीलाबाई कोठारी-अहमदनगर, अभिनन्दन अ. कोठारी-अहमदनगर,

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (१६) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
१. अर्थनीति	दिसम्बर/१०	२. सद्दृष्टि	नवम्बर/१०
३. जड़ता	अक्टूबर/११	४. संत	अक्टूबर/४३
५.शुद्ध आत्मतत्त्व	नवम्बर/१२	६. हंस	अक्टूबर/१०९
७.शालिभद्र	नवम्बर/१४	८. धर्म	अक्टूबर/१७
९. बृहदालोयणा	दिसम्बर/२०	१०.अर्हन्नक	अक्टूबर/५०
११.दवग्गिदावणया	अक्टूबर/४५	१२.दालिकाम्ल, दालियंब	दिसम्बर/९
१३.भूख	नवम्बर/२१	१४.लाल	नवम्बर/४७
१५.प्रमाद	दिसम्बर/२९	१६.आकिंचन्य	नवम्बर/२७
१७. चान्द्रायण	दिसम्बर/७०	१८. पुराण	नवम्बर/३९
१९. अलोकाकाश	अक्टूबर/२१	२०. मुक्ति	अक्टूबर/६२
२१.स्वतन्त्रता	दिसम्बर/६	२२. अहंकार	अक्टूबर/१२
२३. शाकाहार	नवम्बर/४७	२४. अनुश्रेणि	नवम्बर/७
२५. सर्वाधिक	अक्टूबर/६८	२६. संसार	नवम्बर/२४
२७. प्रज्ञा	अक्टूबर/६९	२८. स्थानकवासी	नवम्बर/२९
२९. अनन्त	अक्टूबर/१९	३०. स्थाणु	नवम्बर/४१
३१. ७२ या ९६	नवम्बर/२७	३२. ३	दिसम्बर/१५
३३.४	अक्टूबर/५१	३४. ३८	अक्टूबर/७४
३५. ३	नवम्बर/४६	३६. १००	अक्टूबर/४८
३७. ५५	दिसम्बर/२०	३८. १	दिसम्बर/५२
३९. ६	नवम्बर/५	४०. ४	नवम्बर/५३
४१. हाँ	अक्टूबर/३०	४२. हाँ	दिसम्बर/४०
४३. ना	नवम्बर/५३	४४. ना	नवम्बर/२०
४५. हाँ	अक्टूबर/४५	४६.हाँ	नवम्बर/८
४७. ना	दिसम्बर/२०	४८. ना	दिसम्बर/८
४९. हाँ	अक्टूबर/६०	५०. हाँ	अक्टूबर/४६

15 मार्च 2007
जिनवाणी 89

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 06 जनवरी 2008 को आयोजित कक्षा 1 से 8 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। अस्थायी वरीयता सूची एवं उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) प्रकाशित किए जा रहे हैं। वरीयता सूची में पुनर्मूल्यांकन के पश्चात् परिवर्तन सम्भव है। पुनर्मूल्यांकन के लिए आवेदन–पत्र मूल अंकतालिका एवं 25/– रूपये शुल्क के साथ 10 अप्रेल 2008 तक बोर्ड कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए। परीक्षा परिणाम की सूची केन्द्राधीक्षकों को प्रेषित कर दी गई हैं। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

अस्थायी वरीयता सूची, ६ जनवरी २००८ परीक्षा

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
२०८८	आरती राजेन्द्र जी मुथा	अमरावती	९७	प्रथम
३६३१	रजनी प्रवीण जी जैन	टोहाना	९४.५	द्वितीय
९२५	दिप्ती कैलाशचन्द जी जैन	कसरावद	९४.५	द्वितीय
३९३६	प्रियंका सुरेन्द्र कुमार जी कक्कड़	सरवाड़	९३	तृतीय
१०९४	रेणुका राजेन्द्र जी जैन	जम्मू	९३	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

३९८४	राखी नरेश कुमार जी भण्डारी	वणी	९८	प्रथम
२८७५	कौशल्या सोजीराम जी जैन	बैगूँ	९६.५	द्वितीय
७२४६	दर्शना गजराज जी जैन	जोधपुर	९६	तृतीय
५९४८	वीणा अनिल जी पुनमिया	गंगाधाम, पूना	९६	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

३९६०	शोभा प्रवीण कुमार जी चोरडिया	जालना	९९	प्रथम
५७००	आरती रविन्द्र जी चोरडिया	जामनेर	९८.५	द्वितीय
४८८१	संगीता धर्मचन्द जी कांठेड़	अजमेर	९८.५	द्वितीय
९८९	वर्षा संजय कुमार जी बरडिया	खरियार रोड	९८	तृतीय
४७३९	प्रशान्त राजेश कुमार जी जैन	अलवर	९८	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

५२०७	मनोज कुमार ज्ञानचन्द जी जैन	जयपुर	९६	प्रथम
५६४५	विमला हीरालाल जी भण्डारी	कोलकाता	९५.५	द्वितीय
६५५८	मंजु सुरेश जी जैन	जयपुर	९५	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

५९५८	सविता सूर्यकान्त जी बम्ब	गंगाधाम, पूना	९४.५	प्रथम
५८०८	प्रभा कमलचन्द जी जैन	इन्दौर	९४	द्वितीय
४८८५	कविता अनिल जी चौधरी	अजमेर	९३.७५	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

६६५	सुनीता महावीरचन्द जी दरडा	उमरी	९७.५	प्रथम
५८२०	कल्पना महावीर जी वैदमुथा	नागपुर	९६	द्वितीय
१७८७	मनीषा दिलीप जी शाह	नागपुर	९५.५	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

४२००	विनीता शांतिलाल जी कोठारी	कोथरूड	९९	प्रथम
३६४३	सुव्रत भगवानदास जी	टोहाना	९५	द्वितीय
६३०	तेजस्वी सुरेश जी कांकरिया	पिपलगांव बसवंत	९४	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

४६९८	शिल्पा चन्द्रकान्त जी तालेड़ा	कोपल	९५	प्रथम
६६९४	आरती रविन्द्र जी चौधरी	बोरीवली, मुम्बई	९३	द्वितीय
३५३१	ललीता प्रशान्त जी लोढ़ा	सिड़को, नाशिक	९०	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

Rank (I) 2088 (II) 925, 3631 (III) 1094, 3936

61,65,67,71,94,96,97,111,112,120,174,185,236,244,248,250,252,438,441,442,458,
473,474,475,479,510,511,512,549,550,568,573,608,610,668,669,670,677,682,696,
699,705,841,845,900,905,907,923,924,925,928,930,935,936,938,994,**1002**,5,7,32,
68,69,70,71,80,81,87,92,93,94,95,97,98,100,101,102,103,104,107,108,109,114,115
,116,117,118,120,122,123,124,125,126,127,128,129,130,141,142,143,144,145,146,
147,148,149,150,151,152,153,154,155,156,157,158,159,160,174,175,176,179,182,
184,185,188,193,199,201,203,204,214,219,226,230,234,257,260,264,267,271,272,
273,274,275,276,277,278,279,280,281,282,286,287,289,290,291,294,295,296,298,
303,308,309,312,314,317,318,319,320,322,323,325,326,327,328,329,331,332,333,
334,335,344,345,347,348,353,358,376,411,413,420,437,447,448,474,549,550,551,
552,553,554,555,556,557,558,559,570,595,618,630,631,632,633,646,648,649,653,
654,655,656,657,658,659,661,706,709,715,716,717,723,727,729,730,734,761,772,
775,779,790,833,841,846,864,873,878,881,884,896,900,903,923,925,928,931,933,
943,944,946,**2048**,52,69,88,89,90,91,92,97,99,102,105,106,107,111,175,
176,179,185,186,199,200,202,204,207,208,209,212,213,215,217,239,240,243,246,
247,252,254,255,259,261,283,286,290,328,329,330,356,419,426,427,439,472,477,
494,507,511,513,603,605,606,609,611,628,629,630,631,632,633,697,698,699,775,
851,852,855,856,857,859,860,864,869,871,883,943,998,**3013**,14,16,18,19,20,21,
23,24,25,27,28,29,32,33,34,35,36,37,38,40,44,45,46,47,48,49,50,51,52,54,56,57,
59,61,62,63,64,65,66,67,68,69,70,71,73,76,77,78,79,80,81,82,84,8687,88,89,90,
91,93,95,97,99,100,101,102,103,104,105,106,107,108,110,111,112,113,114,115,
116,118,119,121,122,123,124,125,126,127,128,129,131,134,135,137,138,139,140,
142,143,144,145,146,147,148,149,150,152,153,154,155,156,157,160,161,162,163,
164,165,166,167,168,169,171,172,174,177,179,182,184,185,186,187,188,189,190,
191,192,193,194,195,196,198,199,200,203,204,205,206,207,208,211,212,213,215,

217,219,220,222,250,260,265,267,269,270,274,275,281,287,311,366,368,372,373,
374,376,377,381,382,384,385,389,393,394,395,396,397,399,403,404,405,407,410,
412,413,414,443,445,448,449,451,479,544,549,550,551,553,555,560,565,566,568,
574,591,597,617,626,631,633,708,712,714,715,735,736,739,741,788,789,812,827,
828,829.830,834,836,848,851,859,861,862,863,882,884,900,901,929,931,933,934,
936,937,938,939,942,943,944,970,975,**4055**,59,65,72,79,82,83,87,93,98,101,104,
105,106,110,111,112,114,116,117,119,120,122,124,127,128,131,132,133,136,139,
140,141,142,148,150,152,154,155,157,158,161,208,210,212,213,214,215,216,217,
219,221,222,224,225,226,229,230,413,414,415,427,428,429,436,479,480,482,485,
486,489,526,540,641,644,715,716,717,719,720,766,767,769,770,771,774,777,778,
779,795,814,815,828,829,830,833,841,845,846,850,856,867,868,869,870,871,872,
875,877,929,940,943,947,949,964,965,**5010**,23,27,48,60,62,70,71,79,80,82,88,89,
122,125,126,128,129,130,131,134,138,139,140,184,189,193,194,223,225,237,256,
257,258,262,267,268,269,284,303,310,311,312,313,326,327,333,340,341,368,372,
377,384,385,390,393,395,397,415,436,437,438,440,441,442,444,446,447,448,449,
450,451,452,453,454,455,456,457,465,467,471,483,488,491,495,532,534,548,549,
552,553,554,555,557,558,560,564,565,566,570,572,573,574,575,606,613,614,617,
647,648,654,656,669,686,692,693,726,733,734,771,772,785,793,794,799,800,801,
802,803,814,827,828,830,831,832,833,834,835,836,841,842,846,856,861,870,872,
873,937,960,961,968,969,970,974,975,983.984,985,986,987,988,989,998,999,
6009,10,17,22,26,27,33,61,83,86,87,89,91,98,136,137,139,180,206,232,307,308,
314,318,343,364,368,372,377,429,461,467,493,510,511,513,516,521,533,547,617,
622,637,642,709,711,712,868,894,926,943,944,945,957,969,970,971,985,992,996,
997,998,**7003**,33,37,81,85,98,107,118,120,123,142,194,195,196,203,204,210,215,
219,259,270,287,288,289,296,312,317,318,319,324,332,338,339,355,356,369,423,
449,450,453,454,455,459,464,467,481,493,506,512,517,521,532,539,554,558,559,
566,568,569,580,582,609,610,614,615,631,653,656,678,702,703,704,705,715,721,
722,724,725,726,728,730,731,733,734,736,739,740 = **1031**

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

Rank (I) 3984 (II) 2875 (III) 5948, 7246

7,8,9,10,47,48,75,90,91,125,126,129,337,341,344,346,347,348,352,353,354,375,
391,392,426,487,490,491,492,493,552,553,554,556,575,576,611,612,614,615,617,
618,619,637,638,639,650,651,707,708,710,711,713,714,715,716,719,720,721,722,
723,766,767,789,794,795,802,822,918,939,940,941,942,958,962,**1010**,13,19,21,
24,36,39,42,47,58,59,60,61,66,72,73,74,161,162,163,164,165,166,200,206,207,
208,300,340,341,362,363,561,562,572,581,582,583,585,586,587,634,635,636,662,
664,669,748,749,750,751,753,780,781,936,969,981,986,987,993,994,995,996,997,
2000,2,30,56,57,127,129,130,169,260,332,360,367,368,370,398,399,400,401,409,
410,430,432,441,442,486,496,549,552,566,589,591,613,615,639,642,647,649,650,
651,666,671,687,708,711,740,788,792,801,808,810,873,875,877,878,882,**3417**,
453,454,458,459,460,463,471,497,515,516,519,534,599,600,605,634,635,636,638,
639,641,654,655,669,670,671,674,677,678,719,720,723,725,726,727,742,754,792,
807,823,839,870,873,874,881,892,893,945,946,947,952,953,979,980,981,982,983,
984,**4,005**,6,7,9,164,165,166,167,168,169,170,171,172,176,177,178,179,181,233,
410,438,439,441,464,469,470,497,498,703,704,705,706,721,722,723,724,725,726,
728,729,730,782,783,801,804,805,811,812,816,835,836,837,893,894,915,916,917,
918,922,941,942,953,967,968,969,970,974,976,**5005**,6,7,11,24,25,26,29,34,85,92,
102,104,106,107,136,141,181,182,195,196,198,226,227,228,229,230,239,243,285,
286,315,316,317,337,342,348,351,361,409,475,499,507,524,536,579,580,622,624,
638,641,659,671,673,674,675,677,679,697,698,699,714,743,773,774,886,887,895,
938,939,940,942,943,945,946,948,949,990,991,992,993,**6038**,67,138,259,261,323,
326,330,350,352,393,397,401,439,441,444,445,495,503,522,523,524,525,541,550,
552,585,587,588,591,592,595,676,680,691,699,701,973,987,**7157**,158,161,165,
168,192,200,216,217,218,223,236,246,279,283,290,301,342,343,364,366,377,378,

381,382,384,387,411,425,436,445,451,462,470,507,508,514,516,518,530,531,545, 549,632,633,635,657,658,675,706,707,709 = **494**

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

Rank (I) 3960 (II) 4881, 5700 (III) 989, 4739

17,18,19,20,51,77,78,79,80,103,115,132,376,378,397,398,429,430,439,462,496, 515,516,577,578,652,653,726,727,728,729,730,732,733,734,735,736,738,739,740, 741,773,823,824,826,828,920,944,945,946,959,965,966,967,968,969,970,972,975, 978,979,982,984,986,988,989,**1025**,29,48,49,50,51,75,167,168,169,170,365,379, 588,589,672,673,674,676,759,760,766,767,811,815,819,820,824,**2005**,8,10,13,14, 16,33,37,58,60,61,77,82,83,139,152,229,235,236,313,320,321,323,376,377,382, 383,433,489,497,520,541,557,569,593,594,621,717,718,719,746,813,817,820,821, **3418**,419,420,421,422,424,464,465,485,486,487,488,498,499,523,524,525,526, 557,602,686,687,690,691,731,760,793,794,808,816,824,842,847,895,916,948,949, 957,958,959,960,961,971,988,989,990,992,**4205**,442,443,444,472,474,499,500, 531,535,547,549,649,670,671,709,731,732,733,734,735,736,737,738,739,740,784, 838,839,840,880,881,897,899,923,954,977,988,996,997,999,**5000**,1,2,3,14,16,17, 18,19,20,21,22,36,38,39,51,58,59,94,110,111,112,113,114,142,153,200,201,202, 203,204,231,232,233,234,275,277,288,305,318,344,458,503,504,510,538,539,540, 541,626,627,628,642,643,700,702,728,748,750,751,775,776,777,778,779,780,792, 818,901,908,912,951,994,995,**6000**,44,68,69,70,71,72,73,118,141,272,277,279,282 ,333,334,336,354,355,447,448,449,450,451,470,543,544,555,557,656,658,663,708 ,**7176**,177,193,221,230,239,242,291,359,365,391,416,426,435,448,461, 468,523,528,535,548,562,563,591,603,604,605,617,636,640,642,647,648,650,661, 674,700,701 = **374**

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

Rank (I) 5207(II) 5645 (III) 6558

24,25,26,27,28,29,30,32,52,53,54,55,56,57,82,83,84,85,116,135,360,379,404,452, 453,454,456,464,467,497,498,500,517,518,559,561,562,563,579,580,581,622,642, 643,645,646,647,654,655,656,743,744,774,775,829,830,831,832,833,834,835,922, 947,948,949,950,952,953,**1171**,172,367,368,380,381,382,590,591,592,639,640, 641,677,783,784,792,793,794,795,796,797,798,**2020**,21,22,23,24,25,38,39,63,64, 84,87,153,270,277,300,301,338,384,385,386,388,389,413,434,521,543,544,545, 571,619,620,623,692,720,825,826,829,886,**3425**,426,427,466,467,468,475,490, 492,493,539,575,611,656,764,765,766,767,795,815,825,843,845,846,908,962,963, 964,966,967,968,972,973,993,**4183**,185,186,187,188,189,190,475,501,502,557, 559,561,651,653,654,,656,684,785,786,796,874,900,902,903,904,906,907,908, 909,910,980,982,**5041**,68,137,155,206,207,208,220,235,290,293,294,345,346,424, 425,459,505,542,583,591,592,644,645,663,684,704,705,706,707,719,754,781,782, 783,806,815,819,914,915,920,953,954,955,963,964,**6005**,6,74,10,5,126,145,284, 288,337,357,403,404,405,558,559,607,664,668,669,681,683,692,693,702,703, 850,851,947,948,949,966,**7,284**,292,344,345,346,347,348,358,392,393,394,410, 421,429,501,503,551,552,589,606,607,618,622,654,659,662,663,664,680,681,745, 746,747,748,750 = **309**

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

Rank (I) 5958 (II) 5808 (III) 4885

92,118,137,142,405,407,409,434,436,455,582,624,625,626,657,658,659,660,745, 746,747,748,749,750,751,752,753,754,755,776,**1369**,563,678,785,800,801,802, 803,**2027**,28,40,41,121,133,154,162,163,173,233,279,280,391,414,480,498,499, 546,574,596,597,599,835,889,**3428**,429,431,476,477,478,500,528,558,612,659, 660,697,770,797,855,922,**4447**,448,449,477,503,537,538,657,658,659,660,661, 674,675,676,741,742,743,787,788,806,822,884,885,919,926,955,984,985,**5042**,72,

73,96,115,116,117,118,119,120,224,244,280,299,319,320,321,347,427,430,543, 544,584,585,593,594,595,596,597,632,664,665,729,755,791,807,808,813,957,958, 959,**6007**,147,292,359,630,631,633,670,994,**7181**,182,396,403,428,430,458,505, 533,641,643,646 = **171**

जैन धर्म विशारद (छठी)

Rank (I) 665 (II) 5820 (III) 1787

119,381,410,437,504,505,506,508,583,661,662,663,664,665,666,667,955,**1385**, 386,643,787,**2141**,144,145,146,165,234,394,395,457,501,503,504,505,547,575, 624,625,626,664,836,837,840,842,**3433**,494,496,613,614,642,661,662,663,699, 701,772,798,799,817,876,897,977,994,**4192**,451,504,563,662,663,664,677,678, 679,686,689,745,746,886,887,911,927,**5045**,46,53,69,209,210,212,213,322,477, 478,512,586,587,588,667,710,730,764,809,820,851,926,**6298**,546,599,956,967, 968,983,**7399**,400,418,537,564,744 = **117**

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

Rank (I) 4200 (II) 3643 (III) 630

110,145,522,584,630,759,**1,387**,565,575,625,644,**2123**,155,156,459,483,526,668, 722,846,890,**3436**,439,440,507,510,541,615,624,625,643,664,702,703,777,781, 818,826,878,898,926,978,**4193**,194,195,196,197,198,200,453,690,694,792,793, 890,891,912,913,914,957,958,990,**5165**,281,323,324,325,514,634,635,767,768, 810,811,812,928,933,**6015**,77,128,362,459,677,972,**7354**,513,538,677 = **88**

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

Rank (I) 4698 (II) 6694 (III) 3531

146,385,509,780,781,782,**1388,2506**,523,849,**3441**,511,530,531,782,819,**4565**, 697,698,794,928,960,962,**5295**,435,479,480,822,966,**6305**,694,**7,676** = **32**

परिणाम निरस्त किया गया

2355,2576,2688,2693,2721,2744,2747,2806,2832,2833,2891,5400,5402,6079, 6101,6102,7390,7398 = **18**

निर्धारित दिनांक में परीक्षा नहीं होने के कारण निम्न केन्द्रों के पुरस्कार निरस्त किये गए -

(1) नागदा जंक्शन (2) बडनेरा (3) वजीराबाद

Applicant	Present	Pass %	Present %	Passed
7750	4557	2616	58.80	57.40

बोर्ड की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००८ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००८, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें- *सुशीला बोहरा, संयोजक, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन-०२९१-२६३०४९०, मोबाइल-९४१४१३३८७९*

धर्मचन्द जैन	सुशीला बोहरा	राजेश कर्णावट
रजिस्ट्रार	संयोजक	सचिव

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं संभावित विहार दिशाएँ

१ मार्च २००८ की स्थिति

१. परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ८	पूना से ग्रामानुग्राम ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हुए १७.२.०८ को लोनावला पदार्पण हुआ। लोनावला से मुम्बई अग्र विहार संभावित है।
२. परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ४	जोधपुर के उपनगर लक्ष्मीनगर को लाभान्वित कर रहे हैं। जोधपुर के अन्य उपनगरों में अग्र विहार संभावित है।
३. साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा १०	जोधपुर के लक्ष्मीनगर विराजते हुए उपाध्यायप्रवर की सेवा-सन्निधि का लाभ ले रहे हैं। जोधपुर के उपनगरों में विहार की संभावना है।
४. सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४	किशनगढ़ क्षेत्र के शिवाजीनगर को लाभान्वित कर रहे हैं। आस-पास के क्षेत्रों में विचरण संभावित है।
५. तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३	सकारण पीपाड़ विराजित हैं।
६. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७	महासती मण्डल बोनकठा पधारे हैं। नागपुर की ओर बढ़ रहे हैं।
७. विदुषी महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७	कर्नाटका प्रदेश के अरसीकेरा नगर में विराजमान हैं। हुबली की ओर विहार की संभावना।
८. विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४	कानपुर से कन्नौज होते हुए आगरा की ओर विहार चल रहा है।

९. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर म.सा. आदि ठाणा ८	किशनगढ़ से धनोप पदार्पण हुआ है।
१०. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ६	गजेन्द्रगढ़ को लाभान्वित कर रहे हैं। महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा ३ का मुम्बई की ओर विहार चल रहा है।
११. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३	सूरत से मुम्बई की ओर विहार चल रहा है।
१२. व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३	बालोतरा के समीप कनाना विराजमान हैं। समदड़ी-जोधपुर की ओर अग्र विहार संभावित है।
१३. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३	वेल्लूर से चिकमंगलूर विहार चल रहा है।
१४. सेवाभावी श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४	पूना से मुम्बई की ओर विहार की संभावना है।
१५. महासती श्री समर्पिता जी म.सा.आदि ठाणा ३	किशनगढ़ शहर विराजित हैं।

आचार्यप्रवर लोनावला से मुम्बई की ओर

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ दिनांक १७ फरवरी २००८ को लोनावला पधारे। आचार्यप्रवर ने लोनावला पदार्पण से पूर्व १० फरवरी को तप और दान के विशिष्ट पर्व 'अक्षय तृतीया' की साधु भाषा में रखने योग्य आगारों के साथ मुम्बई महानगर को स्वीकृति फरमा दी, जिससे मुम्बई के समूचे जैन समाज में हर्ष छा जाना स्वाभाविक है। आचार्यप्रवर ने वैशाख शुक्ला द्वितीया तदनुसार ७ मई २००८ को मुम्बई में कतिपय दीक्षाओं की स्वीकृति भी फरमा दी है। जिससे मुम्बई जैन समाज का उत्साह कई गुना बढ़ गया है। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघ एवं श्रद्धालु दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा का लाभ ले रहे हैं वहीं व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर जीवन समुन्नत करने में भी श्रावक-श्राविकाएँ सजग हैं।

कतिपय दीक्षाएँ एवं अक्षय तृतीया मुम्बई में

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने २७ फरवरी २००८ को लोनावला में मुम्बई सहित अन्यान्य स्थानों की विनति के उत्तर में साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ वैशाख शुक्ला द्वितीया बुधवार दिनांक ७ मई २००८ को मुम्बई महानगर में कतिपय दीक्षाएँ प्रदान करने की स्वीकृति फरमाई है जिससे मुम्बई जैन समाज में हर्ष छा गया है। तप-साधक तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से ८ मई ०८ को तप और दान का माहात्म्य श्रवण करेंगे एवं नवीन प्रत्याख्यान भी होंगे। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ मुम्बई के अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत ने बताया कि संघ द्वारा विले पार्ले (पश्चिम) स्थित 'ऋतम्भरा कॉलेज', जे.वी.पी.डी. बस स्टेण्ड के पास, मुम्बई में दीक्षा महोत्सव एवं अक्षय तृतीया कार्यक्रम आयोजित किए जायेंगे।

सम्पर्क सूत्र- (१) श्री पारसचन्द जी हीरावत, अध्यक्ष- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, १३०१, पंचरत्न बिल्डिंग, ओपेरा हाउस, मुम्बई-४००००४, फोन-०२२-२३६३०३२०, ४०१८५०००(ऑ.), २३६९६२२६, २३६३७३२०(घर), ०९८२१०१३५३०, फैक्स-०२२.२३६३१९८२, ईमेल-dpe90@hotmail.com (२) श्री नरेन्द्र जी हीरावत फोन-०२२-२४३८०७१३ फैक्स-०२२-२४३७०७१३ मोबाइल- ०९८२१०४०८९९

जोधपुर में धर्म-ध्यान का ठाट

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का दीक्षा-दिवस ९ फरवरी को घोड़ों का चौक में दया-संवर एवं उपवास-पौषध के कार्यक्रम उत्साहपूर्वक हुए। दिनांक १० फरवरी को उपाध्यायप्रवर वर्द्धमान भवन, पावटा पधारे जहाँ भी प्रवचन सहित त्याग-तप की अच्छी प्रभावना रही। उपाध्यायप्रवर २२ फरवरी को लक्ष्मीनगर पधारे जहाँ उस क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा का भावनापूर्वक लाभ लिया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के अठारह पापों पर प्रभावी प्रवचन चल रहे हैं, जिन्हें सूर्यनगरी के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाएँ नियत-निर्धारित समय पर आकर तन्मयता से श्रवण कर रहे हैं। महावीर नगर, दाधीच नगर, राजीव नगर, तिलक नगर की विनति ध्यान में रखते हुए

उपाध्यायप्रवर ने ३ मार्च को दाधीच नगर पधार कर उन उपनगरों के श्रद्धालुओं की भावना साकार की। महामन्दिर, मूथा जी का मन्दिर, नेहरू पार्क, हाउसिंग बोर्ड सहित अनेक उपनगरों की विनतियाँ चल रही हैं।

सम्पर्क सूत्र– श्री नवरतन डागा, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६४१४४५

महाराष्ट्र एवं गुजरात क्षेत्र में प्रचार-सम्पर्क कार्यक्रम सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर एवं महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में १२ से १८ फरवरी २००८ तक महाराष्ट्र के ५० क्षेत्रों में तथा १८ से २० फरवरी २००८ तक गुजरात के १० क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाराष्ट्र क्षेत्र में दो दलों के माध्यम से १२ से १६ फरवरी एवं १२ से १८ फरवरी तक कार्यक्रम रखा गया। इन प्रचार कार्यक्रमों में स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया, सचिव श्रीमती मोहनकौर जी जैन, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा, स्वाध्याय संघ कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता, महाराष्ट्र के प्रचारक श्री माणकलाल जी गादिया, श्री मनोज जी संचेती, श्री हीरालाल जी मण्डलेचा की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। जलगांव संघ के अध्यक्ष श्री दलीचन्द जी चोरडिया, महाराष्ट्र शाखा के संयोजक श्री कस्तुरचन्द जी बाफना, श्री राजेन्द्र जी मल्हारा, श्रीमती विजया जी मल्हारा, श्री बंशीलाल जी बोथरा एवं श्रीमती लीला जी सालेचा की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्रचार-कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हुई। गुजरात क्षेत्र के प्रचार कार्यक्रम में श्री स्वरूपचन्द जी बाफना, श्री लाभचन्द जी नाहर की सेवाएँ भी प्राप्त हुईं।

सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक शिक्षण शाला प्रारम्भ करने, २५ बोल की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रेरणा के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान ११ नये स्वाध्यायी बनाए गए। कई जगहों पर आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के केन्द्र को सक्रिय किया गया। आगामी २७ जुलाई की परीक्षा हेतु १४२ फार्म भरवाए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका के सदस्य भी बनाए गए। प्रचार कार्यक्रम के

दौरान विभिन्न सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों के दर्शनों का लाभ भी प्राप्त हुआ।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर में उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

राजस्थान तथा अन्य क्षेत्रों से १०वीं, १२वीं बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण छात्रों का जीवन सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए यह संस्थान स्वर्णिम अवसर प्रस्तुत कर रहा है। इस संस्था के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं- ❋ व्यावहारिक शिक्षण बी.ए., एम.ए. एवं पी-एच्.डी. के साथ जैन धर्म व दर्शन, संस्कृत-प्राकृत आदि में उच्च स्तरीय विद्वान् तैयार करना। ❋ सन्त-सतियाँ जी म.सा. को अध्यापन कराने वाले प्रतिभा सम्पन्न पण्डित तैयार करना। ❋ शिविर में कुशल नेतृत्व कर सके, ऐसे अध्यापक तैयार करना। ❋ धार्मिक पाठशालाओं का नियमित संचालन करें, ऐसे शिक्षक तैयार करना।

संस्थान में छात्रों को प्राप्त होने वाली सुविधाएँ- ❋ भोजन, आवास व शिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था। ❋ ज्ञानवर्द्धक, तार्किक व मौलिक पुस्तकों से युक्त वाचनालय। ❋ योग्य छात्रों को प्रतिवर्ष संस्थान की अनुमति से छात्रवृत्ति प्रदान किया जाना। ❋ कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था।

जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाने हेतु नियम- ❋ इच्छुक छात्र के न्यूनतम ६० प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है। विशेष परिस्थितियों में छात्रों को प्रवेश दिया जा सकता है। ❋ व्यावहारिक शिक्षण का विषय कला वर्ग (आर्ट्स) ही होना चाहिए। ❋ ऐच्छिक विषयों में संस्कृत लेना अनिवार्य है।

संस्थान के नियमों का पालन करना अत्यावश्यक है। संस्थान में परिश्रमी, सेवाभावी, अनुशासनप्रिय तथा प्रतिभा-सम्पन्न छात्रों को ही प्रवेश दिया जाता है। धार्मिक, व्यावहारिक अनुशासित प्रणाली के द्वारा बच्चों को जीवन निर्माण के सुन्दर संस्कार इस संस्थान में दिये जाते हैं। चारित्र निर्माण के प्रति भी संस्थान का विशेष रुझान रहता है।

संस्थान में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी निम्न बातों का ध्यान रखें- ➡ समस्त प्रमाणपत्रों की फोटो-प्रति प्रेषित करें। ➡ सम्पर्क सूत्र, दूरभाष नम्बर प्रेषित करें।

➡ अपना पूर्ण बायोडाटा भी प्रेषित करें, जिसमें-१. नाम २. पिता का नाम ३. गोत्र ४. जन्मतिथि व संवत् ५. निवास स्थान का पता ६. धार्मिक योग्यता ७. पिछले दो वर्षों में विद्यालय की परीक्षाओं में प्राप्त अंकतालिका की प्रति ८. आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा अगर कोई परीक्षा पास की हो तो उसका विवरण।

समस्त पात्रता होने पर प्रमाण-पत्र सहित विद्यार्थी स्वयं १० मई तक उपस्थित हो सकते हैं। इससे पूर्व डाक द्वारा सम्पूर्ण जानकारी १ मई तक भेज सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र** – *श्रीमती प्रेमलता जैन, अधिष्ठाता-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, ए-९, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर (राज.), फोन-०१४१-२७१०९४६*

कर्म संहिता प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि बढ़ी

श्रुतप्रेमी साध्वी युगल निधि-कृपा श्री म.सा. द्वारा लिखित 'कर्म संहिता' ग्रन्थ पर द्वितीय बार अभिनव शैली में आयोजित अखिल भारतीय ज्ञान प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि प्रतियोगियों की मांग पर २७ जून २००८ कर दी गई है एवं शीघ्र प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि १५ मार्च है। पुस्तिका मंगवाने के लिए सम्पर्क करें- मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, दिल्ली, मृदु-प्रदीप जैन, मो. ०९३१३०९३४४४।

भोपालगढ़ में आवासीय धार्मिक शिक्षण शिविर

श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान भोपालगढ़ के परिसर में बीस दिवसीय आवासीय धार्मिक शिक्षण एवं सुसंस्कार शिविर २० मई से ९ जून २००८ तक आयोजित हो रहा है। स्वाध्यायी भाई-बहिन एवं कक्षा ८ से ऊपर की कक्षाओं के छात्र-छात्राएँ प्रवेश योग्य हैं। इस शिविर में सरल सुबोध शैली में जैन आगमों का अध्यापन, कथा-काव्य का रसास्वादन, व्रत प्रत्याख्यान, स्व अनुशासन, समयबद्ध दिनचर्या, योग, ध्यान, मौन, अल्प संभाषण का अभ्यास, वक्तृत्व, लेखन, प्रश्नमंच, व्यक्तित्व विकास की प्रवृत्तियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा। प्रतिभाओं तथा व्रती शिविरार्थियों का अभिनंदन होगा। संत-सती वर्ग के सान्निध्य का भी लाभ मिलने की संभावना है। आवास, भोजन की सुविधा के साथ शिविर में पूर्ण अवधि तक शिविर के नियमों की पालना करने वाले शिविरार्थियों को दोनों तरफ का निकटतम दूरी का द्वितीय श्रेणी का रेल किराया अथवा बस किराया देय होगा। स्थान सीमित। आवेदन पत्र तथा नियमावली के लिये सम्पर्क करें:-(१) सम्पतराज बोथरा, मंत्री-श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ़ (जोधपुर),

फोन-०२९२०-२२२२८० (ऑ.), ०२९१-२५१०००९ (घर), (२) प्रसन्नचन्द ओस्तवाल, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ़ (जोधपुर), फोन-०४४-२५३६४०६२(ऑ.), ०९३८०१०२६०७ (मो.)

जोगणिया माताजी में चिकित्सा शिविर सम्पन्न

जोगणिया माताजी (जिला-चितौड़गढ़)- श्री कन्हैयालाल हीरावत चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के तत्त्वावधान में राज्य सरकार के सहयोग से १७ से २६ जनवरी, २००८ तक चिकित्सा शिविर में ४५८६ मरीज आये जिसमें १०७४ ऑपरेशन हुए। ट्रस्टी श्री पारसचन्द जी हीरावत ने बताया कि पिछले २७ वर्षों से शिविर में ऑपरेशन सफलता पूर्वक हुए हैं। ट्रस्ट की ओर से ५०० कम्बल एवं सूती व ऊनी वस्त्रों का वितरण किया गया। शिविर में लोक सभा सदस्य श्री श्रीचन्द जी कृपलानी, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष श्री चुन्नीलाल जी धाकड़ सहित अनेक गणमान्य महानुभावों ने शिविर में सहयोग किया। ट्रस्ट वहाँ होस्पिटल बनवा रहा है। मुख्य सड़क निर्माण का लोकार्पण भी सांसद महोदय के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

बधाई/चुनाव

प्रो. सागरमल जैन एवं डॉ. रंजनसूरिदेव सम्मानित

जयपुर - डॉ. सागरमल जी जैन को २४ फरवरी २००८ को प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर ने 'गणधर गौतम पुरस्कार' से सम्मानित किया। पुरस्कार में १,११,०००/- रुपए की राशि प्रदान की गई। प्रो. सागरमल जैन जैन धर्म-दर्शन के विश्वविख्यात विद्वान् हैं। प्रो. जैन ने हजारों पृष्ठों में जैनधर्म, दर्शन, कला, संस्कृति आदि के पक्षों को विश्लेषणात्मक रीति से प्रस्तुत किया है।

दिल्ली - प्राकृत भाषाविद् डॉ. श्री रंजनसूरिदेव, पटना को प्राकृत भाषा एवं साहित्य में विशेष योगदान के उपलक्ष्य में वर्ष २००६ के 'आचार्य हेमचन्द्रसूरि सम्मान' से ९ फरवरी २००८ को दिल्ली के श्री विजय वल्लभ स्मारक में सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष जसवन्त धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित है तथा कार्यक्रम का आयोजन भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट द्वारा किया जाता है।

सूरत - सुश्री पूनम चौपडा सुपुत्री श्री प्रेमचन्द जी चौपड़ा ने सी.ए. फाइनल में देश में वरीयता सूची में १२ वां स्थान प्राप्त किया। अजमेर मूल के श्री प्रेमचन्द जी चौपड़ा रत्नसंघीय श्रावक हैं। सुश्री चौपड़ा को हार्दिक बधाई।

जोधपुर- गाँधी बलिदान दिवस पर गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, जोधपुर द्वारा

'सत्याग्रह की विरासत' विषयक विश्वविद्यालय स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में संस्कृत-विभाग की शोधछात्रा सुश्री जयश्री जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

-नेमिचन्द्र जैन 'भावुक'

जोधपुर- युवारत्न श्री मुदित कुम्भट सुपुत्र श्रीमती मृदुला जी श्री प्रवीण जी कुम्भट

सुपौत्र श्रीमती चांदकंवरजी व श्री कनकराज जी कुम्भट (अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर) ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। युवारत्न ने २००२ में सीनियर सैकेण्डरी में राज्य स्तर पर चतुर्थ स्थान एवं बी.कॉम (ऑनर्स) में स्वर्ण पदक प्राप्त करने का गौरव अर्जित किया। श्री मुदित कम्पनी सेक्रेटरी व लेखाकंन की तैयारी भी कर रहा है।

संक्षिप्त समाचार

दूनी- आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस पर प्रार्थना, गुणानुवाद सभा एवं सामूहिक महामंत्र नवकार का जाप किया गया। दिनांक २६.०१.०८ को उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में महामंत्र के जाप के साथ पशु-पक्षियों की सेवा का काम उत्साह पूर्वक किया गया। *-एस.के. जैन*

जयपुर- प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाश्यमान पुस्तक 'पांतजल योगसूत्र की नूतन व्याख्या' पर २३ फरवरी ०८ को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में पुस्तक के लेखक श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा, प्रो. सागरमल जी जैन, प्रो. दयानन्द जी भार्गव, प्रो. कमलचन्द जी सोगानी, श्री रणजीत सिंह जी कूमट, डॉ. सुषमा जी सिंघवी आदि अनेक विद्वज्जन उपस्थित थे। प्राकृत भारती अकादमी के संरक्षक श्री डी. आर. मेहता ने आगन्तुक सदस्यों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. धर्मचन्द जी जैन ने किया।

मुम्बई - मारवाड़ी कॉमर्शियल हाईस्कूल एवं जूनियर कॉलेज सभागार में श्री जैन सेवा संघ, मुम्बई द्वारा अन्तरमहाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता में ११ प्रतिष्ठित महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता का विषय था 'संस्कार

बिना शिक्षा अधूरी'। विल्सन कॉलेज की छात्रा काजी नंदा प्रथम, मनीषा लवानिया द्वितीय तथा रामनंद त्रिपाठी को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विल्सन कॉलेज, मुम्बई को चल गोल्ड ट्राफी प्रदान की गई। श्री जैन सेवा संघ के जनरल सेक्रेटरी श्री उगमराज जी लूणावत ने विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री हरीराम जी अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि डॉ. शशि शर्मा, समाज सेवी श्री सोहनराज खजांची एवं अन्य अतिथियों का परिचय करवाया। प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र एवं व्यक्तिगत पुरस्कार भी दिये गये। १५ मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति सहायता प्रदान की गई।

हैदराबाद- आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ, काचीगुड़ा, हैदराबाद द्वारा ४ से ६ अप्रेल २००८ तक आदिलाबाद में शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविरार्थियों को वरिष्ठ स्वाध्यायियों द्वारा प्रशिक्षित किया जायेगा, जिससे वे पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर सेवा दे सकें। शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविर संयोजक श्री आदेश सुराणा (९८४९८७१५५५) या सह संयोजक श्री बटुक भाई कामदार (०८७३२-२२६४२९) अथवा श्री अनिल जैन (९२४७१-९९९३१) से सम्पर्क करें।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- जोधपुर संघ संरक्षक माननीय श्री सायरचन्द जी कांकरिया सुपुत्र स्व.

सुश्रावक श्री घमण्डीचन्द जी कांकरिया का ८५ वर्ष की आयु में माघ शुक्ला द्वितीया, शनिवार, ९ फरवरी, २००८ को संथारे के साथ समाधि-मरण हो गया। वे रत्नसंघ के बुजुर्ग, अनुभवी और जानकार श्रावक थे। संघ-सेवा, संत-सेवा, श्रुत सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा एवं पीड़ित मानवता के साथ प्राणिमात्र की सेवा में उनका समर्पण अनूठा था। वे संघ हितैषी, समाज हितचिन्तक एवं नेक इन्सान थे। उनकी श्रद्धा, भक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा अनुकरणीय थी। गुरु के प्रति अटूट आस्था, संघ के प्रति समर्पण और सेवा धर्म की साधना में उन्होंने जीवन पर्यन्त सजगता रखी। विगत करीब तीन दशकों से व्यापार-व्यवसाय से निवृत्ति लेकर उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक एवं परोपकार के कामों में तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सेवाएं दीं, आने वाली पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त करेगी। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति उनकी अटूट आस्था थी। वे संघ के छः वर्ष तक राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष रहे और तदनन्तर संघ संरक्षक का दायित्व उन्होंने बखूबी निभाया। संघ की प्रवृत्तियों के पोषण एवं कार्यक्रमों

की क्रियान्विति में उनकी भागीदारी और शुभ-भावना रही। स्थानीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के विभिन्न पदों को सुशोभित करते हुए संघ-गौरव वृद्धि के लिए वे सदा तत्पर रहे। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. आदि ठाणा के १९८४ में रेनबो हाउस चातुर्मास की दीप्ति में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। सेवाभावी श्रावकरत्न ने निश्चय कर लिया कि मुझे तन-मन-धन से संयम-साधकों के निरतिचार औषधोपचार में कोई कमी नहीं रखनी हैं, संघ के सुज्ञ श्रावकरत्न का निश्चय जीवन के अंत तक बराबर बना रहा। संघ-उन्नयन में उनकी राय वजनदार रहती थी। वे निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता थे। मितव्ययता उनका विशेष गुण था। सेठ साहब की संघ के प्रति ही नहीं, समाज के प्रति भी सकारात्मक सोच रही। करुणा, दया, और सेवा की भावना से उन्होंने ओसवाल सिंहसभा के तत्त्वावधान में चलने वाले बकरा धर्मपुरा एवं गोशाला का वर्षों कार्य संभाला। पशु-क्रूरता समिति के सदस्य एवं अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने सेवा का आदर्श उपस्थित किया। वर्द्धमान जैन हॉस्पिटल के संचालन में श्री कांकरिया साहब के प्रयास सराहनीय रहे। क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में नया स्थानक निर्माण, श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय का अध्यक्षीय दायित्व निर्वहन, उनकी कार्यशैली के आदर्श हैं। सूर्यनगरी में श्री कुशल जैन छात्रावास की स्थापना से लेकर वे छात्रावास का जीवन के अन्त तक संचालन करते रहे। वे दृढ़धर्मी-प्रियधर्मी श्रावक थे। जल्दी सोना, जल्दी उठना उनका वर्षों से नित्यक्रम था। प्रातः ३ - ३.३० बजे जब भी नींद उड़ती वे सामायिक आराधना में रत हो जाते। लोगस्स-नमोत्थुणं की माला फेरना, मन पसन्द भजन बोलना, आनुपूर्वी गुणना एवं कुछ स्तोत्र बोलना उनका वर्षों से नित्यक्रम था। सात्त्विक विचारों के धनी सेठ साहब आडम्बर-प्रदर्शन से दूर रहे। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाएं सक्रिय, सक्षम व स्वावलम्बी बने एतदर्थ उन्होंने उदारता पूर्वक सहयोग किया एवं सहयोग का सदा भाव बनाए रखा। सादी वेशभूषा के धनी कांकरिया साहब का जीवन प्रामाणिक था। वे धुन के धनी थे। जिस काम को हाथ में ले लिया उसे पूरा करना उनका स्वभाव-सा हो गया। नेहरु पार्क क्षेत्र में धर्म स्थान की कमी जब तक दूर नहीं हुई उन्होंने मीठे का त्याग रखा। पावटा क्षेत्र में वर्द्धमान भवन विस्तार हेतु जमीन प्राप्त करने में भी उनका योगदान रहा। सुश्रावक श्री सायरचन्द जी कांकरिया घर-परिवार में, संघ-समाज में, अपनों-परायों में वर्चस्व रखने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे अपने पीछे भरा पूरा धर्मनिष्ठ एवं सुसंस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री मदनराज जी धाड़ीवाल सुपुत्र स्व. श्री सुकनराज जी धाड़ीवाल का समाधि भावों में ८ फरवरी २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे तपस्वी श्रावक थे। सामायिक- स्वाध्याय, ध्यान-मौन, दया-संवर के साथ उपवास, बेले, तेले, पाँच, आठ, पन्द्रह, सत्रह और छतीस उपवास जैसी बड़ी तपश्चर्याओं के साथ पांच बार वर्षीतप किया।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती लीलादेवी जी कांकरिया धर्मपत्नी श्री

हीरालाल जी कांकरिया पुत्रवधू श्री सुगनचन्द जी कांकरिया (अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़) का १९ फरवरी २००८ को देहावासान हो गया। वे रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका थीं। सरलता, सादगी, सहनशीलता, मधुरता उनके विशेष गुण थे। बिलाड़ा के सुज्ञ श्रावकरत्न स्व. श्री मोहनलाल जी कांकरिया (अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बिलाड़ा) की आप सुपुत्री थीं।

अहमदाबाद- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सिरेकंवरजी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री

भंवरलाल जी कांकरिया(पीपाड़ शहर वाले) का ८८ वर्ष की आयु में ५ फरवरी २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे मृदुभाषी, सरल स्वभावी और त्याग-तप में रहने वाली श्राविका थी। प्रतिदिन आठ-दस सामायिकें करना और स्मरण भजन में लीन रहना उनकी दिनचर्या थी। विगत पाँच दशकों से चौविहार करने वाली श्राविका ने जीवन में पाँच मासखमण सहित कई अठाइयाँ कीं। श्राविकारत्न की सुपौत्री ज्ञानगच्छ में दीक्षा अंगीकार कर कांकरिया परिवार का नाम रोशन कर रही है। -*पदमचन्द जे. कोठारी*

आदर्शनगर-बजरिया:- देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित धर्मपरायणा सुश्राविका

श्रीमती रामप्यारी बाईजी धर्मपत्नी स्व.श्री धूलचन्द जी जैन(रामड़ी वाले) का २७.१.०८ को निधन हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। वे अपने पीछे श्री बाबूलाल जी जैन का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

विजयनगर - कर्त्तव्यनिष्ठ- धर्मनिष्ठ उदारमना सेवाभावी सुश्रावक श्री विजयकुमार जी सांड सुपुत्र स्व. श्री जोरावरमल जी सांड का १० फरवरी २००८ को आकस्मिक-असामयिक निधन हो गया। सांड परिवार रत्नसंघ का समर्पित परिवार है। पाली के

संघसेवी सुश्रावक श्री प्रकाशचन्द जी सांड के देहावसान के अनन्तर परिवार में दूसरे भाई का निधन अपूरणीय क्षति है। श्री विजय बाबू महावीर इण्टरनेशनल के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पाली के सांसद श्री पुष्प जी जैन के कुंवर साहब थे। आपके भ्राता-भाभी श्री चिरंजीलाल जी सांड एवं श्रीमती मंजु जी सांड वरिष्ठ स्वाध्यायी है तथा मध्य राजस्थान के क्षेत्रीय प्रधान श्री अमरचन्द जी सांड भी आपके परिवार का नाम रोशन कर रहे हैं।

नारनोल :- संघ सेवा में निष्ठावान सुश्रावक श्री गुलाबचन्दजी बैद का ७६ वर्ष की

आयु में २२ जनवरी, २००८ को आकस्मिक निधन हो गया। व्यावसायिक प्रामाणिकता के साथ समाज सेवा में भी उन्होंने यश अर्जित किया। सात्त्विक खान-पान के कारण उन्हें कोई बीमारी नहीं हुई और जीवन में कोई दवा भी नहीं ली। *-मुकेश सुराना*

बालोतरा- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री दौलतराज जी बागमार का ३.२.०८ को स्वर्गवास

हो गया। वे रत्नसंघ के निष्ठावान श्रावक थे। उपाध्यायप्रवर के बालोतरा चातुर्मास में उन्होंने सेवा-भक्ति और धर्म-साधना का अच्छा लाभ लिया। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शांति जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री उम्मेदमल जी सिंघवी का ५८ वर्ष की वय में २९ फरवरी २००८ को स्वर्गगमन हो गया। आपका जीवन सरलता से ओतप्रोत था। मरणोपरान्त आपके नेत्रों का दान भी किया गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

कसरावद- धर्मनिष्ठ सुश्रावक अ.भा. स्तर की अनेक जैन संस्थाओं के पदाधिकारी मध्यप्रदेश शासन के भूतपूर्व राज्यमंत्री श्री चांदमल जी लुणिया का ८५ वर्ष की वय में ३० जनवरी ०८ को देहावसान हो गया। आप आचार्यप्रवर हस्तीमल जी म.सा. से बहुत प्रभावित थे। कसरावद क्षेत्र में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की विहार-सेवा का आपने लाभ लिया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१११४३ Shri Ashok Ji Mehta, Kandivali (w), Mumbai (M.H.)
१११४४ डॉ. दिलीप के. बोरा, निरा, पूना (महा.)
१११४५ Shri Shanti Lal Ji Bagmar, Bibwewari, Pune (M.H.)
१११४६ श्री रितेश जी जैन, भिलाई, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
१११४७ श्री विजय कुमार जी ओस्तवाल, पूना (महा.)
१११४८ श्री महेन्द्रमल जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
१११४९ श्रीमती विमला जी भण्डारी, भण्डारा (महा.)
१११५० श्री महेन्द्रचन्द जी गाँधी, सातुरणा, अमरावती (महा.)
१११५१ Shri Manak Chand Ji Jain, Mumbai (M.H.)
१११५२ श्री दिव्य जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
१११५३ श्री महेन्द्र कुमार जी कोठारी, शाजापुर (म.प्र.)
१११५४ Shri Umraomal Ji Kankaria, Bangalore (Karnataka)
१११६५ Shri Naresh Ji Runwal, Bijapur (Karnataka)
१११६६ श्री ज्ञानचन्द जी संचेती, बदनोर, भीलवाड़ा (राज.)
१११६७ Shri S. Mangal Chand Ji Jain, Pallipat (T.N.)
१११६८ Shri Rajeev Ji Loonkar, Kolkata (W.B.)
१११६९ श्रीमती प्रभा जी सिंघवी, बालोतरा (राज.)
१११७० श्री राहुल जी कांकरिया, बाड़मेर (राज.)
१११७१ Shri Surendra Ji Gadiya, Chengalpet, Chennai (T.N.)
१११७२ श्री सचिन जी लोढ़ा, कोटा (राज.)
१११७३ श्री संदीप जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
१११७४ श्री इन्दरचन्द जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
१११७५ Shri Urmila Ji Lunawat, Coonoor, Nilgiris (T.N.)
१११७६ Shri Aaskaran Ji Lunawat, Coonoor, Nilgiris (T.N.)
१११७७ श्री रतनचन्द जी कांकरिया, जयपुर (राज.)

श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लीपेट के सौजन्य से आजीवन सदस्य

१११५५ Shri S. Mangal Chand Ji Jain, Pallipat (T.N.)
१११५६ Shri C. Dharmi Chand Ji Jain, Pallipat (T.N.)
१११५७ Shri J. Harak Chand Ji Bhansali, Mulbagal, Kolar (Karnataka)
१११५८ Shri Dhanraj Ji Bhansali, Mulbagal, Kolar (Karnataka)
१११५९ Shri Chain Raj Ji Surana, Pallipat (T.N.)
१११६० Shri R. Bhag Chand Ji, Tiruvallur (T.N.)
१११६१ Shri Jeevraj Ji Nahar, Sholinghur, Vellore (T.N.)

१११६२ Shri Hemraj Ji, Vellore (T.N.)

१११६३ Shri Santilal Ji Jain, Athimanjeripet, Triuvallur (T.N.)

१११६४ Shri Mahaveer Chand Ji Kataria, Sholinghur, Vellore (T.N.)

जिनवाणी हेतु साभार

२१००/- श्री पुण्यवान जी ओस्तवाल सुपुत्र श्री सूरजराज सा ओस्तवाल, उपाध्याय श्री मानमुनि जी म.सा. के ७४वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

२१००/- वीरमाता श्रीमती लीलादेवी जी धर्मपत्नी वीरपिता श्री अमरचन्द जी लोढ़ा, जोधपुर, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के ६२वें दीक्षा-दिवस पर भेंट।

२१००/- श्री प्रकाशचन्द जी, राजेश जी, प्रमेश जी लोढ़ा, जयपुर, अपने भ्राता एवं पिताश्री श्री रतनचन्द जी लोढ़ा का दि. २६.१.०८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

११०१/- श्री अमोलकचन्द जी, श्री रमेशचन्द जी जैन (जरखोदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. विपिन (हर्षवर्धन) का शुभविवाह सौ. कां. सपना सुपुत्री श्री फूलचन्द जी जैन इन्दौर के संग दिनांक ११ फरवरी २००८ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

११००/- श्री धनराज जी जोरावरमल जी मुणोत, वणी-यवतमाल, श्री सुरेशचन्द जी जोरावरमल जी मुणोत का दिनांक २०.१२.०७ को समाधिमरण होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

११००/- श्री पारसमल जी जिणानी बागरेचा (सिवाना निवासी), बैंगलोर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शांतिबाई जी का निधन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

११००/- श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, श्रेणिकराज जी, उदयराज जी, संदीप जी धोका (निमाज वाले), मैसूर, सौ. सन्ध्या सुपुत्री रिखबचन्द जी धोका का शुभ विवाह चि. मनीष कुमार जी मकाना सुपुत्र स्व. श्री इन्दरचन्द जी मकाना डोंडबालापुर के साथ दिनांक २६.१.०८ को मैसूर में सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्री रतनचन्द जी कांकरिया, जयपुर, अपने सुपुत्र चि. नितिन का शुभ विवाह सौ. कां. मीनल के संग दिनांक २७.१.०८ को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के ६२वें दीक्षा-दिवस पर भेंट।

५०१/- श्री उम्मेदमल जी इन्दरचन्द जी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले), जयपुर, चि. अमित का सौ. कां. संगीता के साथ २४ जनवरी को शुभ विवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री महेश जी, विपुल कुमार जी मेहता, चेन्नई, परमपूज्य महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. की २५वीं रजत दीक्षा जयन्ती (दिनांक १८.१.०८) के पावन प्रसंग पर भेंट।

५०१/- श्री गौतमचन्द जी, सुनील कुमार जी लोढ़ा, कानपुर, स्व. धनराज जी लोढ़ा (हीरादेसर निवासी) की प्रथम पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्रीमती कमला-श्री नेमीचन्द जैन, जोधपुर, अपनी सुपौत्री एवं श्रीमती सुमंगला-डॉ. भावेन्द्र शरद जी जैन की सुपुत्री सौ. कां. कुमकुम का शुभ विवाह श्री माणकलाल जी लुणावत के सुपौत्र एवं श्रीमती सुशीला-श्री शांतिलाल जी जैन के सुपुत्र चि. चन्द्रप्रकाश के संग दि. ११ फरवरी ०८ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५००/- श्री शांतिलाल जी, राजेश कुमार जी, महावीरचन्द जी खाबिया (कोसाणा वाले), मैसूर, चिंचवड़ (पूना) में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा का दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

५००/- श्री प्रसन्नराज जी कांकरिया, अहमदाबाद, अपने पूजनीय माताजी स्व. श्रीमती सिरेकंवर जी कांकरिया धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी कांकरिया पीपाड़ वाले का दि. ८.२.०८ को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

५००/- सुश्री कान्ता जी पींचा सुपुत्री श्री शांतिलाल जी पींचा, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के ६२वें दीक्षा-दिवस पर भेंट।

५००/- श्री राजेन्द्रसिंह जी जैन, जोधपुर, आयकर अधिकारी पद पर पदोन्नति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री सुगनचन्द जी हीरालाल जी अशोक जी, प्रवीण जी, संजय जी, विकास जी, मुदित जी, नमन जी कांकरिया, जोधपुर, श्रीमती लीला देवी कांकरिया धर्मपत्नी श्री हीरालाल जी कांकरिया के दि. १९.२.०८ को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

जीव दया हेतु साभार

११०००/- श्री जवाहरलाल जी मेहता एवं परिवारजन, होसपेट की ओर से सप्रेम भेंट।

११९४/- श्री वर्द्धमान जैन श्रावक संघ, भड़गाँव (महा.), जीवदया हेतु श्रीसंघ द्वारा सम्मिलित की गई राशि भेंट।

५००/- श्री जवरीलाल जी, प्रकाशचन्द जी लुणिया एवं परिवारजन, पल्लीपेट, अपने भाई स्व० श्री लालचन्द जी लुणिया की सुपुत्री श्रीमती मंजूबाई जी जामड़ (पुत्रवधू शांतिलाल जी जामड़, धर्मसहायिका श्री मानमल जी जामड़ तिरुतणी वाले) का स्वर्गवास दि. ८.१.०८ को हो जाने पर पुण्य स्मृति में भेंट।

५००/- श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया एवं परिवारजन, पल्लीपेट, अपने भाई श्री सम्पतराज जी लुणिया सुपुत्र स्व. श्री पुखराज जी लुणिया (निमाज वालों) का स्वर्गवास दि. १९.१.०८ को तिरुपति में हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

१००००/- श्रीमती उमरावकंवर रिखबराज बाघमार ट्रस्ट, चेन्नई, स्तम्भ सदस्यता हेतु।

२५००/- श्रीमती विमला जी लोढ़ा, जयपुर।

आगामी पर्व

फाल्गुन शुक्ला १४	गुरुवार, २०.०३.२००८	चतुर्दशी
फाल्गुन शुक्ला १५	शुक्रवार, २१.०३.२००८	पक्खी, फाल्गुन चौमासी
चैत्र कृष्णा ८	रविवार, ३०.०३.२००८	अष्टमी, आदिनाथ जयन्ती एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ७०वाँ जन्म-दिवस।
चैत्र कृष्णा १४	शनिवार, ०५.०४.२००८	चतुर्दशी
चैत्र कृष्णा ३०	रविवार, ०६.०४.२००८	पक्खी
चैत्र शुक्ला ७	शनिवार, १२.०४.२००८	आयंबिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला ८	रविवार, १३.०४.२००८	अष्टमी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

कर्म निर्जरा का प्रबल साधन।
स्वास्थ्य वर्धक है पानी धोवन॥

With Best Compliments From :

SURANA
INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD/CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office
29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

संकल्प करो हिंसा तजने का।
कच्चे पानी सेवन से बचने का॥

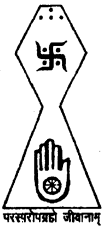

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph.# 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph.# 26243455/66

❖❖❖

Balaji Motors
Chennai-50, Ph.#26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526

प्यास बुझाये,
कर्म कटाये,
फिर क्यों न अपनायें
– धोवन पानी

Curtesy :
Prithvi Exchange
A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED
33, Montiesth Road, Egmore, Chennai-600008
Phone : 044-28553185, 42145478, 09381041097

धोवन पानी-निर्दोष ज़िन्दगानी

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

&

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No. 4, 5 Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056

Hello-Hello

044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

अनछाना पानी-BAD BAD

बिक्लवी पानी-OK OK

छाना हुआ पानी-GOOD GOOD

धोवन पानी-BEST BEST

सहजता में धर्म का आधार।
धोवन पानी प्रथम आचार॥

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30034282, 23669818
Mobile : 098210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	09820072724
२.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
३.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
४.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571 09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
५.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597 09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
६.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-3292229/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124
७.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर	07462-233550/09414315098
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
८.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
९.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
१०.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

NO PAIN - ONLY GAIN – पियें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 3 ★ मूल्य : 10 रु.
15 मार्च, 2008 ★ फाल्गुन सं. 2064

Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.

KALPATARU AURA
L.B.S. Road, **Ghatkopar (W)**

KALPATARU ESTATE
On Jogeshwari-Vikhroli Link Road,
Andheri (E)

KAMDHENU
At Hari Om Nagar, **Mulund (E)**

SIDDHACHAL
Pokhran Road No.2, **Thane (W)**

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131. E-mail: sales@kalpataru.com. Visit: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by
PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD.
www.propertysolutions.co.in

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।